CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होम्योपैथी

सपूंर्ण एवं सुरक्षित उपचार

आपकी दवा

1. रस टाक्स
Page-R-11
2. Arnica-
Page-R-73

डॉ. रेकवेग

विशिष्ट औषधियाँ

R1 to 89

3. Nux Vom
Page- R-46

DR. RECKEWEG
GERMANY

डॉ. रेकवेग एण्ड कं.
जर्मनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बगैर प्रस्तुत पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप और किसी भी माध्यम द्वारा उपयोग में या संग्रहित नहीं किया जा सकता।

भारत में डॉ. रोशन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स प्रा. (लि.)
16, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110 002
द्वारा प्रकाशित।
दूरभाष : 23271372
www.reckeweg-india.com

प्रस्तुत पुस्तक का वितरण पूर्णतया निःशुल्क है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

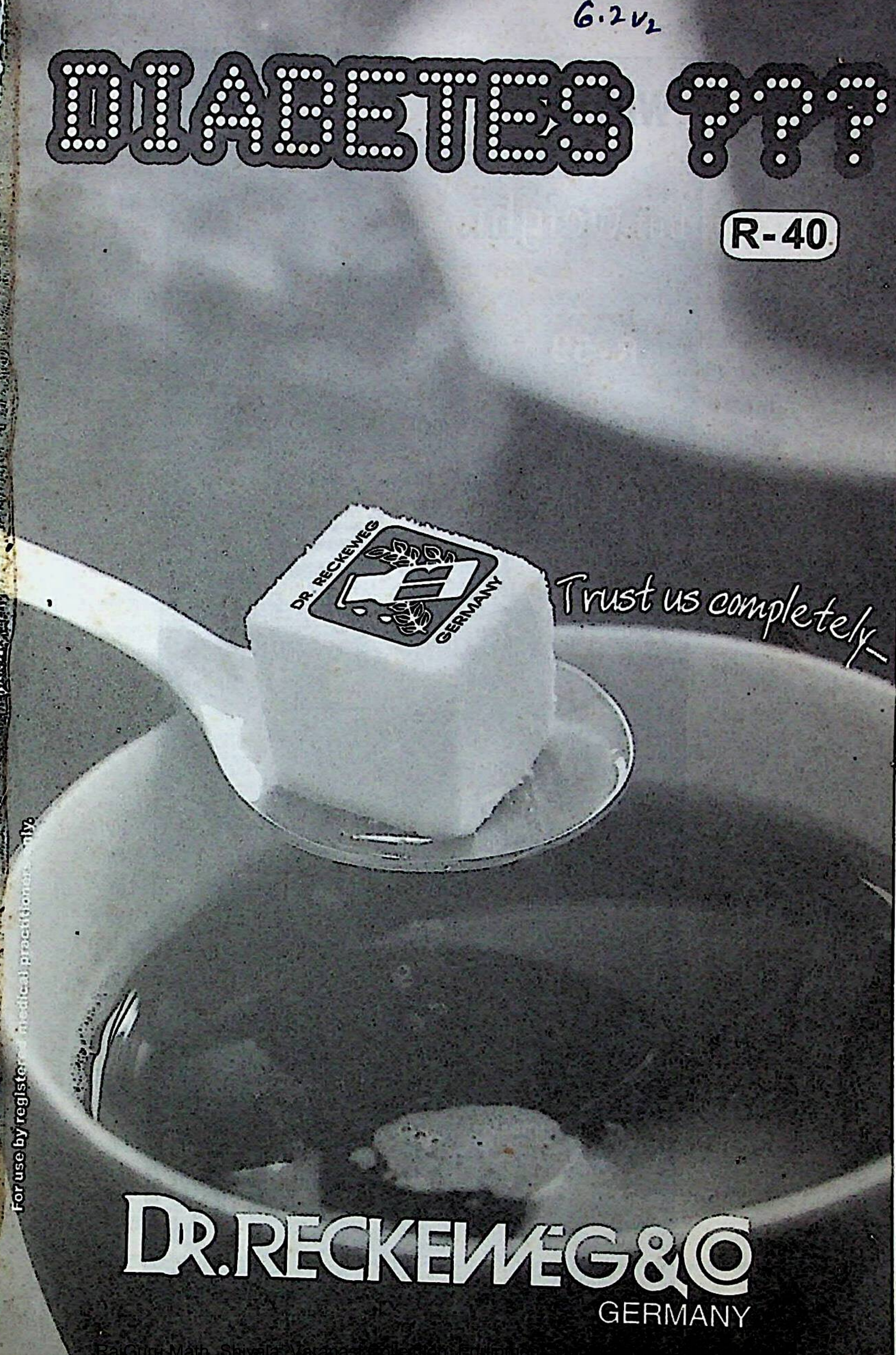

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

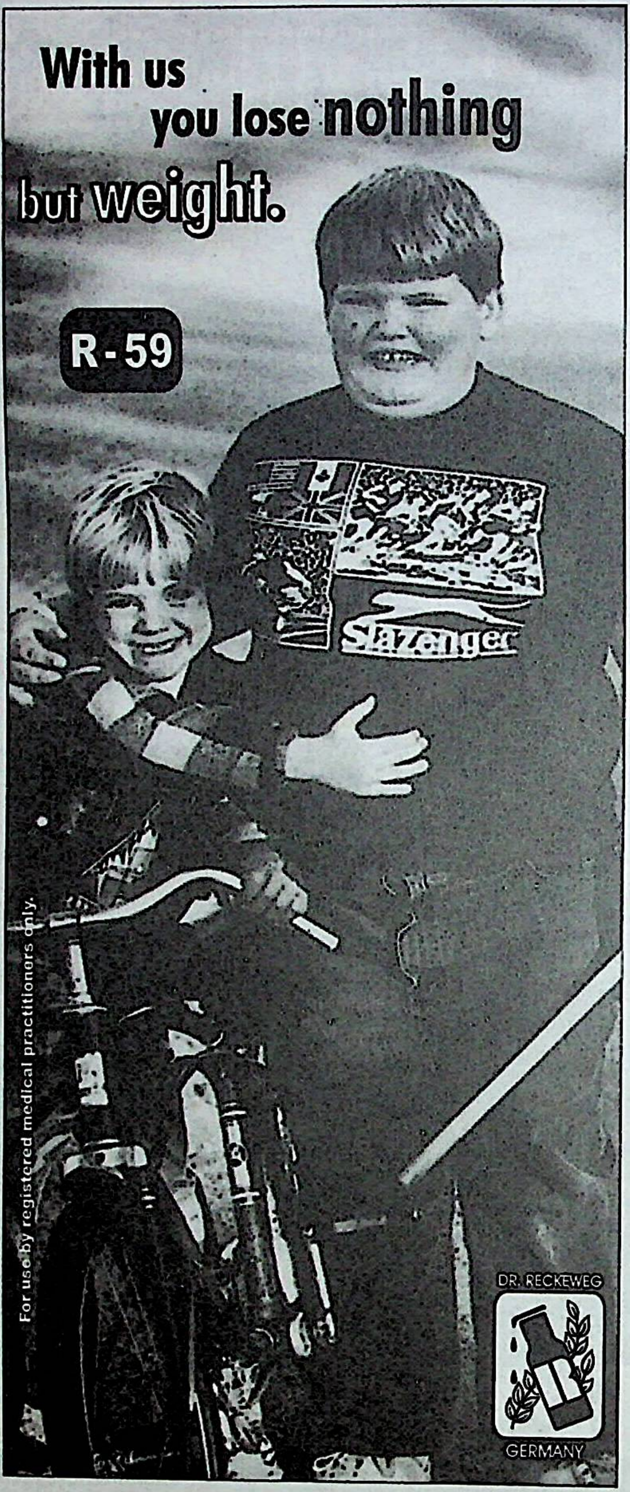

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय चिकित्सक,

'संपूर्ण एवं सुरक्षित उपचार के लिए होम्योपैथी' नामक हमारी पुस्तिका का हिन्दी संस्करण अब आपके हाथों में है।

पाठकों के लिए पुस्तिका का उपयोग सरल बनाने का पूरा प्रयास किया गया है तथा R श्रंखला से प्रचलित 90 होम्योपैथिक विशिष्ट औषधियों तथा एल्कोहल मुक्त, जलन मुक्त सिनेरेरिया मारिटिमा आई ड्रॉप का विवरण दिया गया है। वर्तमान समग्र में भारतीय बाजार में उपलब्ध बायोकैमिक टेबलेट्स (3x–200x), बायोकैमिक मिश्रण (1-28), डायलूशन्स (3x, 6, 30, 200, 1M, 10M, 50M तथा CM) तथा मदर टिंक्चर्स की सूची इसमें शामिल नहीं की गई है, जोकि निकटतम रेक्वेग अधिक त विक्रेता से प्राप्त की जा सकती है।

होम्योपैथिक दवायें सभी प्रकार के एलर्जिक रोगों में विशेष उपचार प्रदान करती हैं। आधुनिक जीवन में एलर्जिक रोगों से प्रभावित रोगियों की संख्या दिन प्रतिदिन बहुत ज्यादा बढ़ रही है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति (Allopathy) के पास इन रोगों का कोई स्थायी निदान नहीं है। ऐसे में होम्योपैथिक दवाइयाँ रोगी की रोग से लड़ने की क्षमता को बढ़ाकर रोगी को एलर्जिक रोग से मुक्त करने में सहायता करती है।

अब हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि होम्योपैथी में पारंपरिक रूप से जिन जड़ी–बूटियों का प्रयोग होता रहा, वे एलर्जी–सम्बन्धी समस्याओं के उपचार में अपेक्षित परिणाम नहीं दे पायीं। हमारी विशिष्ट औषधियों में, सावधानीपूर्वक चुने गए nosodes, जिनको पूरी तरह से जर्मन होम्योपैथिक औषधकोश (Pharmacopoeia) के आधार पर तैयार किया जाता है, शरीर तन्त्र में अपेक्षित आवेगों का संचार करती है। ये जीव में अन्तर्निहित निरोगी शक्तियों पर आक्रामक रूप से असर डाल कर मदद करती हैं और इनका कोई भी गौण प्रभाव नहीं पड़ता।

नवीनतम तकनीकी से विकसित अद्वितीय अल्कोहल और जलन रहित सिनेरेंरिया आई ड्रॉप्स (Eye Drops) अब उपलब्ध है जिसे जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया के आधार पर अनुभवी वैज्ञानिकों ने तैयार किया है।

सरल प्रयोग के लिए, क्लिनिकल–रेपरटरी को एक आकर्षक स्वरूप देने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है इस पुस्तिका की सहायता से आप डॉ० रेकवेग के उत्पादों की उपचारकारी क्षमताओं का सम्पूर्णतम लाभ उठाने में सफल होंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होम्योपैथी

संपूर्ण और सुरक्षित उपचार के लिए

दुष्प्रभावों से मुक्त चिकित्सा पद्धति :

होम्योपैथी—कठिन उच्चारण वाला यह शब्द जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा से हुई है, एक ऐसी संपूर्ण उपचार–पद्धति का नाम है, जो बड़ी कोमलता के साथ शरीर की प्राकृतिक पुनर्जीवन दायक उपचारकारी प्रक्रिया में सहायता देती है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति (Allopathy) में रसायनों का बहुतायत उपयोग किया जाता है। जिसके प्रभाव से मानव शरीर की प्राक तिक क्रियाएं प्रभावित होती हैं। वास्तव में रोग से ज्यादा रोगी दवाओं के दुष्प्रभाव से परेशान हो जाता है (Remedy is worse than the disease) होम्योपैथिक चिकित्सा पूर्णतया दुष्प्रभाव से मुक्त है एवं पुराने रोगों में लम्बे निदान के लिए श्रेष्ठतम है। इसलिए होम्योपैथी को सुरक्षित एवं प्रभावी चिकित्सा पद्धति कहा गया है।

आज का प्रबुद्ध रोगी पहले से कहीं अधिक समझदार है, और बहुत लंबे समय तक अवाँछनीय औषधियों के दुष्प्रभावों को स्वीकारने को तैयार नहीं है।

भारत एवं विश्व के अन्य देशों में होम्योपैथी के इस गुण को पहचाना गया है तथा ज्यादातर रोगियों द्वारा होम्योपैथी को अपनाया जा रहा है।

इसी प्रकार, हाल ही में, दवाओं का अनुमोदन करने में डॉक्टरों की आदत में अत्यधिक परिवर्तन आया है और वे प्राकृतिक, होम्योपैथिक दवाओं के पक्षधर होने लगे हैं। इसे होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के विश्वव्यापी पुनर्जागरण का नाम दे सकते हैं, जिसमें सम्पूर्ण मानव के स्वास्थ्यकर उपचार के रूप में होम्योपैथी का नैसर्गिक प्रयोग किया जा रहा है।

होम्योपैथी वास्तव में कैसे कार्य करती है?

इसके प्रतिभावान विद्वान संस्थापक जर्मन चिंकित्सक तथा प्राकृतिक वैज्ञानिक सैमुअल हैनीमन ने 200 वर्ष पूर्व ही इसकी प्रक्रिया–प्रणाली को एक सरल सामान्य कहावत में सीमित कर दिया था : "Similia similibus curentur" अर्थात् "समःसमः शमयति" (समान लक्षणों द्वारा समान लक्षणों का उपचार)। इस सिद्धांत का प्रतिपादन सैमुअल हैनीमन ने अपनी शोध–सम्बन्धी उपलब्धियों के आधार पर किया था। आधुनिक संदर्भ में, इसका भावार्थ एक प्रकार की उत्प्रेरक चिकित्सा पद्धति के रूप में किया जा सकता है। प्रत्येक रोग के लक्षण और उसकी समरूप औषधि की समानता प्रकट होने पर उस औषधि की शरीर में प्रविष्टि एक उद्दीपन को प्रेरित करती है। ऐसे कारक जो एक स्वस्थ व्यक्ति में कुछ विशिष्ट लक्षण उत्पन्न करते हैं उस रुग्ण व्यक्ति को ठीक कर सकते हैं जिसमें वैसे ही लक्षण विद्यमान हों।

इसके साथ डॉ० रेकवेग की जटिल निर्माण प्रक्रिया की R श ंखला (जर्मनी में Gastreu group) की दवाओं में वे कारक सम्मिलित हैं जो अनुभव के आधार पर, एक विशेष नैदानिक तस्वीर को प्रभावित करते हैं।

इस चिकित्सकीय अवधारणा का प्रयोग करते हुए उपचार की सीमा के साथ लक्ष्य पा लेने की संभावना बहुत बढ़ गयी है और सही दवा ज्ञात करने में समय की काफी अधिक बचत होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक शुरुआत

"Laboratorium EUPHA" के साथ शुरु हुआ एक

खानदानी व्यवसाय जो अब विश्वव्यापी हो चुका है, इसका मूल उद्‌गम शताब्दी के मोड़ पर पाया जा सकता है, जब हर्फर्ड के प्राकृतिक चिकित्सक हेनरिच रेकवेग (1877-1944) ने "लैबोरैटोरियम यूफा" की स्थापना की तथा हैनीमन के समता के सिद्धांत के आधार पर प्रथम जटिल कारकों का विकास किया। 1947 में, होम्योपैथिक डॉक्टर डॉ० मेड० एल्फ्रेड रेकवेग तथा उनके भाई क्लॉस–गूंथर रेकवेग ने कंपनी का अधिग्रहण किया। तेज़ी से बढ़ती हुई माँग के फलस्वरूप दवाओं की संख्या लगातार बढ़ती गयी तथा सभी महाद्वीपों के 40 देशों में इनका प्रचलन हुआ। होम्योपैथी में प्रयोग होने वाली एकल दवाओं तथा टिंक्चर भी बनाये गए हैं।

डॉ० रेकवेग एंड कं० जीएमबीएच फार्मास्युटिकल (Pharmaceutical) फैक्ट्री, जो अपनी क्षमताओं और गुणवत्ता के स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय स्टैंडर्ड के अनुकूल है, उसके निदेशक माइकेल रेकवेग हैं। संगठित प्रबंधन के सर्वाधिक आधुनिक विधियों के बावजूद वे कंपनी के संस्थापक हेनरिच रेकवेग की विरासत के साथ निकटता के सम्बन्ध का अनुभव करते हैं, जिन्होंने "Laboratorium Eupha" (ग्रीक भाषा में Eu का अर्थ है, अच्छा) में उच्च गुणवत्ता की प्रभावी औषधियों के निर्माण में स्वयं को समर्पित किया था।

इस परंपरा से रेकवेग दवाओं की विश्वव्यापी सफलता को आँका जा सकता है।

होम्योपैथी की सेवा में शोध (Research):

उच्चकोटि के चिकित्सकीय उत्पादों के सम्बन्ध में रेकवेग कंपनी के प्रयत्नों ने रेकवेग की दवाओं की विश्वव्यापी पहचान बनायी है। इनका महत्व आज विश्वसनीय दवाओं के रूप में सभी महाद्वीपों के 40 से भी अधिक देशों में है। R श्रंखला की सफलता उत्पादों के फार्मूले की वजह से प्राप्त हुई, जो डॉ० रेकवेग के अपने शोध कार्यों के दौरान अविष्कृत और आजमाये गये थे।

पारिवारिक कंपनी रेकवेग–'Federal Association of the Pharmaceutical Industry' की सदस्य है, जिसकी समितियों में इसके विशेषज्ञ सक्रिय रूप से भाग लेते है। राष्ट्रीय सुपरवाइज़री अथारिटी में कंपनी एक मॉडल उद्योग है, जो विदेशों से आये आगुन्तकों को गर्व से दिखाया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाल के वर्षों में, फार्मास्युटिकल क्षेत्र में अग्रिम और नये विकास बहुत महत्वपूर्ण हैं इसलिए शोध कार्य के क्षेत्र में निवेश बढ़ा दिया है। विश्लेषण के क्षेत्र में स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुरोध पर नये monographs तैयार किये गए हैं और इसमें जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया प्रबंधन की भागीदारी रही है।

गुणवत्ता ही प्रमाण है

गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं। इसी वजह से किसी भी प्रकार के उत्पादन की ज़िम्मेदारी लेने पर गुणवत्ता को महत्व देने के साथ रेकवेग कंपनी प्रारंभिक क़ार्यों पर कड़े नियंत्रण को सबसे महत्वपूर्ण मानती है। यद्यपि प्रयोग में लाये जाने वाले जैविक पदार्थ चुने हुए सप्लायर्स से प्राप्त होते हैं और इनके साथ प्रमाण पत्र संलग्न होते हैं लेकिन आगे का मूल परीक्षण हमारी प्रयोगशाला में होता है, जिससे फार्माकोपिया

मोनोग्राफ तथा आंतरिक गुणवत्ता मापदंड के सांथ अनुकूलता परखी जाती है। प्रारंभिक अवयवों का सामान्य नियंत्रण करने के दौरान ऑर्गेनोलेप्टिक, रासायनिक, भौतिक रासायनिक, सूक्ष्म जैवीय तथा फार्मा–परीक्षण सम्बन्धी जाँच पड़ताल की जाती है। इसमें भौतिक आयामों की शुद्धता, पहचान, अवयवों की जाँच शामिल होती है।

गुणवत्ता प्रबंधक के द्वारा स्वयं जारी किए गए प्रारंभिक तत्वों को ही निर्माण विभाग में भेजा जाता हैं

कठोरतम नियमों के साथ निर्माण :

रेकवेग कंपनी में बनी दवाओं की निर्माण प्रक्रिया में उच्चकोटि की गुणवत्ता होती है जो होम्योपैथिक भेषज कोश–जर्मन, यूरोपियन तथा भारतीय भेषजकोश का नियम पूर्वक अनुसरण करते हुए राष्ट्रीय (Pharm BetrO) और अंतर्राष्ट्रीय (GMP, PIC) उत्पादन सम्बन्धी नियमावली को ध्यान में रख कर प्राप्त की जाती है।

इन निर्देशों और नियमों का पालन करते हुए प्रत्येक उत्पाद के सम्बन्ध में ऐसे लिखित निर्देश बनाये गए हैं, जिनका निर्माण की गतिविधि के आरंभ से लेकर सीलबंद किए जाने तक पूरी तरह पालन क़िया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्ण रूप से स्वचालित भरने की तथा पैक करने की विधि के फलस्वरूप उत्पाद व्यक्ति के संपर्क में नहीं आ पाते और इस प्रकार यथासंभव स्वच्छ, त्रुटि रहित दवायें बनती हैं। भराई और पैक करने के पूर्ण रूप से स्वचालित उपकरण के उपलब्ध होने के साथ साथ शक्तिकरण के दौरान तकनीकी उपकरण प्रयोग में नहीं लाए जाते और यह प्रक्रिया पारंपरिक सिद्धांत के अनुसार हाथ से की जाती है।

उत्पादन के ज़िम्मेदार निर्माण के प्रमुख व्यक्ति के साथ सहकर्मियों का एक दल होता है, जो नियमित रूप से आधुनिकतम शिक्षा सम्बन्धी प्रयत्नों के कारण सदैव वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में आगे रहता है।

लगातार ऐसे सुरक्षित कदम उठाये जाते हैं, जिससे निर्माण, भराई तथा भंडारण के दौरान गलतियों की संभावनाएँ न हों,।

केवल उन्हीं तैयार दवाओं को बेचने के लिए गोदामों (Warehouse) में भेजा जाता है, जिन्हें निर्माण एवं गुणवत्ता नियंत्रण के प्रमुख स्वीक ति प्रदान करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ती हुई लोकप्रियता

जैवीय चिकित्सा तकनीक में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई रुचि हमें प्रोत्साहित करती है कि हम अपनी विशिष्ट औषधियों की क्रियाविधि को बड़ी संख्या में चिकित्सकों के समक्ष प्रस्तुत करें। चूँकि इनका विकास होम्योपैथी, लोकप्रिय चिकित्सा एवं जैवशास्त्र के क्षेत्र में हमारे अनुभवों के फलस्वरूप और कईं वर्षों की अवधि में हुए लगातार सुधार के कारण हुआ है, इसलिए ये श्रेष्ठतम कोटि की औषधियाँ बन गयी हैं। जो डॉक्टर अभी भी हमारी दवाओं से अपरिचित हैं, उनका इन औषधियों का अनुभव एक अविस्मरणीय घटना बन जाती है।

हमारी औषधियों के सामर्थ्य का राज़ सतर्कतापूर्वक चुने गए तत्व–संयोजन में है। होम्योपैथिक सिद्धांत के अनुसार, अनिष्टरोधी (antidotes) औषधियों का प्रयोग नहीं किया गया है। दूसरी ओर, समान, पूरक प्रभाव वाले मूल–तत्वों के मिश्रण को प्रोत्साहित किया गया है। इस प्रकार, उनका सामर्थ्य क्षेत्र बढ़ा दिया गया है, उनकी उपचारिक क्षमता बढ़ गयी है और चिकित्सकीय परिणाम सुनिश्चित हो गये हैं।

एक "शुद्ध" होम्योपैथ कम से कम संख्या में औषधियों का प्रयोग करके रोग को नियंत्रित्त करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार की चिकित्सा पद्धति में अनुभवहीन डॉक्टरं के लिए होम्योपैथिक भेषज कोश से परिचित होना और सफलता सुनिश्चित करने वाली दवा का चयन करना बहुत ही कठिन काम होता है। अधिकतर उसके पास पर्याप्त समय नहीं होता। इसलिए चिकित्सक के लिए इस बात का बहुत फायदा है कि उसके पास एक ऐसा उपाय हो, जिससे उसे इतनी अनावश्यक मेहनत न करनी पड़े बल्कि, दूसरी ओर जैव–शास्त्रीय उपचार का प्रयोग कर सके। हर दवा के सामने लिखे अनेक लक्षणों के बीच से उसे सही दवा ढूँढने की आवश्यकता न पड़े।

हमारे द्वारा तैयार की गयी दवायें एक निश्चित स्थिति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षणों को ध्यान में रखती हैं और इसलिए दिए गए संकेतों के अनुसार इनका प्रयोग पूर्ण विश्वास के साथ किया जा सकता है।

ये दवायें शरीर में निहित उपचारकारी शक्तियों को क्रियाशील बना कर अपना प्रभाव उन पर डालती है। जैविकी रुचि रखने वाले चिकित्सकों के लिए हमने प्रत्येक मूल–तत्व के प्रमुख लक्षणों का वर्णन किया है। इस प्रकार प्रशिक्षु चिकित्सकों को होम्योपैथिक विचारधारा के आधारभूत सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त होता है और संभवतः उनमें इस जैविकी विज्ञान के गहरे अध्ययन की रुचि जाग त होती है, विशेषकर जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हें अपने पहले प्रयत्न से संतोषजनक परिणाम मिल जाता है। इस प्रकार हमारी विशिष्ट औषधियों औपचारिक एवं शासकीय और जैविकी के बीच एक सेतु का काम करती हैं—जिसे आज डॉक्टरों की बढ़ती हुई संख्या पार करने को उत्सुक है। ऐसे अनेक डॉक्टरों के पास उपचार सम्बन्धी ऐसी नयी सफलताओं के फलस्वरूप बड़ी संख्या में और कृतज्ञता की अनुभूति के साथ रोगी आएंगे और फिर प्रत्येक सच्चे चिकित्सक को संतोष अभीष्ट होता है।

फेडरेल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी के अतिरिक्त ये उत्पाद निम्नलिखित देशों में बेचे जा रहे हैं, अथवा लाइसेंस के तहत बनाये जा रहे हैं : ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, बगंलादेश, बेलजियम, कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, हाँग–काँग, भारत, आयरलैंड, इज़रायल, इटली, जापान, कीनिया, लक्ज़मबर्ग, मलेशिया, नीदरलैंड, नाइजीरिया, नार्वे, पाकिस्तान, पुर्तगाल, कतार, दक्षिण अफ्रीका, स्पेन, स्वीडन, स्विटज़रलैंड, ताइवान, यू०के०, युनाइटेड अरब अमीरात तथा यू०एस०ए०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्रा

हमारी विशेष दवाओं के प्रयोग के सम्बन्ध में सामान्य निर्देश (Instructions):

ये दवायें (drops) हमेशा खाली पेट एक छोटे चम्मच पानी में डालकर ली जाती हैं। यदि दिन में तीन बार लेने का निर्देश हो तो पहली खुराक सुबह खाली पेट लेनी चाहिए, दूसरी दोपहर में खाने के पहले तथा तीसरी सोने के पहले लेनी चाहिए। यदि दवा की अधिक खुराके लेने का निर्देश हो, तो अतिरिक्त खुराकों को दिन में समय के समान अंतर से लेना चाहिए। यदि कई दिनों तक दवा लेने के बाद कोई सुधार न हो तो बिना हिचक खुराक बढ़ा सकते हैं। अधिक उग्र स्थिति में उपचार के प्रारंभ में जल्दी–जल्दी दवा लेनी चाहिए।

हमारी दवाओं का प्रयोग हमारे शरीर के भीतर निहित उपचारकारी शक्तियों को जाग त करता है। अत्यधिक दवा ले लेने पर भी घातक परिणाम का कोई डर नहीं होता।

शरीर के स्वयं के आत्मोपचार के प्रयत्न का सही मूल्यांकन डॉक्टरों को इस बात के लिए तैयार करता है कि वह नए और विशिष्ट तरीके से इस पुनः स्वास्थ्यकर प्रयत्न का निरीक्षण और इसका मार्गदर्शन करे। यही बात तेज़ बुखार होने की स्थिति में भी लागू होती है, जब शरीर किसी भी बाहरी सहायता के प्रति बढ़ी हुई उत्सुकता के साथ प्रतिक्रिया करता है, जिसका तात्पर्य शरीर के पुनः स्वस्थ करने के प्रयत्न में साथ देना होता है। यदि तेज़ बुखार के साथ तीव्र संक्रमण (infection) हो और हमारी दवाओं के लगातार प्रयोग करने के बाद भी 24 घंटे के भीतर कोई प्रत्यक्ष सुधार न दिखाई दे, तो इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि ऐसे समय पर किसी एन्टीबायोटिक का अतिरिक्त प्रयोग संक्रमण को नियंत्रित करने में तथा तेज़ी से सुधार करने में अधिक उपयुक्त हो सकता है, क्योंकि इन जैवीय प्रेरक औषधियों का अतिरिक्त प्रयोग शरीर की सुरक्षात्मक शक्ति की गतिशीलता को अधिक प्रभावशाली बनाता है। अधिकांश संक्रमणों में ऐसे एन्टीबॉयोटिक्स के अतिरिक्त प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हमारी जैविक दवाओं के प्रयोग में एक पक्षीय सिद्धांत नहीं लागू होता, बल्कि ये शरीर में निहित उपचारकारी शक्तियों को जाग त करने का प्रयत्न करती हैं, जिनके ऊपर अभी तक शायद ही कभी विचार किया गया हो। इस महत्व को कम समझना गलत होगा। अनेक पुरानी बीमारियों में कुछ दिनों के प्रयोग के बाद रोगी को महसूस होगा कि अब वह स्वस्थ हो रहा है।

हम कोई भी अतिरिक्त जानकारी प्रसन्नता पूर्वक देंगे। दूसरी ओर हम उन डॉक्टरों के अनुभव भी जानना चाहेंगे जिन्होने हमारी दवाओं के प्रयोग में नया या विशिष्ट अनुभव महसूस किया हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होम्योपैथिक विशिष्ट उत्पाद

- R1 – 89
- अल्फाअल्फा टॉनिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग–होम्योपैथिक विशिष्ट-उत्पाद

डॉ० रेकवेग R 1 .... Inflammation drops (शोथ, प्रदाह सम्बन्धी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 2 .... Gold drops (हृदय सम्बन्धी रोगों के लिए गोल्ड ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 3 .... Heart drops (हृदय सम्बन्धी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 4 .... Diarrhoea drops (अतिसार ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 5 .... Stomach drops (उदर सम्बन्धी रोगों के लिए)

डॉ० रेकवेग R 6 .... Influenza drops (इंफ्लुएंजा सम्बन्धी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 7.. Liver and gallbladder drops (लीवर एवं पित्ताशय सम्बन्धी ड्रॉप्स)

जटसिन–डॉ० रेकवेग R 8 .... Cough syrup (खांसी के लिए सिरप)

जटसिन–डॉ० रेकवेग R 9 .... Cough drops (खांसी के लिए ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 10 .... Climacteric drops (रजोनिव त्ति कालीन (menopause) सम्बन्धी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 11.. Rheuma drops (आमवात रोगों के लिए)

डॉ० रेकवेग R 12 .... Calcification drops (कैल्सीकरण ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 13 .... Hemorrhoidal drops (बवासीर के लिए)

डॉ० रेकवेग R 14 .... Nerve and sleep drops (स्नायु और नींद के लिए)

डॉ० रेकवेग–वीटा–सी 15 .... Nerve tonic (शांतिदायक)

डॉ० रेकवेग–वीटा–सी 15 फोर्ट .... Nerve tonic, forte version (स्नायु बलवर्धक औषधि)

डॉ० रेकवेग R 16 .... Migraine and neuralgia drops (आधे सिर का दर्द और स्नायु रोगों के लिए)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 17 .... Tumour drops (गाँठों के लिए)

डॉ० रेकवेग R 18 .... Kidney and bladder drops (गुर्दे और पेशाब की थैली के लिए)

डॉ० रेकवेग R 19 .... Glandular drops for men (पुरुषों के ग्रंथि रोगों के लिए)

डॉ० रेकवेग R 20 .... Glandular drops for women (स्त्रियों के ग्रंथि रोगों के लिए)

डॉ० रेकवेग R 21 .... Reconstituant drops (रक्त एवं त्वचा विकारों के लिए)

डॉ० रेकवेग R 22 .... Drops for nervous disorders (anginous condition of the heart) (स्नायुदोष निवारक ड्रॉप्स (हृदय की शूलग्रस्त Anginous अवस्था))

डॉ० रेकवेग R 23 .... Eczema drops (एक्ज़िमा के लिए)

डॉ० रेकवेग R 24 .... Pleurisy, intercostal neuralgia (फेंफड़े की झिल्ली का प्रदाह, पसलियों की अन्दरूनी नाड़ियों में दर्द)

डॉ० रेकवेग R 25 .... Prostatitis (पौरूष ग्रंथि प्रदाह के लिए)

डॉ० रेकवेग R 26 .... Draining and stimulating drops (निस्सारक एवं उद्दीपक ड्रॉप्स) बीमारी के बाद की कमजोरी में विशेष उपयोगी

डॉ० रेकवेग R 27 .... Renal calculi drops (गुर्दों की पथरी के लिए)

डॉ० रेकवेग R 28 .... Dysmenorrhea, amenorrhea (पीड़ाप्रद मासिक स्त्राव, ऋतुरोध के लिए)

डॉ० रेकवेग R 29 .... Vertigo, syncope (सिर चकराना, मूर्च्छा के लिए)

एटोमेयर–बेकरॉन–डॉ० रेकवेग R 30 .... Universal ointment (बहु उद्देश्यीय मरहम)

डॉ० रेकवेग R 31 .... Energizes the appetite, increases blood supply, strengthens the liver (भूख और रक्त की पूर्ति बढ़ाती है, यक त को शक्तिशाली बनाती है)

डॉ० रेकवेग R 32 .... Hyperhydrosis of varying genesis (विभिन्न कारणों से अत्यधिक पसीना आना)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 33 .... Constitutional treatment in epilepsy (मिरगी का उपचार)

डॉ० रेकवेग R 34 .... Recalcifying drops (पुनःकैल्सीकरण ड्रॉप्स, हड्डियों के संघटन पर क्रियाशील)

डॉ० रेकवेग R 35 .... Teething aches drops (दाँत निकलने में दर्द की औषधि)

डॉ० रेकवेग R 36 .... Diseases of the nerves, chorea, St. Vitus' dance (नस–नाड़ियों के रोग, अंग कम्पन)

डॉ० रेकवेग R 37 .... Intestinal colic drops (आँतों के दर्द के लिए)

डॉ० रेकवेग R 38 .... Affections of the abdomen, right side (दाहिनी ओर के उदर विकारों की औषधि)

डॉ० रेकवेग R 39 .... Affections of the abdomen, left side (बायीं ओर के उदर विकारों की औषधि)

डॉ० रेकवेग R 40 .... Treatment of diabetes (मधुमेह का उपचार)

डॉ० रेकवेग R 41 .... Sexual neurasthenia drops (यौन सम्बन्धी (स्नायुओं) की दुर्बलता के लिए)

डॉ० रेकवेग R 42 .... Venous stasis, varicosis, inflammation of the veins. (शिराओं सम्बन्धी स्थिरता, शिराओं का फैलना, शिराओं की जलन)

डॉ० रेकवेग R 43 .... Against asthma - asthmatic constitution (दमे की औषधि)

डॉ० रेकवेग R 44 .... Disorders of the blood circulation, hypotony (रक्त संचरण के विकार (अल्प रक्त चाप))

डॉ० रेकवेग R 45 .... Illnesses of he larynx and upper breathing apparatus (कंठनली तथा श्वास सम्बन्धी ऊपरी अंगों के विकार)

डॉ० रेकवेग R 46 .... In rheumatism of fore-arms and hands (बाँहों तथा हाथों के आमवात में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 47 .... All hysteric complaints (वातोन्माद या हिस्टीरिया सम्बन्धी सभी रोगों में)

डॉ० रेकवेग R 48 .... Pulmonary diseases (फेफड़ों के रोग)

डॉ० रेकवेग R 49 .... Acute and chronic catarrh, sinusitis (तीक्ष्ण एवं पुराना नजला, नाक का प्रदाह)

डॉ० रेकवेग R 50 .... Gynecological sacroiliac complaints, pains in sacral region (women) (स्त्री रोग एवं त्रिकश्रोणि सम्बन्धी रोगों में)

डॉ० रेकवेग R 51 .... Thyroid intoxication (थायरॉयड विषाक्तता)

डॉ० रेकवेग R 52 .... Vomiting, nausea, travel sickness (उल्टी, मितली, यात्रा रोग)

डॉ० रेकवेग R 53 .... Acne vulgaris, rash at puberty (यौवनारंभ पर मुँहासे, दाने)

डॉ० रेकवेग R 54 .... Functional disturbances of the brain (मस्तिष्क के क्रियात्मक रोग)

डॉ० रेकवेग R 55 .... All kinds of injuries, healing effect on wounds (सभी प्रकार की चोटों, घावों का ईलाज)

डॉ० रेकवेग R 56 .... Vermifuge (कीड़ो को बाहर निकालने वाली औषधि)

डॉ० रेकवेग R 57 .... Pulmonary tonic (फेंफड़ों को शक्ति देने वाली औषधि)

डॉ० रेकवेग R 58 .... Against hydrops, stimulates the renal function (जलशोथ रोधक, गुर्दे की क्रिया को तेज करने वाली औषधि)

डॉ० रेकवेग R 59 .... Against obesity, slimming effect (मोटापा रोधक; मोटापा घटाने में प्रभावी)

डॉ० रेकवेग R 60 .... Blood purifier (खून साफ करने की दवा (रक्तशोधक))

डॉ० रेकवेग R 62 .... Measles drops – Inflammation of mucous membranes (खसरा की औषधि –श्लेष्मिक झिल्लियों की सूजन)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 63 .... Drops for impaired circulation (रक्त–प्रवाह में रूकावट के लिए)

डॉ० रेकवेग R 64 .... Albuminuria drops (पेशाब में अलव्यूमिन जाने पर)

डॉ० रेकवेग R 65 .... Psoriasis drops (सोरियासिस ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 66 .... Cardiac arrhythmia drops (अनियमित हृदय गति के लिए)

डॉ० रेकवेग R 67 .... Drops for circulatory debility (रक्त परिसंचरण की क्षीणता के लिए)

डॉ० रेकवेग R 68 .... Shingles drops (हर्पीज ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 69 .... Drops for pain between the ribs (पसलियों के बीच होने वाले दर्द के लिए)

डॉ० रेकवेग R 70 .... Neuralgia drops (स्नायु–शूल के लिए)

डॉ० रेकवेग R 71 .... Sciatica drops (सायटिका, नस का दर्द)

डॉ० रेकवेग R 72 .... Pancreas drops (पाचन रस थैली के रोग के लिए)

डॉ० रेकवेग R 73 .... Drops for the joints (जोड़ों के दर्द एवं विकार के लिए)

डॉ० रेकवेग R 74 .... Drops for nocturnal enuresis (नींद में पेशाब निकल जाने पर)

डॉ० रेकवेग R 75 .... Dysmenorrhoea drops (कष्टदायक मासिक धर्म के लिए ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 76 .... Asthma forte drops (दमा रोग के लिये फोर्टे ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 77.................................... Anti-Smoking drops (धूम्रपान निरोधी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 78 .... Eye Care - Drops for oral adminis-traion (आँखों की रक्षा के लिए मौखिक ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 81 .... Maldol - Analgesic (दर्द निवारक)

डॉ० रेकवेग R 82 .... Mycox - Anti-Fungal drops (फफूंद निरोधी ड्रॉप्स)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 83 .... Food-Allergy drops (आहार एलर्जी निरोधी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 84 .... Inhalent-Allergy drops (श्वास सम्बन्धी एलर्जी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 85 .... High Blood Pressure drops (उच्च रक्त चाप सम्बन्धी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 86 .... Hypoglycemia drops (निम्न रक्त शर्करा सम्बन्धी ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 87 .... Anti-Bacterial drops (रोगाणु नाशक ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 88 .... Anti-Viral drops (विषाणु नाशक ड्रॉप्स)

डॉ० रेकवेग R 89 .... Hair related problems (बालों के गिरने एवं झड़ने की समस्या के लिए)

अल्फाअल्फा टॉनिक .... General Tonic – energizes vital function (बलवर्धक टॉनिक – जैवीय कार्य को शक्ति देने वाला)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 1
Inflammation drops
शोथ, प्रदाह सम्बन्धी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एपिस मेल D4, बेरियम क्लौरैट D6, बेलाडोना D4, कैल्शियम आयोडेट D4, हेपर सल्फ D12, कालियम बाइक्रोम D4, मैरम वेरम D6, मर्कर, सब. कोर. D5, फाइटोलैका D4, लैकेसिस D12.

लक्षण : नई तथा पुरानी सर्दी की शिकायत होने एवं पीब बनने की प्रव ति के स्थानिक प्रदाह (local inflammation) के साथ गिल्टियों की सूजन। आकस्मिक रोग संक्रमण तथा तेज़ बुखार के साथ मस्तिष्क आवरक झिल्ली, आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली तथा कंठनली में जलन।

विशेष रूप से कंठनली की लसिका ग्रंथियों (lymphatics) से मवाद बहना और जलन, मुख्य रूप से सभी प्रकार के टाँसिल सम्बन्धी गलप्रदाह, टाँसिल–शोथ, रक्त–ज्वर, कान के मध्य भाग का प्रदाह (otitis media), आँखों की श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह (आँख का आना), उपतारा तथा रोमकपिण्ड का प्रदाह (iridocyclitis), मस्तिष्कावरक झिल्ली का प्रदाह (meningitis) मस्तिष्कावरणशोथ, ऊपरी जबड़े से सम्बन्धित साइनस (maxillary sinus) तथा दाँतों की जड़ों में जलन।

ग्रंथियों में जलन, कनफेड़ (mumps), अण्डकोष का प्रदाह (orchitis), पाचन रस थैली का प्रदाह (Pancreatitis), पित्ताशय का प्रदाह (cholecy-stitis), अपेण्डिक्स का प्रदाह (appendicitis), गर्भाशय आवरक झिल्ली का प्रदाह (Parametritis), बार्थोलिन ग्रंथि का प्रदाह (Bartholinitis)।

विभिन्न जोड़ों का उग्र आमवाती प्रदाह (polyarthritis), किसी अकेले जोड़ का प्रदाह (monarthritis), यूरिक अम्ल होने के कारण जोड़ों में प्रदाह (Urica), लसिका ग्रंथि का प्रदाह (lymphadenitis) लसीकावाहिनीशोथ (lymphangitis), श्लेष्मा बनने के कारण होने वाली जलन, फोड़ा, अंगुली की नोक पर फोड़ा बनना (Whitlow), फुंसियाँ तथा नासूर, विसर्प (erysipelas), टाँसिल पक जाना (quinsy)।

क्रिया विधि : **एपिस मेल :** शोथ और अंतःसंचरण, जलीयशोथ सम्बन्धी सूजन।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेरियम क्लोरैट : पुराने रोगों के साथ बच्चों के विभिन्न कण्ठमालापरक रोगों में गिल्टियों की सूजन तथा पीब बन जाने की प्रव ति।

बेलाडोना : त्वचा, श्लेष्मिक झिल्लियों तथा ग्रंथियों की जलनयुक्त अतिरक्तता। पस युक्त (Pyogenic) संक्रमण, हृदय सम्बन्धी अनियमिततायें। तेज़ बुखार। श्लेष्मिक झिल्ली का तीखापन, बड़बड़ाना, बुखार के साथ पसीना आना।

कैल्शियम आयोडेटम : बच्चों को आक्रान्त करने वाला टाँसिलों का पुराना प्रदाह, गर्दन तथा गर्दन के पीछे लसिका ग्रंथियों (lymph glands) की कण्ठमाला सम्बन्धी व द्धि।

हीपर सल्फ : सारक सम्बन्धी जलन एवं पीब बनने की प्रव त्ति। सभी प्रकार के प्रदाहों में होम्योपैथी की श्रेष्ठ औषधि है।

काली बाइक्रोम : नाक, ग्रसनी गव्हर तथा ग्रसनी की श्लेष्मिक झिल्लियों में सुनम्य रिसाव। चिपचिपी, रेशेदार श्लेष्मा, श्लेष्मिक झिल्ली का फोड़ा या घाव।

मेरम वेरम : गिल्टियां बढ़ना (Adenoid vegetation), नासिका के पिछले भाग में पुराना नजला।

मर्कर. सब. कोर. : श्लेष्मिक झिल्ली का उग्र प्रदाह जिसमें ग्रंथियाँ सूज जाती हैं, चिपचिपा पसीना।

फाइटोलैका : ग्रसनी तथा टाँसिलों की सूजन तथा गहरी लालिमा, कानों तक फैलता दर्द।

खुराक की मात्रा: तेज़ बुखार के साथ तीक्ष्ण संक्रमण होने पर प्रारंभ में, ½ से 1 दिन तक प्रत्येक आधे घंटे पर थोड़े पानी में 10-15 बूँदे। पीब युक्त जलन होने पर भी यही खुराक लेनी चाहिए। (जैसे कि टाँन्सिल या फुंसियों की जलन)। सुधार होने पर, यही खुराक प्रत्येक 1-2 घंटे पर लें। ठीक होने पर बेहतर होगा यदि लगभग एक सप्ताह तक प्रतिदिन 2-3 बार 10-15 बूँदें ली जायें।

पुरानी शोथ : 10-15 बूँदें प्रतिदिन 2-3 बार

बच्चों में पुरानी ग्रंथि सम्बन्धी अतिव द्धि होने पर संरचनात्मक संशोधन के लिए कुछ लंबे समय तक थोड़े पानी में दिन में एक बार 5-8 बूँदें।

टिप्पणी : इंफ्लुएंज़ा में R6 का प्रयोग करें।

जोड़ों के पुराने प्रदाह (Arthritis) में R11 का प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विभिन्न जोड़ों के उग्र आमवाती प्रदाह अर्थात जोड़ों के आमवाती प्रदाह में शुरू में R 24 के साथ R1 को बारी–बारी से एक या दो घन्टे के एकान्तरण से प्रयोग करें।

डिम्बाशय के प्रदाह में : R 24 को R 1 के साथ बारी–बारी से देते रहें।

डिम्बग्रंथियों तथा डिम्बवाही नलियों के प्रदाह में तथा गर्भाशय आवरक झिल्ली को जोड़ने वाले ऊतक के प्रदाह में अतिरिक्त औषधि के रूप में R 38 तथा R 39 का भी प्रतिदिन 2-3 बार व्यवहार करें।

पुराने प्रवेगी अपेण्डिक्स के प्रदाह (Appendicitis) में : प्रतिदिन एक बार R1, R24 तथा R 38 प्रत्येक की 10-15 बूँदें लें।

अपेण्डिक्स के उग्र प्रदाह (Acute Appendicitis) में जब तक शल्य चिकित्सा द्वारा अपेण्डिक्स को हटाया नहीं जाता : R 24 तथा R 38 की 10-15 बूँदें प्रत्येक एक–दो घंटे पर बारी–बारी से लें।

दँात निकलने से सम्बन्धित तकलीफों में : R 35 देखें।

श्वास नली के प्रदाह (Bronchitis) में : R 48 तथा R 57 देखें; यदि आवश्यक हो तो जटसिन R 8 तथा R 9 को देखें।

काली खाँसी (Whooping cough) में : जटसिन बूँदें R 9 तथा सिरप R 8 देखें।

माँसपेशी सम्बन्धी तथा जोड़ों का पुराना आमवात (Rheumatism) : R 11 तथा R 46 देखें।

गुर्दे की पथरी (Nephrolithiasis) : R 27 देखें।

मूत्राशय तथा गुर्दे का प्रदाह (Cysto-pyelitis) : R 18 देखें।

फेंफड़ों की झिल्ली का प्रदाह (Pleuritis) : R 24 देखें।

टाँसिल प्रदाह (Tonsillitis) कंठ प्रदाह एवं गुर्दे के प्रदाह (nephritis) : के उपरांत पेशाब में प्रोटीन जाने पर (Proteinurea) अतिरिक्त औषधि के रूप में R64 का व्यवहार करें।

इंफ्लुएंजा : R 6 देखें।

पाचन रस थैली के प्रदाह (Pancreatitis) में : R 72 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 2

Essentia aurea-Gold drops

हृदय सम्बन्धी रोगों के लिए गोल्ड ड्रॉप्स

मूल-तत्व : आर्निका D3, ऑरम क्लोरैट D6, केक्टस D4, डिजिटैलिस D3, इग्नेशिया D6, लॉरोसेरॉसस D3, स्पाइजेलिया D3, वैलेरियाना D2, क्रैटेगस Ø, काली फॉस D4, एकोनाइटम D6.

लक्षण : हृदय के आंगिक (Organic) तथा क्रियात्मक रोग, मुख्यतः हृदय विक्षिप्ति (cardiac neurosis)। स्नायविक गड़बड़ियाँ। हृदय की तालहीन धड़कन (Arrhythmia), हृदय की तीव्र गति (tachycardia), हृदय का पूरी तरह फैलने से पहले ही सिकुड़ जाना (extrasystoles), संकुचन, हृदय–शूल, हृदय वाहिनियों की सुकड़न एवं रूकावट (Angina pectoris)।

सशक्त नाड़ी, धड़कन बढ़ना, उत्तेजना, हृदय की व्याकुलता तथा घुटन, हृदय की बढ़ती हुई अनियमित ताल (vegetative dystonia)।

क्रिया विधि : **आर्निका :** हृदय में पीड़ायुक्त अनुभूति। हृदय की तंत्रिका संबंधी तकलीफ।

ऑरम क्लोरैट : हृदय की माँसपेशियों (Myocardium), बड़ी धमनी (aorta) तथा परिहृदय (coronary) धमनी पर प्रभावी क्रिया करती है। हृदरोध तथा हृदय का फैलाव सिर की ओर रक्त का अधिक बहाव, हृदयावरणीय पीड़ा।

केक्टस : घुटन की अनुभूति, सशक्त नाड़ी, अवसाद। हृत्संकीर्णता (Stenocardia) तथा हृदय–शूल (angina-pectoris).

क्रैटेगस : हृदय एवं रक्त संचरण के लिए उत्कृष्ट बलवर्द्धक औषधि। हृत्पेशियों की दुर्बलता तथा अल्पतनाव।

डिजिटालिस : हृदय की दुर्बलता की स्थिति में हृदय संबंधी बलवर्द्धक औषधि। व्याकुलता तथा चिड़चिड़ेपन के साथ हृदय विक्षिप्ति (Cardiac neurosis), सशक्त नाड़ी।

इग्नेशिया : हृदय की विभिन्न नाड़ी संबंधी अनुभूतियाँ, मुख्यतः विषादमय प्रकृति, अधीरता, बैचेनी के रोगों के बाद। सर्वांगीण तंत्रिका संबंधी चिड़चिड़ापन तथा अनिद्रा रोग में भी।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काली फॉस : सर्वांगीण नाड़ी सम्बन्धी थकान रक्तहीनता तथा हृत्पेशियों की दुर्बलता। संचार अवरोध (conduction disturbances)।

लॉरोसेरासस : हृत्पेशियों की (myocardial) अपर्याप्त अवस्था के साथ शरीर नीला पड़ना या श्यामता (cyanosis)। छाती में दबाव और पीड़ा।

स्पाइजेलिया : सशक्त तथा असामान्य नाड़ी जो दिखाई भी देती है और महसूस भी होती है। बायीं बाँह में नीचे तक फैलता दर्द।

वैलेरियाना : तंत्रिका सम्बन्धी व्याकुलता, शारीरिक द्रव्यों की परिवर्तनशीलता, तंत्रिका सम्बन्धी अति–संवेदनशीलता। हृदय पर क्रियात्मक प्रभाव, सशक्त नाड़ी, हृदय संबंधी घबराहट।

खुराक की मात्रा: गंभीरता के आधार पर प्रारंभ में थोड़े पानी में 10-15 बूँदें प्रतिदिन 3-6 बार लें। हृदय के तीक्ष्ण रोग में सुधार शुरु होने तक प्रत्येक 1/4 – 1/2 घंटे पर 10-15 बूँदें लें।

टिप्पणी : हृत्पेशियों की हल्की से मध्यम अंश तक की अपर्याप्त स्थिति में R 3 प्रयोग करें।

उदर एवं हृदय सम्बन्धी रोगों में अतिरिक्त औषधि के रूप में R 5 भोजन के पहले या बाद में प्रतिदिन 10-15 बूँदें 1-3 बार प्रयोग करें।

हृदय सम्बन्धी अनियमित धड़कन में : R 66 या R 22

तीक्ष्ण हृत्पेशियों (myocardial infarct) के रोधगलन में : प्रत्येक ½-1-2 घण्टे पर बारीबारी से 10-15 बूँदें : R2, R 67 तथा R 55 की लें। तदुपरान्त R 3 के साथ और बाद में R 44 के साथ उपचार जारी रखें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 3

Heart Drops

हृदय सम्बन्धी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : कैक्टस D2, क्रैटेगस Ø, डिजिटैलिस D3, काली कार्ब D3, कालमिया D3, फॉसफोरस D5, सिला D2,स्पाइजेलिया D3, स्ट्रॉफैथस D3, आर्सेनिकम एल्बम D5.

लक्षण : हल्की से मध्यम स्तर की हृदय क्रिया सम्बन्धी अपर्याप्ततायें। साथ में जलीयशोथ की प्रव त्ति। वॉल्व सम्बन्धी हृदय रोगों में हृत्पेशियों की (myocardial) दुर्बलता। हृदय का विस्फारण (Dilatation)।

संक्रमण के बाद हृत्पेशियों की (myocardial) दुर्बलता। हृदय की माँसपेशियों की विघटनकारी प्रक्रियायें, परिहृदय (coronary) सम्बन्धी अर्प्याप्ततायें, हृदय प्रघात (Cardiac infarction), क्रियात्मक अनियमिततायें, हृदय की माँसपेशियों (Myo) तथा हृदय के अंदरूनी भागों का प्रदाह (endocarditis), अल्पतनाव (Low blood pressure)।

क्रिया विधि : निम्नलिखित औषधी वर्ग हृदय की माँसपेशियों की कमजोरी दूर कर हृदय को शक्ति प्रदान करता है :

कैक्टस : हृदय रोध, साथ में हृदय–शूल अथवा हृदय में दर्द (angina-pectoris) के लक्षण। सशक्त नाड़ी, घुटन।

क्रेटेगस : हृदय की दुर्बलता के साथ हृत्पेशियों या हृदय की मांसपेशियों का अपजनन (Myodegeneratio cordis); संक्रमणकारी रोगों के दौरान हृदय में क्षीणता (दुर्बलता)। पीड़ायुक्त मरोड़, निम्नरक्तदाब, क्षति आपूर्ति में असमर्थता (Decompensation) की प्रव त्ति, क्रियात्मक अनियमिततायें। व्यग्रता तथा संताप के साथ हृदय की दुर्बलता, कठिनाईयुक्त साँसें, सामान्य थकान।

डिजिटैलिस : हृदय फैलने (heart enlargement) के साथ हृदय गति रुकना (Failure)।

काली कार्ब : हृदय के अंदरूनी भागों तथा माँसपेशियों के प्रदाह में हृदय एवं हृदय वाहिका तंत्र की दुर्बलता, हृदय में तेज़ दर्द।

काल्मिया : बाँयी बाँह में नीचे की ओर फैलता दर्द, मुश्किल श्वास के साथ हृदय की पुरानी दुर्बलता। गठिया तथा आमवात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(Rheumatism) होने के तत्पश्चात् अंदरूनी हृत्पेशियों (endocarditis) का नया व पुराना प्रदाह।

फॉस्फोरस : हृदय की तेज़ धड़कन, विशेषकर जब बाँयी ओर आराम कर रहे हों, छाती की ओर रक्त का तेज़ बहाव और घुटन, संताप। सामान्य तंत्रिका सम्बन्धी दुर्बलता और अत्यधिक संवेदनशीलता।

सिला : रिदम विकार (dysrhythmia) के साथ हृदयवाहिका तंत्र की अपर्याप्तता। क्षति आपूर्ति न होने जैसा लक्षण।

स्पाइजेलिया : तेज़ और असामान्य धड़कन, धीमी नाडी, हृदय के अंदरूनी भागों तथा माँसपेशियों का प्रदाह।

स्ट्रॉफैन्थस : तेजी से असर दिखाने वाला हृदय टॉनिक।

खुराक की मात्राः उपचार के प्रारंभ में हृदय की दुर्बलता के आधार पर थोड़े पानी में 10–20–30 बूँदें दिन में तीन बार प्रतिदिन 4–6 बार तक भी। जलशोथ (Hydropsy) की तेज़ प्रव त्ति होने पर बिना पानी मिलाये लेना चाहिए। कईं दिनों के बाद ही सुधार नज़र आयेगा। यदि ऐसा न हो, तो खुराक बढ़ा देनी चाहिए और सुधार के बाद कम कर के दिन में तीन बार 20 बूँद लेनी चाहिए। तकलीफ पूरी तरह से दूर हो जाने के बाद भी थोड़े लंबे समय तक दिन में 2–3 बार 10–15 बूँदों का उपचार जारी रखना चाहिए। अधिक खुराक लेने से कोई नुकसान नहीं होता। हृदय की तीक्ष्ण दुर्बलता होने पर प्रत्येक 15 से 30 मिनट पर 10–20 बूँदें लें।

टिप्पणी : हृदय सम्बन्धी विक्षिप्ति (Neurosis), हृदय में दर्द (Angina pectoris) आदि में R 2 गोल्ड ड्रॉप्स का प्रयोग करें।

हृदय की माँसपेशियों (Myocarditis) तथा हृदय के अंदरूनी भागों के प्रदाह (endo-carditis) में अतिरिक्त औषधि के रूप में R 22 का व्यवहार करें।

हृदय की क्षति आपूर्ति न होने की स्थिति (Decompensated Heart) में : R 58

हृत्पेशिय (Myocardial infarct) प्रघात में : R 67 तथा R 2, तदनन्तर R 3.

हृदय सम्बन्धी अनियमित ताल (Arrythmias) : R 66.

हृदय सम्बन्धी विक्षिप्ति में (Neurosis) : R 22.

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 4

Diarrhoea Drops

अतिसार ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एसिड फॉस्फोरिक D 3, बैप्टिसिया D 4, कैमोमिला D 4, चाइनिनम आर्सेनिकोस D 3, कोलोसिंथिस D 6, फेरम फॉस्फौरिक D 8, मर्क. सब. कोर D 5, ओलिएंडर D 6, रसटॉक्स D 4, वेराट्रम D 6।

लक्षण : सभी प्रकार के नये एवं पुराने पेट व आंतों सम्बन्धी प्रदाह में। सर्दी लगने अथवा दोषपूर्ण खान–पान के बाद ग्रीष्मकालीन अतिसार (दस्त होना)। आँतीय नजला (आँव), आँतीय इंफ्लुएंजा बुखार के साथ अतिसार, टायफॉयड बुखार, पेचिश।

क्रिया विधि : **एसिड फॉस्फोरिक :** टॉयफॉयड बुखार, उनींदापन, नया एवं पुराना अतिसार (पनीले दस्त होना)।

बैप्टिसिया : अत्यधिक श्लेष्मा (आंव) के साथ अतिसार अथवा पनीले दस्त होना, हल्का–हल्का सिरदर्द, बुखार, जीभ पर कत्थई रंग की परत जमी हुई, शरीर में सूजन।

कैमोमिला : ठंड लगने के बाद पनीला (Aqueous) या हरा मल, पेट दर्द।

चाइनिनम आर्सेनिक : बुखार, सामान्य थकान तथा कमज़ोरी के साथ जीवाणुओं को नष्ट करने वाला अतिसार।

कोलोसिंथिस : आँतों में अत्यधिक आक्रामक मरोड़ के साथ पेचिश का मल।

फेरम फॉस : अत्यधिक पेट फूलने के साथ पनीले दस्त। बुखार और जलन से मुक्त करने वाली औषधि।

मर्क. सब. कोर. : चिपचिपा और रक्त युक्त मल, थका देने वाले उदरशूल तथा चिपचिपी कूथन (Tenesmus)।

ओलिंएडर : विस्फोट होने जैसी तीव्र ध्वनि के साथ होने वाला ढीला–ढाला पखाना, शूल–युक्त आँतीय मरोड़, अपचा मल।

रस टॉक्स : भीग जाने के फलस्वरूप पनीले, आंवयुक्त खूनी दस्त, बेचैनी, उनींदापन।

वेराट्रम एल्ब : बहुत अधिक कँपकँपी तथा निपात के साथ उल्टी और पनीले दस्त। गर्मी में होने वाले पनीले दस्त।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्रा: तेज़ बुखार में प्रत्येक ¼–1 घंटे पर 20 बूँदें, बिना पानी मिलाये। सुधार होने पर, जो अक्सर 1–2 दिन बाद होता है, खुराक घटा कर प्रत्येक 1–2 घंटे पर 10–15 बूँदों तक कर दें। सुझाव है, कि पूरी तरह से स्वस्थ होने तक प्रतिदिन 3 बार 10–15 बूँदे भोजन के पूर्व लगभग एक सप्ताह तक लेते रहें।

सामान्य अतिसार या दस्तों में, जब बुखार न हो, स्थिति की गंभीरता के अनुसार, प्रत्येक 1–3 घंटों पर 10–15 बूँदें लें।

आंत्रिक ज्वर (Typhoid) में, जब आँतीय अस्तव्यस्तता न हो, प्रत्येक 1–2 घंटे पर 10–15 बूँदें लें।

पुराने अतिसार या दस्तों में, भोजन के पूर्व दिन में 3 बार 10–15 बूँदें लें।

टिप्पणी : लम्बी रोगावस्थाओं में जब जीवन शक्ति मन्द पड़ गई हो व प्रतिक्रिया का अभाव पाया जाए तो प्रतिदिन एक बार R–26 की 10–15 बूँदें भी साथ में लें।

आँतीय मरोड़ में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 37 साथ में लें।

रोग निव त्ति के दौरान : Vita–C 15.

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 5
Stomach Drops
उदर सम्बन्धी रोगों के लिए

मूल-तत्व : एनाकार्डियम D6, आर्जेण्टम नाइट्रिकम D6, आर्सेनिकम एल्बम D4, बेलाडोना D4, कार्बो वेज D8, कैमोमिला D2, चेलिडोनियम D3, लाइकोपोडियम D5, नक्सवोमिका D4, स्क्रोफुलैरिया नोड D1.

लक्षण : विशेषकर पेट सम्बन्धी व्रण (Parapyloricum i.e., gastric-peptic ulcers)। अमाशय का नया एवं पुराना प्रदाह, मंदाग्नि (dyspepsia) पेट का पुराना पुनरावर्ती प्रदाह जिसके साथ पेट में घाव भी हो सकता है।

हृदय में जलन, मुँह में बुरा–स्वाद, लगातार उबकाई, पेट फूलना, अफारा (Meteorism)।

पेट की जलन भरी श्लेष्मिक झिल्ली पर तथा उदर की शरीर रचना–विज्ञान पर कार्य करती है।

क्रिया विधि : **एनाकार्डियम :** उदर सम्बन्धी तकलीफें, जिनमें कुछ खा लेने से आराम आता है, आधी रात के आसपास पीड़ा होती है।

आर्जेन्टम नाइट्रिकम : ऊपरी पेट सम्बन्धी तकलीफ, शोर–युक्त तथा लगातार होने वाली डकारें अथवा उबकाइयाँ साथ ही अल्पकालिक सुधार।

आर्सेनिकम एल्बम : श्लेष्मिक झिल्लियों के लिए औषधि, उल्टी के साथ उदर में जलनयुक्त दर्द।

बेलाडोना : दबाव के प्रति ऊपरी पेट की संवेदनशीलता, तथा अन्य व्यवधान, मितली, उल्टी।

कार्बो वेज० : उदर गव्हर में भरे होने की अनुभूति, शक्तिहीनता, तथा थकान।

कैमोमिला : तंत्रिका सम्बन्धी अति–संवेदनशीलता तथा चिड़चिड़ापन। उदर में सूजन।

चेलीडोनियम : लीवर तथा पित्त के लिए प्रभावशाली, पित्तवर्धी, सेवन कराये जाने पर पाचन–दोषों को नष्ट करती है।

लाइकोपोडियम : पेट व आँतों की बीमारियाँ, मुँह में कड़ुवाहट भूख का अभाव, कब्ज़, पेट फूलने के साथ पेट दर्द।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नक्सवोमिका : तंत्रिका सम्बन्धी चिड़चिड़ाहट, रोगभ्रम उदर में संकुचन, निकोटिन के कारण होने वाले पेट के रोग।

स्क्रोफुलेरिया नोडोसा : पेट में कसाव वाला दर्द, अत्यधिक अम्लता, कुछ खा लेने के बाद आराम महसूस होना।

कुछ रोगियों में जो दवाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं, उपचार के कुछ दिनों बाद पीड़ा बढ़ सकती है, जिसे तथाकथित प्राथमिक प्रतिक्रिया कहते हैं। ऐसी स्थितियों में 1–2 दिनों के लिए उपचार को पूरी तरह से रोक देना बेहतर होता है। दोबारा उपचार शुरू करने पर लगातार सुधार होगा। अन्य स्थितियों में, कुछ समय के अंतराल पर उपचार करें, या खुराक घटा दें, अथवा भरे पेट बूँदें लें।

डॉ० रेकवेग R 5 के प्रयोग की यह विशेषता है कि सामान्यतः बार-बार होने वाली तकलीफ की गंभीरता तब तक लगातार कम होती जाती है, जब तक वह पूरी तरह से समाप्त न हो जाए।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः भोजन के पूर्व दिन में 3 बार, थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। लक्षणों के पूरी तरह खत्म हो जाने पर, पुनः होने से रोकने के लिए और नाड़ियों के बढ़े हुए तनाव को नियमित करने के लिए दिन में एक बार मुख्य भोजन के पूर्व, थोड़े पानी में 10–15 बूँदे लें।

टिप्पणी : अत्यधिक अम्लीयता होने पर उपचार के आरंभिक दिनों में दवा का अतिरिक्त प्रयोग प्रभावशीलता को नुकसान नहीं पहुँचाता। जहाँ तक आहार का सम्बन्ध है। सरलतापूर्वक पच जाने वाले भोजन को प्राथमिकता देनी चाहिए जैसे कि फलियाँ, बन्दगोभी। भारी वसा जैसे भुनी मछली, तले आलू जैसे खमीर उठने वाले आहार नहीं लेने चाहिए। भोजन को अच्छी तरह चबायें, तंबाकू का सेवन न करें, शर्करा का उपभोग कम करें।

लीवर की तकलीफ यदि साथ हो तो, इसके साथ R 7 का प्रयोग भोजनों के बीच दिन में 2–3 बार करें।

उदरशूल में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 37 का भी प्रयोग करें।

पाचन रस थैली (Pancreas) के विकार में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 72 का भी प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 6
Influenza Drops
इंफ्लुएंज़ा सम्बन्धी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : ब्रायोनिया D4, कैम्फोरा D3, कॉस्टिकम हैनम D6, बैप्टीसिया D4, यूपेटोरियम परफोल D3, फेरम फॉस० D8, जेल्सेमियम D6, यूकेलिप्टस D3, सैबाडिल्ला D 6, एकोनाइटम D4.

लक्षण : तंतु–ऊतकों तथा सीरमी झिल्लियों का उग्र ज्वरयुक्त प्रदाह।

R 6 सीरम सम्बन्धी एक विशिष्ट औषधि है, विशेषकर इंफ्लुएंज़ा की स्थिति में।

सामान्य संक्रमण, साथ में हाथ–पैरों में पीड़ा, सन्निपात की अनुभूति, हल्का–हल्का सिरदर्द, बेचैनी। सूखी तथा जलती हुई त्वचा, तेज दर्द।

ऊपरी वायु मार्गों की श्लेष्मिक झिल्ली में बुखार युक्त नजला, नाक व गलकोष का प्रदाह, इंफ्लुएंज़ा, श्वासनली का प्रदाह, निमोनिया, सीरमी झिल्लियों की जलन, फेंफड़ों की झिल्ली का प्रदाह (Pleurisy), हृदयावरक झिल्ली का प्रदाह (Pericarditis), उदरावरक झिल्ली का प्रदाह (Peritonitis), पेट के अंगों की ज्वलनशील प्रक्रियाओं के दौरान उदरावरण (Peritoneum) की उत्तेजना।

क्रिया विधि : **बैप्टीसिया :** आंत्रिक (typhic) बुखार, गहन निद्रा एवं सुस्ती, सर्दी, श्लेष्मिक झिल्लियों में जलन।

ब्रायोनिया : नजला एवं बुखार, सिर दर्द, चुभने वाला दर्द, सीरमी ऊतकों में जलन।

कैम्फोरा : आरोग्यकारी, शांति दायक

कॉस्टिकम : श्लेष्मा में कच्चेपन की अनुभूति, खोखली खाँसी, मूत्राशय की संकोचक पेशी की दुर्बलता।

यूकेलिप्टस : सामान्य व्यग्रता तथा बढ़ती हुई साँस, अंगों की बेचैनी (Weariness) तथा कड़ापन, सिरदर्द, बुखार।

यूपेटोरियम पर्फ : कमजोरी (Prostration) की अनुभूति के साथ बुखार, ऊपरी वायु मार्गों में नजला युक्त जलन, साथ ही खाँसी की प्रव त्ति तथा श्लेष्मा के कच्चेपन (rawness of the mucous memberane) की अनुभूति।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरम फॉस : बुखार तथा जलन की औषधि, धीमी नाड़ी, सिर की ओर रक्त का अधिक बहाव। ऊपरी श्वास मार्गों के प्रदाह तथा श्वास नलियों व फेफड़ों के प्रदाह (Brancho pnuemonia) में प्रभावशाली।

ठंड लगने के बाद बुखार, साथ में शुष्क रक्तिम त्वचा, बेचैनी (Restlessness)।

जेल्सेमियम : रक्त संकुलन सम्बन्धी सिरदर्द, उनींदापन, कँपकँपी तथा अवसन्नता।

सैबाडिल्ला : छींक के केंद्र का ऐंठन युक्त (spasmodic sneezing) उद्दीपक, जलन युक्त ठंड, खांसी के केंद्र की उत्तेजना, छाती में सुई चुभने जैसी अनुभूति।

खुराक की मात्रा: **बुखार की प्रव त्ति के साथ तीक्ष्ण रोग अवस्था :** प्रत्येक 15 से 30 मिनट पर थोड़े पानी में 10 बूँद। जैसे ही बुखार कम होने लगे (सामान्यतः 1–2 दिनों के बाद) तथा पसीना आये, प्रत्येक 1–2 घंटे पर 10–15 बूँद दवा लें। बुखार जाने के बाद, कई दिनों तक प्रत्येक 2–3 घंटे पर 10 बूँदें थोड़े पानी में लेते रहें।

इंफ्लुएंज़ा फैलने पर बचाव : थोड़े पानी में 10–15 बूँदे दिन में 3–4 बार।

टिप्पणी : तीक्ष्ण संक्रमण में जब तेज़ बुखार हो तथा जलन मुख्य रूप से सिर की श्लेष्मिक झिल्ली में केन्द्रित हो (लालिमा, उन्माद, आँख दुखना अथवा आँख का प्रदाह), R 1 का प्रयोग करें।

श्वासनलियों के प्रदाह (Bronchitis) में : जटसिन बूँदें R 9 तथा सिरप R 8 देखें।

फेफड़ों की झिल्ली के प्रदाह (Pleuritis) में : R 24 देखें।

साइनस (Sinusitis) के संबद्ध होने पर : R 49 देखें।

उपर्युक्त दवाओं का प्रयोग लक्षणों के आधार पर R 6 के अतिरिक्त, अथवा उसके साथ अदल–बदल कर किया जाता है।

चिकेन-पॉक्स : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 68 का प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 7
Liver & Gallbladder Drops
लीवर तथा पित्ताशय सम्बन्धी ड्रॉप्स (Drops)

मूल-तत्व : कार्डुअस मैरिएनस D2, चेलीडोनियम D2, कोलेस्टेरिनम D6, कोलोसिंथिस D6, लाइकोपोडियम D4, नक्स वोमिका D4, चायना D3.

संकेत : यक त एवं पित्ताशय के आंगिक तथा क्रियात्मक रोग, यकृत–रोग, पित्ताशायिक रोग, पथरी, पित्त के स्राव में व्यवधान, यक त का प्रदाह (Hepatitis), पेट में सूजन, थोड़ा सा भोजन करते ही भूख गायब हो जाना, भूख का अभाव, मुँह में कड़ुवा स्वाद, पेट–फूलना, कब्ज़, भोजन के बाद बेचैनी (Weariness), चिड़चिड़ापन, रोगभ्रम (Hypochondria)।

क्रिया विधि : **कार्डुअस मैरिएनस :** लीवर में पीड़ायुक्त सूजन, पीलिया, पित्त सम्बन्धी पथरी, पित्तनली का प्रदाह।

चेलीडोनियम : लीवर तथा पित्त वाही नली पर दबाव की अनुभूति के साथ लीवर में सूजन, जो दाँयें कंधे के छोर तक फैल जाती है, पित्त का बहाव बढ़ाने वाली औषधि (cholagogue)।

कोलेस्टेरिनम : लीवर बढ़ना, पीलिया होना तथा पित्ताशय में पथरी बनना।

कोलोसिंथिस : पेट में मरोड़ वाली पीड़ा, कपड़ों का दबाव भी सहन नहीं होता। पीड़ा उठने पर, पेट पर दबाव डालने से तथा आगे झुकने से सुधार होता है।

लाइकोपोडियम : अफारा तथा पेट फूलना, मुँह में कड़ुवा स्वाद, शरीर से निकलने वाला गन्दा स्राव, कब्ज़ियत।

नक्सवोमिका : रोगभ्रम (Hypochondria), लीवर की सिकुड़न तथा रक्तसंलयी अवस्था, मितली, तंबाकू खाने व शराब पीने से होने वाली व्याधियां, पीलिया, पेट तथा ग्रहणी (Gastro-duodenal) सम्बन्धी नजला, कब्जियत। अफारा, पेट में सूजन, पेट फूलने के साथ उदर शूल।

खुराक की मात्रा: सामान्यत : भोजन के पूर्व दिन में तीन बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें। यदि 8–14 दिन में कोई सुधार नहीं होता, तो दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में 4–6 बार 10–15 बूँदें लें तथा सुधार होने पर खुराक कम कर दें। तकलीफ के पूरी तरह से समाप्त होने के बाद भी, थोड़े लंबे समय तक दिन में 1–3 बार 10–15 बूँदें लेते रहें, आहार पर विशेष ध्यान दें।

टिप्पणी : लीवर तथा पित्त की थैली के प्रदाह युक्त रोगों के लिए अतिरिक्त औषधि के रूप में R 1 का भी प्रयोग करें।

साथ ही उदर सम्बन्धी रोगों (जठर शोथ, व्रण) में R 5 का भी प्रयोग करें।

व्रण (ulcers) में दिन में तीन बार, भोजन के पूर्व R 5 की 10–15 बूँदें लें, तथा दो भोजनों के बीच दिन में 2–4 बार 10–15 बूँदें R 7 लें।

बवासीर में अतिरिक्त औषधि के रूप में R 13 का भी प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जटसिन —डॉ० रेकवेग
R 8 Cough Syrup R 9 Cough Drops
R 8 खाँसी के लिए सिरप—R 9 खाँसी के लिए ड्रॉप्स

मूल-तत्व : **R 8 :** अमोनियम कॉस्टिकम D2, बेलाडोना D2, ब्रायोनिया D2, कैमोमिला D2, कॉकस कैक्टाई D5, कोरेलियम रुब्रम D10, क्यूप्रम ऐसिटिकम D10, ड्रोसेरा रोटंडिफोलिया D2, इपेकाकुआन्हा D3, थायमस वल्गेरिस D2, सैकारम एल्बम, सैकारम टोस्टम,

R 9 : बेलाडोना D 4, ब्रायोनिया D 3, कॉकस कैक्टाई D 6, कोरेलियम रुब्रम D 12, क्यूप्रम ऐसिटिकम D 12, ड्रोसेरा रोटंडिफोलिया D 4 इपेकाकुआन्हा D 6, स्पॉन्जिया D 6, स्टिक्टा पुल्मोनेरिया D 4, थायमस वल्गेरिस ∅।

संकेत : ऊपरी वायु मार्गों के सर्दीजनित रोग, नासिका, स्वर—यंत्र एवं ग्रसनी का प्रदाह, विशेषकर श्वासनलियों के प्रदाह (Bronchitis) तथा काली खांसी की सभी अवस्थाओं में उपयोगी। श्वासनलियों के पुराने प्रदाह (Chronic Bronchitis), श्वास दमा, क्षयरोग में खाँसी के दौरों (तपेदिक से पीड़ित) में एक प्रभावशाली कफोत्सारक या बलगम निकालने वाली औषधि।

क्रिया विधि : **आमोनियम कॉस्टिकम :** प्रचुर मात्रा में ढीले श्लेष्मा के साथ ऐंठन वाली खाँसी के दौरे।

बेलाडोना : ऐंठन वाली खाँसी के दौरे, खोखली और कूकुर खाँसी (Barking Cough), सूखी श्लेष्मिक झिल्लियाँ।

ब्रायोनिया : कठोर और सूखी खाँसी, साथ में छाती में पीड़ा।

कैमोमिला : ऐंठन वाली खाँसी, नजला तथा स्वर—भंग के साथ गले में चिपचिपे श्लेष्मा का भराव, सूखी खाँसी, मुख्यतः शाम और रात को।

कॉकस कैक्टाई : ग्रसनी की श्लेष्मा—झिल्ली की अति—संवेदनशीलता। चिपचिपा, चमचमाता बलगम निकलने के साथ मरोड़ वाली खाँसी।

कोरेलियम रुब्रम : ऐंठन युक्त खाँसी का तेज़ दौरा पड़ने के साथ दम घुट जाने जैसी स्थिति।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्यूप्रम एसेटिकम : ऐंठन युक्त खाँसी, चिपचिपा श्लेष्मा, श्वास लेने में कठिनाई (dyspnea)।

ड्रोसेरा रोटंडिफोलिया : ऐंठन वाली खाँसी के साथ चेहरा नीला पड़ जाना तथा घुटन, ऐंठनयुक्त दमा।

इपेकाकुआन्हा : कंठद्वार (Glottis) में ऐंठन के साथ सूखी श्वासरोधी खाँसी, मितली तथा वमन।

स्पॉन्जिया : खोखली खाँसी, रात में खाँसी।

स्टिक्टा पल्म : नाक से नीचे की ओर ग्रसनी और श्वास प्रणाली तक फैलती हुई सर्दी, तदनन्तर श्वासनलियों का प्रदाह (Bronchitis)। नाक की जड़ पर दबाव।

थायमस वल्गेरिस : कफ निकालने की औषधि।

खुराक की मात्रा: काली खाँसी (whooping cough) : उपचार के प्रारंभ में हर एक घंटे लगातार थोड़े पानी में 10 बूँदें या एक छोटा चममच (5 ml) सिरप की खुराक देते रहें। प्रत्येक घंटे, एक बार कफ सिरप और दूसरी बार कफ ड्राप्स देना ज्यादा बेहतर होता है। रोग की गंभीरता और खाँसी के दौरों की बारंबारता कम हो जाने पर (जो सामान्यतः 2–3 दिनों में होता है) दवा को प्रत्येक 2 घंटे पर लें। अविशिष्ट नजले के बाद होने वाले काली खाँसी (whooping cough) के उपचार में प्रतिदिन 4–6 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें, अथवा एक छोटा चम्मच (5 ml) सिरप लें।

तीक्ष्ण श्वास नलियों के प्रदाह तथा स्वरयंत्र एवं ग्रसनी के प्रदाह में (laryngo–pharyngitis) : प्रत्येक 2–3 घंटे पर 10–15 बूँदें या 1 छोटा चम्मच सिरप लें।

टिप्पणी : इंफ्लुएंज़ा में R 6 का भी प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 10
Climacteric Drops
रजोनिव त्तिकालीन (मेनोपॉज़ सम्बन्धी) ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एसिड सल्फ्यूरिक D 4, सिमिसिफ्यूगा D 4, सैंग्यूनेरिया D 4, सीपिया D 4, लैकेसिस D12.

संकेत : रजोनिव त्तिकालीन तकलीफें, तप्त लालिमा, पसीने के दौरे, शारीरिक दुर्बलता, अवसाद, सिरदर्द, अनियमित मासिक चक्र, स्त्री जननांग में प्रचंड खुजली तथा स्राव, मानसिक थकान, विरक्ति।

क्रिया विधि : R 10 सभी प्रकार के अण्डाशय सम्बन्धी विकारों पर अनुकूल जैविक प्रभाव डालता है।

एसिड सल्फ : शारीरिक दुर्बलता, पेट फूलना, सन्निपात, तेज़ तपन तत्पश्चात् पसीना निकलना, रक्तस्राव की प्रव त्ति, स्त्री जननांग में प्रचंड खुजली।

सिमिसिफ्यूगा : अंतःस्रावी (Endocrine) ग्रंथियों की क्रियाशीलता में विकार, विशेषकर **मेनोपॉज़** के दौरान। मानसिक अवसाद तथा उत्तेजना, बेचैनी।

सैंग्यूनेरिया : वाहिका प्रेरक अंगों में जलन, बार–बार गर्म तत्पश्चात् ठंड महसूस करना, तंत्रिका सम्बन्धी क्षोभ, सिरदर्द।

सीपिया : हार्मोन सम्बन्धी प्रभाव, शारीरिक और आध्यात्मिक बेचैनी, थकान, शक्ति का अभाव, उनींदापन, विरक्ति। तपन की लहर, तत्पश्चात् पसीना आना। मानसिक अति संवेदनशीलता तथा चिड़चिड़ापन। पेट में सिकुड़ने अथवा डूबने की अनुभूति, अत्यधिक स्राव, अनियमित मासिक स्राव।

प्रबल भावावेग (Emotional) तथा स्पन्दन की अनुभूति, सिर चकराना,. दबाव, घुटन, ह्रदय की कमज़ोरी। मासिक धर्म के समय सुधार।

खुराक की मात्रा: तीक्ष्णता की स्थिति के अनुसार थोड़े पानी में दिन में 3–6 बार 10–15 बूँदें। जब सुधार हो, तो तुरंत ही खुराक को दिन में तीन बार 10–15 बूँदें तक कम कर दें। लंबे समय तक 10–15 बूँदें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1-2 दिन लेते रहना अच्छा होता है, जब तक कि शरीर का भौतिक रूपान्तरण पूरी तरह न हो जाये।

R 10 में वे हार्मोन्स नहीं होते जो सामान्यतः लिये जाते हैं। हार्मोन्स युक्त औषधियाँ का अतिरिक्त प्रयोग इसकी जैवीय शक्तियों को प्रभावित नहीं करता बल्कि ज्यादातर रोगावस्थाओं में अनावश्यक ही सिद्ध होता है।

टिप्पणी : R 10 स्त्री–अंगों के रोगों विशेषकर जननांगों से होने वाले स्त्रावों में प्रभावी सिद्ध होती है। गर्भाशयशोथ, परागर्भाशय– संयोजी ऊतकशोथ, अंडाशय शोथ में प्रत्येक 2–3 घंटे पर बारी–बारी से R-10 तथा R 1 लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 11
Rheuma Drops
र्यूमा ड्रॉप्स (आमवात रोगों के लिए)

मूल-तत्व : बरबेरीस D4, कैल्शियम फॉस D12, कॉस्टिकम D6, डल्कामारा D4, नक्स वोमिका D4, रोडोडेंड्रॉन D4, रस टॉक्स D4।

लक्षण : माँसपेशियों का नया व पुराना दर्द, कमरदर्द (Lumbago) आमवात रोग की प्रव ति (rheumatic diathesis), भीग जाने के दुष्प्रभाव, मोच, अधिक दबाव पड़ने के कुफल। अज्ञात उत्पत्ति वाले पीठ दर्द। माँसपेशियों एवं हड्डियों में बढ़ता हुआ दर्द।

भीग जाने से, ठंडी जगह पर बैठने से तथा पसीने को दबाने से हुआ कटिस्नायु शूल (Sciatica)। पुराना धमनी सम्बन्धी आमवात (Rheumatism), साथ में अंग–विकृतियाँ। कशेरुका संधिशोथ, कशेरूका–सन्धियों का प्रदाह (Spondylosis), त्रिक श्रोणि फलक सम्बन्धी (Sacroiliac) गठिया/जोड़ों का प्रदाह।

आमवातीय (Rheumatic) दर्द (माँसपेशियों, जोड़ों, ऊतकों में) तापमान (नमी) बदलने पर बढ़ने वाला।

क्रिया विधि : **बरबेरीस :** कमर में निचले भाग (पुट्ठों) में तीक्ष्ण तथा अकारण होने वाला दर्द। अम्लीय मूत्र, मूत्र–पथरी।

कैल्शियम फॉस : गर्दन और उसके साथ जुड़े हुए मेरूदंड के आसपास की माँसपेशियों की दुर्बलता, विकृत हड्डियाँ। आमवात रोग की प्रव ति (rheumatic diathesis), नम मौसम (humidity) अथवा बरसात में बढ़ने वाली। शारीरिक रचना पर क्रियाशील।

कॉस्टिकम : कमर के निचले भाग (पुट्ठों) में पीड़ा विशेषकर जब उठने की कोशिश करें। गर्दन और पीठ की माँसपेशियों में पीड़ाप्रद अकड़न। तंत्रिका या नाड़ी सम्बन्धी पीड़ा। पीड़ाप्रद अकड़े हुए, विकृत तथा कमज़ोर जोड़।

रोडोडेंड्रॉन : आमवात (Rheumatism), विशेषकर छोटे जोड़ों का। तूफान, बारिश तथा आँधी के पूर्व लक्षणों का बढ़ना।

रसटॉक्स : प्रत्यंगों की स्थानच्युति, ऐसा महसूस होना, मानो कुचल गये हों, भीग जाने या पसीना दब जाने के कुपरिणाम। रात में और आराम करते समय लक्षणों में व द्धि। चलने–फिरने और गर्मी से आराम। ठंड लगने के बाद पीठ की माँसपेशियों का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आमवात (Rheumatism), ठंड में तथा सुबह के समय बढ़ना। सामान्यतः अत्यधिक घबराहट। प्रत्यंगों तथा जोड़ों में तंत्रिका सम्बन्धी आमवात, दुर्बलता एवं अकड़न, त्रिकास्थि में कँपकँपी। मौसम परिवर्तन तथा नम ठंडे मौसम में पीड़ा का बढ़ना। गर्मी से आराम। आमवाती (Rheumatic) गठिया संबंधी रोग की प्रवृ ति, जो अक्सर ठंडी जंगह पर बैठने से हो जाता है।

खुराक की मात्रा: तेज दर्द (कमर दर्द, सायटिका), में थोड़े पानी में प्रत्येक ½–1–2 घंटे पर 10 बूँद लें। सामान्यतः 1–2 दिनों में सुधार आरंभ होता है। तब प्रत्येक 1–2 घंटे पर 10 बूँदें लें तथा पूरी तरह से ठीक होने तक कुछ समय के लिए दिन में तीन बार 10–15 बूँद लें, जिससे दोबारा तकलीफ न हो।

पुराने माँसपेशी और जोड़ सम्बन्धी आमवात, कशेरुका संधिशोथ (Spondyloarthritis) तथा कशेरूका–संधियों के प्रदाह (Spondylosis) में सुधार होने तक दिन में 2–3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें। फिर थोड़े लंबे समय तक 1–2 दिनों में 10–15 बूँदें लें।

टिप्पणी : उग्र आमवाती–बहुसंधिशोथ में R 1 तथा R 6 का प्रयोग करें। कशेरुका के अंदर स्थित चक्रों के स्थानच्युति और उसके पश्चात् सायटिका आदि होने पर लगातार तथा बारी–बारी से R 71 का भी प्रयोग करें।

अन्तपर्शुका अथवा पसलियों के बीच तंत्रिकाशूल (Inter-costal neuralgia) में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 69 दें।
श्रोणिक रोगों के कारण महिलाओं में होने वाले पीठ के त्रिकास्थि क्षेत्र में दर्द : R 50
अस्थिसंधिशोथ (osteo-arthritis) अतिरिक्त औषधि के रूप में R 73 का भी प्रयोग करें।
जोड़ों के तीक्ष्ण आमवात में R 1 तथा R 24 देखें।
कंधों, बाँहों और हाथों के आमवात में : R 46 देखें।
यदि विकार के साथ अस्थि–सुषिरता (osteoporosis) भी हो, तो R 34 भी साथ में ले सकते हैं।
आमवात के समस्त रूपों में एटोमेयर–बैकरॉन मरहम R 30 सफल सिद्ध हुई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 12
Calcification Drops
कैल्सीकरण ड्रॉप्स

मूल-तत्व : आर्निका D3, आर्सेनिक आयोडेट D4, ऑरम क्लोरैट D6, बेरियम क्लोरैट D4, कैल्शियम आयोडेट D3, फॉसफोरस D5, ग्लोनोइन्नम D6, कालियम आयोडेट D3, प्लबम् एसेटिक D6, कोनियम D5.

लक्षण : धमनियों की सर्वांगीण कठोरता (arterisclerosis) तथा अत्यधिक तनाव (hypertonia) प्रमस्तिष्कीय (Cerebral) धमनियों की कठोरता, महाधमनी एवं रक्तवाहिनियों में कड़ापन, गुर्दे की नसों में कड़ापन, चलने में कठिनाई, पेट की दुष्क्रिया, बुढ़ापे की कमज़ोरी, कमज़ोर याददाश्त, रक्त संकुलन, सिर चकराना, भुलक्कड़पन, रक्ताघात (apoplexy) की प्रव त्ति तथा इसके परिणाम, गलगण्ड की प्रव त्ति, अवटुविषाक्तता (Thyreotoxi-cosis)।

क्रिया विधि : विस्त त आयोडीन चिकित्सा, जो विभिन्न प्रकार की आयोडेट्स को सक्रिय जैवीय तत्वों के साथ मिलाकर की जाती है।

आर्निका : रक्ताघात (मूर्छा) की प्रव त्ति, रक्ताघात के दौरे के प्रारंभ में पुनरावशोषण करती है।

औरम क्लोरेटम : मन की विषादपूर्ण अवस्था। सिर की ओर रक्त संकुलन। धड़कन बढ़ना।

बेरियम क्लोरैट : स्मरण—शक्ति में बढ़ता हुआ ह्रास, अस्थिरता व मानसिक लक्षणों की परिवर्तनशीलता, सिर चकराना, बहरापन तथा बुढ़ापे की कमज़ोरी।

कोनियम : सिर चकराना, विशेषकर उठने पर, रक्त संकुलन याददाश्त में कमी, मनःस्थिति में परिवर्तन, तंत्रिका तंत्र में सामान्य कमज़ोरी तथा अति संवेदनशीलता, नपुंसकता।

आयोडेट्स : रक्त का बढ़ता हुआ चिपचिपापन जो थायरॉयड ग्रंथियों पर क्रिया करता है, मांसपेशियों में अत्यधिक तनाव, तथा धमनियों की सामान्य कठोरता।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्लोनोइनम : सिर में रक्त संकुलता, तेज़ नाड़ी, छाती तथा हृदय में रूकावट की अनुभूति।

प्लम्बम एसेटिकम : हल्का उच्च–रक्तचाप, साथ में मन की भ्रामक स्थिति (dementia), गुर्दों की बीमारी से रक्ताघात (मूर्छा)। लड़खड़ाकर चलना (staggering gait)।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। तीक्ष्ण (Acute) रोगावस्थाओं में, उपचार के प्रारंभ में, प्रतिदिन 4–6 बार। सुधार (2–3 सप्ताह में) के बाद लंबे समय तक प्रतिदिन एक या दो बार लेते हुए उपचार जारी रखें। उपचार के दौरान नमक का प्रयोग बंद रखें तथा हालत में सुधार होने पर बहुत कम मात्रा में लेना चाहिए।

गलगंड (goiter) तथा अवटु विषाक्तता (thyreotoxicosis) की प्रव त्ति में : लगभग 4–6 सप्ताह तक दिन में एक बार 10–15 बूँद का उपचार जारी रखना चाहिए, और एक माह के अंतराल पर पुनः दोहराना चाहिए।

रक्ताघात (Apoplexy) में : प्रारंभ में लगातार खुराक लें, प्रत्येक 1–2 घंटे में 10–15 बूँदें, तत्पश्चात्, दिन में 4–6 बार 10–15 बूँदें लें।

टिप्पणी : साथ ही हृदय सम्बन्धी कमज़ोरी में प्रतिदिन R-12 और R-3 दोनों को बारी–बारी से 2–3 बार लें।

हृदय की माँसपेशियों के रोधगलितांश (myocardial Infarct) में R 67 तथा R 2 देखें।

हृदय के दर्द में (Angina pectoris) : R 2 के साथ बारी–बारी लें।

हृदय की अपर्याप्तताओं में : R 3 देखें

हृदय की क्षति आपूर्ति न होने की स्थिति में : R 58

सिर चकराने में : R 29 के साथ बारी–बारी से।

रूक–रूक कर लड़खड़ाती चाल, परिसरीय वाहिका सम्बन्धी विकार, आदि होने पर : R 63 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 13
Hemorrhoidal Drops
बवासीर के लिये

मूल-तत्व : ऐसक्युलस D 2,कौलिनसोनिया कैन D 4, ग्रेफाइट्स D 8, हैमामेलिस D 3, केलियम कार्बन D 6, लाइकोपोडियम D 5,पीयोनिया ऑफ D3, सल्फर D5, एसिड नाइट्रिक D6, नक्स वोम. D4.

लक्षण : बवासीर, खुजली, पीड़ा, रक्तस्राव, मलद्वार में फटन, मलद्वार की स्थानच्युति, मलद्वार सम्बन्धी एक्ज़िमा, अति रक्त प्रवाह।

क्रिया विधि : **एसिडम नाइट्रिकम :** आँतों में घोंपने का अहसास, काँटा चुभने जैसा दर्द, मलत्याग के दौरान संकुचन की अनुभूति, साथ में मलत्याग के बाद बनी रहने वाली पीड़ा।

ऐसक्युलस हिप० : गुदा से बाहर की ओर लटकते हुए बबासीरी मस्सों (गहरे लाल रंग के झूलते अर्श) की श्लैष्मिक झिल्ली का सूखापन तथा जलन। त्रिकास्थि (Sacral) भाग में हल्का–हल्का दर्द, शिरा सम्बन्धी स्थिरता।

कॉलिन्सोनिया कैन : गोणिका (Pelvis) में शिरा सम्बन्धी संकुलन, कब्जियत, पेट फूलना, खूनी बवासीर।

ग्रेफाइट्स : कब्ज़ियत, चिपचिपा पिंड जैसा मल, पेट फूलना, मंलद्वार सम्बन्धी एक्ज़िमा, खुजली।

हेमामेलिस : शिराओं का फूलना, बवासीर में से रक्तस्राव (Bleeding)।

कालियम कार्ब : पीठ दर्द, पेट–फूलना। कठोर मल, मलद्वार के मस्सों में जलन।

लाइकोपोडियम : अफारा, पेट फूलना, सुखे मल के साथ, अपूर्ण मलत्याग। रक्त जनित बवासीर साथ में गुदाभ्रंश तथा मलद्वार में ऐंठन। सामान्य रोगभ्रम (Hypochondria) तथा मंदाग्नि (dyspepsia), कब्ज़, पेट में रक्त का अधिक प्रवाह।

पीयोनिया : गीली बवासीर, पीड़ा–प्रद मलद्वार की फटन। बवासीर में खुजली और पीड़ा, साथ में रक्त स्राव की प्रव त्ति। गुदाद्वार की फटन (Rhagades or fissures)। मल त्याग के बाद बना रहने वाला दर्द।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सल्फर : बहुप्रयुक्त एवं प्रभावशाली औषधि, मलद्वार में लाली, खुजली, एक्ज़िमा, अस्वस्थ त्वचा।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँद। तीक्ष्ण पीड़ा होने पर, उपचार के प्रारंभ में, दिन में 4–6 बार 10–15 बूँदें। रोग के पूरी तरह समाप्त हो जाने पर, कुछ लंबे समय तक प्रतिदिन एक या दो बार 10–15 बूँदें देते हुए उपचार जारी रखें।

कब्ज़ होने पर, साथ ही साथ मलत्याग को नियमित करना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। अतएव, नाश्ते और रात के खाने में रेचक आहार (fiberous food) लेने चाहिए, जैसे : पके फल, अलसी, हरी मटर, rye ब्रेड, खमीर, दही आदि। मैदे की डबलरोटी, चॉकलेट, स्टार्च जैसे कब्ज़ करने वाले भोज्य पदार्थ न लें।

टिप्पणी : साथ ही लीवर सम्बन्धी तकलीफ में दिन में तीन बार भोजन के पूर्व R 7 का भी प्रयोग करें तथा दिन में दो बार भोजन के बाद R 13 10–15 बूँद लें।

शिरास्फीति तथा शिरापरक तकलीफों में : R 42 को भी अतिरिक्त औषधि के रूप में अथवा बारी–बारी से लें।

खूनी बवासीर के परिणाम स्वरूप होने वाली अल्परक्तता में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 31 का भी प्रयोग करें।

महिलाओं के त्रिकास्थि दर्द में : R 50 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 14
Nerve & Sleep drops
स्नायु और नींद के लिए

मूल-तत्व : अवेना सैटिवा D 1, अमोन. ब्रोमैट D 3, कैमोमिला D 4, एश्ककौल्झिया D 2, इग्नेशिया D 6, ह्यूमलस लुप D 2, पैसीफ्लोरा इंकार्न D 2, वैलेरियाना Ø, जिंकम वैल D 6, कॉफिया D4.

लक्षण : अनिद्रा तथा नींद में उत्पन्न होने वाले अनेक व्यवधान, उपरिस्थ (superficial) नींद, हल्की नींद, निद्रा का अभाव, सुबह के समय उनींदापन, सारे दिन बनी रहने वाली बैचेनी, शाम को जिन्दादिली। तंत्रिका सम्बन्धी व्यग्रता तथा तंत्रिका प्रणाली की अत्यधिक उत्तेजना। तंत्रिका–दौर्बल्य, लंबे समय तक बने रहने वाले मानसिक संघर्ष के परिणाम।

क्रिया विधि : बाधित नींद को नियमित करने में तथा तंत्रिका–दौर्बल्य सम्बन्धी लक्षणों में अनुकूल प्रभाव डालती है।

अमोनियम ब्रोमैटम : शांति देने वाली औषधि (Sedative)।

अवेना सैटिवा : सामान्य तंत्रिका सम्बन्धी दुर्बलता तथा मैथुन सम्बन्धी तंत्रिका–दौर्बल्य, अतिशय मानसिक श्रम करने के दुष्परिणाम। रोगनिव त्ति के बाद पुनःस्वास्थ्य लाभ के लिए। सुस्ती के बावजूद नींद का अभाव।

कैमोमिला : अत्यधिक संवेदनशीलता के साथ अति उत्तेजित तंत्रिका प्रणाली में प्रभावशाली क्रिया करने वाली औषधि। मुश्किल से नींद आना।

एश्कौल्झिया : शामक अथवा शांति देने वाली औषधि।

ह्यूमलस : सामान्य तंत्रिका सम्बन्धी थकान, तंत्रिका–दौर्बल्य, रोग भ्रम (Hypochondria), शामक या शांति देने वाला।

इग्नेशिया : तंत्रिका सम्बन्धी अति थकान तथा चिड़चिड़ापन जिनकी उत्पत्ति दुःख या चिंता के तत्पश्चात अवसादकारी प्रकृति के मानसिक रोगों जैसे कि निकट सम्बन्धी के खो जाने पर, निराशा और अवसाद की स्थिति के परिणामस्वरूप होती है, अहं–केन्द्रित अकेलापन।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पैसिफ्लोरा इंकार्नाटा : शामक या शांतिदायक। तंत्रिका प्रणाली की बैचेनी तथा चिड़चिड़ापन। मानसिक और शारीरिक जिन्दादिली सोने की कोशिश करते समय विचारों की अधिकता; अशांत, ताज़गी न देने वाली नींद।

वैलेरियाना : हल्की नींद, ताज़गी न देने वाली। तंत्रिका सम्बन्धी दुर्बलता तथा व्यग्रता।

ज़िंकम वैल : अनिद्रा, साथ में हाथ–पैरों में ऐंठन, डरावने स्वप्न, टाँगों में व्यग्रता।

खुराक की मात्रा: तंत्रिका सम्बन्धी चरम थकान और अनिद्रा में, दिन में 3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँद, और रात में थोड़े मीठे पानी में 20 बूँदें। अधिकांश स्थिति में कुछ दिनों के भीतर सामान्य आराम मिलता है और नींद आने में कम परेशानी होती है। तदुपरांत, प्रतिदिन एक या दो बार 10–15 बूँदें पर्याप्त होनी चाहिए। हालाँकि, विभिन्न लोगों पर R 14 के भिन्न–भिन्न प्रभाव पड़ते हैं। दवा के प्रति संवेदनशील रोगियों को अक्सर रोग के बढ़–जाने का अनुभव होता है, मुख्य रूप से अनिद्रा का। ऐसी स्थितियों में, खुराक तुरंत कम करके दिन में तीन बार 5 बूँद तक लें। कभी इससे भी कम लें, यहाँ तक कि पूरे दिन में केवल एक ही बार लें (किंतु शाम को न लें)।

खुराक व्यक्ति विशेष के आधार पर होनी चाहिए। कुछ स्थितियों में कुछ भी प्रभाव प्राप्त करने के लिए 20–30 बूँद दिन में 3 बार लेनी चाहिए। हालाँकि, खुराक बढ़ाने के पहले बेहतर होगा, यदि कुछ दिनों तक दवा के प्रभाव का निरीक्षण करें।

नियमित उपचार लंबे समय तक जारी रखना चाहिए, यहाँ तक कि पूर्णतः स्वस्थ हो ज़ाने के बाद शाम को 10–15 बूँद ले सकते हैं।

टिप्पणी : सामान्य तंत्रिका सम्बन्धी थकान में, Vita–C 15 का साथ में प्रयोग करने से श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग–वीटा–C 15
Nerve tonic
शांतिदायक

मूल-तत्व : एसिडम फॉस्फोरिकम D 3, साइट्रस मेडिका लिमोनम D 1, कोकुलस D 5, हेलोनियस डॉयका D 5, सीपिया D 5, जिंकम मेटालिकम D 6, सैक्रम, कोरिजेंशिया, इग्नेशिया D 5.

लक्षण : तंत्रिका सम्बन्धी थकान की स्थिति, तंत्रिका सम्बन्धी दुर्बलता, बेचैनी और उदासीन व त्ति (Weariness), मानसिक संघर्ष अथवा तनाव के बाद अनिद्रा, स्नायविक सिरदर्द, सहज ही थकान हो जाना, सामान्य तंत्रिका–दौर्बल्य, शक्ति का अभाव, ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थता।

क्रिया विधि : सामान्य शारीरिक शक्ति वर्द्धक।

एसिड फॉस्फोरिकम : शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता, पीठ तथा त्रिकास्थि क्षेत्र की दुर्बलता, मानसिक कार्य करने में असमर्थता। दुःखों और चिंताओं के दुष्परिणाम। तटस्थता तथा निरुत्साही होना। दिन में उनींदापन, बातचीत न करने की इच्छा। स्वप्नदोष, नपुंसकता।

साइट्रस मेडिका लिमोनम : रक्त और रक्तसंचरण पर प्रभावी क्रिया करती है। बेहोशी। दुर्बल नाड़ी।

कोकुलस : शारीरिक दुर्बलता, थकान, चिड़चिड़ापन, अवसाद की स्थिति, अनिद्रा, गर्दन की माँसपेशियों की दुर्बलता, साथ में सिर में भारीपन की अनुभूति अथवा चक्कर आना।

हेलोनियास : थकान और अत्यधिक परिश्रम (विशेषकर महिलाओं में), साथ में गर्भाशय सम्बन्धी तकलीफें। तंत्रिका सम्बन्धी चिड़चिड़ापन, निराशा, अकेलेपन की इच्छा।

सीपिया : उदासी, चिड़चिड़ापन तथा बदलते मनोभाव। कर्तव्य के प्रति तटस्थता, विशेषकर रजोनिव त्ति (Menopause) से गुजर रही महिलाओं के लिए।

ज़िंकम मेट : अत्यधिक तंत्रिका सम्बन्धी थकान, टाँगों में बेचैनी, तंत्रिका प्रणाली का चिड़चिड़ापन, मितभाषिता (taciturnity),

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुस्त मानसिक विचार, क्षीण स्म ति। कशेरुका के आसपास जलन तथा दुर्बलता, अंगों में चुभन तथा चेतना शून्यता।

खुराक की मात्रा: उपचार के प्रारंभ में प्रतिदिन तीन बार 1 छोटे चम्मच (5 ml) से 3 बड़े चम्मच (30 ml) तक लें। सुधार शुरू होने पर, यही खुराक प्रतिदिन लें, अन्ततः शाम को ही।

टिप्पणी : नींद में व्यवधान होने पर : R-14 देखें, जिसका प्रयोग अतिरिक्त औषधि के रूप में हो सकता है।

मेनोपॉज़ के दौरान : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 10 का भी प्रयोग करें।

अंतःस्रावी (endocrine) ग्रंथियों सम्बन्धी व्यवधान होने पर : R 19 (पुरुष सम्बन्धी) अथवा R 20 (स्त्री सम्बन्धी) देखें।

अल्परक्तचाप में : R 44 देखें।

नपुंसकता में : R 41 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विटा–C 15 फार्ट डॉ० रेकवेग
Tonic
स्नायु बलवर्धक औषधि

मूल-तत्व : एसिडम फॉस D 3, साइट्रस मेडिका लिमोनम D 1, कोकुलस D 5, जिनसेंग D 1, हेलोनियास डॉयका D 5, सीपिया D 6, जिंकम मेटालिकम D 6, सैक्रम, कोर्रीजेंशिया, इग्नेशिया D 5.

लक्षण : तंत्रिका सम्बन्धी थकान, तंत्रिका सम्बन्धी सिरदर्द, अनिद्रा, सामान्य तंत्रिका–दौर्बल्य, अन्दरूनी प्रतिरोधक बल को शक्ति देने वाली, अत्यधिक परिश्रम करना, निराशा, ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थेता, शक्ति का अभाव, नपुंसकता, वसंत ऋतु के दौरान होने वाली थकान, रोगनिव त्ति के बाद स्वास्थ्य लाभ के लिए।

क्रिया विधि : सामान्य शारीरिक शक्तिवर्द्धक औषधि। थकान की अनुभूति कम होती चली जाती है, तथा काम के प्रति शक्ति की वापसी।

एसिड फॉस : शारीरिक और मानसिक दुर्बलता, पीठ और त्रिकास्थि की कमजोरी, मानसिक कार्य करने में असमर्थता। दु:खों और चिंताओं के दुष्परिणाम। तटस्थता तथा निरुत्साही होना। दिन में उनींदापन, बातचीत न करने की इच्छा। स्वप्नदोष, नपुंसकता।

साइट्रस मेडिका लिमोनम : रक्त और रक्तसंचार पर प्रभावी क्रिया करती है। बेहोशी। दुर्बल नाड़ी।

कोकुलस : शारीरिक दुर्बलता, थकान, चिड़चिड़ापन, अवसाद की स्थिति, अनिद्रा, ग्रीवाप ष्ठ की मांसपेशियों की दुर्बलता, साथ में सिर में भारीपन की अनुभूति।

जिनसेंग : तंत्रिका सम्बन्धी थकान, थकान के साथ कमर में कमज़ोरी, सोचने में कठिनाई, मैथुन सम्बन्धी दुर्बलता।

हेलोनियास : थकान एवं अत्यधिक परिश्रम (विशेषकर महिलाओं में) साथ में गर्भाशय सम्बन्धी तकलीफें। तंत्रिका सम्बन्धी चिड़चिड़ापन, अवसाद, अकेलेपन की इच्छा।

सीपिया : उदासी, चिड़चिड़ापन तथा बदलते मनोभाव (Moody)। कर्तव्य के प्रति तटस्थता, विशेषकर रजोनिव त्ति (Menopause) से गुज़र रही महिलाओं के लिए।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़िंकम मेट : तंत्रिका सम्बन्धी अत्यधिक थकान, टाँगों में व्यग्रता, तंत्रिका प्रणाली का क्षोभ, मितभाषिता (taciturnity), सुस्त मानसिक विचार, क्षीण स्म ति। कशेरुका के आसपास जलन तथा दुर्बलता, अंगों में चुभन तथा चेतनाशून्यता।

खुराक की मात्राः हमारा अनुमोदन है कि प्रत्येक बार थकान की स्थितियों का अनुमान होने पर वीटा–सी 15 फोर्ट पहले ले लें। तंत्रिका तंत्र में विशिष्ट शक्ति–व द्धि प्राप्त करने के लिए, हमारा सुझाव है, कि 6 दिनों के लिए प्रतिदिन दो बार (सुबह और शाम) इसे लें, तथा लगभग तीन सप्ताह तक प्रतिदिन एक खुराक जारी रखें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 16
Migraine & Neuralgia drops
आधे सिर का दर्द और स्नायु रोगों के लिए

मूल-तत्व : सिमिसिफ्यूगा D 4, जेल्सेमियम D 3, आयरिस D 2, सैंग्यूनेरिया D 3, स्पाइजेलिया D 4.

लक्षण : आधे सिर (सीसी) का दर्द (Migraine), तंत्रिका सम्बन्धी सिरदर्द, सिर की नाड़ियों में दर्द, नगण्य ठंड के कारण लगातार होने वाले सिरदर्द से अस्वस्थता।

क्रिया विधि : **सिमिसिफ्यूगा :** नाड़ियों में तेज दर्द (neuralgia) जो अंडाशय सम्बन्धी विकारों के अथवा अनियमित मासिक चक्र परिणामस्वरूप लक्षणों के रूप में होता है। ऊर्ध्वाक्षिक अथवा नेत्रों के ऊपरी भाग में (Supraobital) पीड़ा, सिर के शीर्ष पर ताप की अनुभूति।

जेलसेमियम : सिर में (Cerebral) रक्त संकुलन, सन्निपात की अनुभूति, रोशनी से अरुचि, आँखों के ठीक ऊपर दर्द।

आयरिस वरसिक : निश्चित समय पर होने वाला आधाशीशी का दर्द, तेज़ सिरदर्द जिसके कारण अक्सर अल्पकालिक अंधेरा छा जाता हो। सिरदर्द की चरम स्थिति में उल्टी (कड़ुवी)।

सैंग्यूनेरिया : तंत्रिका सम्बन्धी चिड़चिड़ापन, सिर दर्द, बारी–बारी से ताप और कँपकँपी, शोर और रोशनी के प्रति असहनशीलता, लेटने पर आराम।

स्पाइजेलिया : एकतरफा सिरदर्द, सूर्य के साथ शुरू और कम होने वाला। ह्रदय रोग की आशंका।

खुराक की मात्रा: सिरदर्द की तीक्ष्णता के अनुसार थोड़े पानी में 10–15 बूँदे दिन में 3–6 बार। सुधार के बाद भी, 2–3 दिन तक प्रतिदिन तीन बार 10 बूँदें लें।

टिप्पणी : इंफ्लुएंजा में : R 6 का भी प्रयोग करें।

सिर की नाड़ियों और साइनस प्रदाह में R 1 की 10–15 बूँदे थोड़े पानी में प्रतिदिन 3–6 बार लें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धमनियों की कठोरता (Arteriosclerosis), मस्तिष्क (cerebral) व नेत्रों के श्वेत पटलीय (sclerotic) शिकायतों तथा उच्चरक्त चाप में R 12 देखें।

आमवाती नाड़ीशूल सम्बन्धी, कपाल सम्बन्धी तकलीफों में : R 11 देखें।

साइनस के प्रदाह में : R 49 तथा R 1 देखें।

त्रिधारीय तथा चेहरे की नाड़ियों के दर्द में : R 70 देखें।

उपर्युक्त सभी दवाओं का प्रयोग R 16 के साथ किया जा सकता है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 17
Tumour Drops
गांठो (Tumour) के लिए

मूल-तत्व : नाजा ट्राइपूडियन्स D6, स्क्रोफुलेरिया नोड D 2, ऐसिड लेक्टिकम D 4.

लक्षण : सभी प्रकार की गाँठें या रसौली, घातक कैंसरमय व साध्य रसौली। रुग्ण ऊतकों को पुनः जीवित करने वाला (तपेदिक सम्बन्धी व्रण)।

बाह्य एवं आंतरिक अंगों को प्रभावित करती उत्पत्तियाँ (growth) तथा एक्ज़िमा। ज्वलनशील तथा उष्ण दाने। विषम उपकलापरक उत्पत्तियाँ (Anomalous epithelial growths), परत तथा मस्से बनना।

क्रिया विधि : नाजा ट्राइ : रुग्ण ऊतकों का पुनर्जीवक, कैंसर जनक संव द्धियों को दबाता है, शरीर की जैविक सुरक्षात्मक शक्तियों को बढ़ाता है। व्रण तथा खुरण्ड के कारण आई त्वचा की सूजन, धीरे–धीरे पीब बनना, पीब का पतला होना तथा कम मात्रा में बनना। सीरमी त्वचा, माँसपेशियों तथा श्लेष्मिक झिल्लियों के रोग। व्रण में आसपास की त्वचा सूज जाती है, साथ ही धीरे–धीरे पस बनता है।

स्क्रोफुलेरिया : कैंसरमय व्रण, ग्रंथियों में कैंसर प्रक ति की सूजन, रुग्ण ऊतकों का पुनर्जीवक। वक्ष में होने वाली घातक तथा साध्य गाँठों की उत्पत्ति जो धीरे–धीरे व्रण में विकसित हो जाये। कैंसर की प्रव त्ति वाले उदर–व्रण। पेशी तत्व से निर्मित (Myomae), गर्भाशय का कैंसरमय, उपकलापरक तथा कठोर ग्रंथि वाला व्रण।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन तीन बार भोजन से पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। यदि कैंसर (malignancy) का संदेह हो, तो प्रतिदिन चार बार थोड़े पानी में 20 बूँदें लें। सुधार शुरू होने पर ही धीरे–धीरे खुराक कम करें और कई महीनों तक उपचार जारी रखें।

टिप्पणी : कैंसर के उपचार में इस औषधि को पूरक औषधि के रूप में माना जा सकता है। बेहतर होगा, कि ऑपरेशन के बाद अथवा विकिरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपचार के बाद R 17 का प्रयोग करें, क्योंकि ऐसा पाया गया है कि इसके सेवन से रोगी की हालत में सर्वांगीण सुधार होता है।

कैंसर के अंतिम चरणों में होने वाले तीव्र दर्द में R 17 के प्रयोग से लगातार आराम मिलता है।

स्त्री–गोणिक अंगों सम्बन्धी रुग्णता में : R 38 (दाहिनी ओर) अथवा R 39 (बायीं ओर) का प्रयोग करें।

अल्परक्तता में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 31 का भी प्रयोग करें।

प्रोस्टेट सम्बन्धी रोगों में : R 25 देखें।

यकृत (lever) की क्रिया बढ़ाने के लिए : प्रतिदिन एक बार 10–15 बूँद R 7 भी लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 18
Kidney & Bladder Drops
गुर्दे और पेशाब की थैली के लिए

मूल-तत्व : बर्बेरिस D 4, कैंथरिस D 4, डल्कामारा D 4, इक्वीसेटम हेम D 6, यूपेटोरियम पर्प D 3.

लक्षण : गुर्दों का प्रदाह, त्रिकास्थि में पीड़ा, उदरावरण शोथ (peritonitis), गर्भाशय का प्रदाह (metritis), मूत्राशय में चुभने वाला दर्द, मूत्राशय में जलन, मूत्रत्याग के समय ज्वलनशील पीड़ा, पीला पेशाब, मिट्टी जैसा।

क्रिया विधि : **बर्बेरिस :** व क्कीय क्षेत्र में चुभने वाला दर्द जो दबाव से बढ़े, त्रिकास्थि भाग में दर्द, पीठ में अकड़न तथा सुन्नपन, त्वचा के भीतर पानी का प्रवाह होने की अनुभूति।

कैंथरिस : व क्क भाग में धीमा–धीमा दर्द, मूत्रत्याग के समय जलन के साथ दर्द, बार–बार मूत्रत्याग की इच्छा, बूँद–बूँद मूत्रत्याग, जो लालिमायुक्त, चिपचिपा, रक्तयुक्त हो। मूत्राशय का प्रदाह।

इक्वीसेटम हेम : इसमें साइलिसिक अम्ल होने के कारण गुर्दों और मूत्राशय पर कैंथरिस जैसी ही प्रभावशाली क्रिया करती है। मूत्राशय की ऐंठन तथा रक्तयुक्त पेशाब को कम करती है। नींद में पेशाब कर देना (enuresis), मूत्राशय में उत्तेजना (irritation) (मुख्यतः महिलाओं में), पेशाब में एल्बूमिन (सफेदी) तथा रक्त। यूरिक अम्ल (मूत्रत्याग के दौरान दर्द करने वाले) को नष्ट करती है।

यूपेटोरियम पर्प : मूत्राशय की उत्तेजना (irritation) में विशेष उपयोगी। मूत्रत्याग की लगातार इच्छा, पीड़ाप्रद, प्रचुर मूत्र अथवा मूत्र का सर्वथा अभाव, रंगीन, चिपचिपा मूत्र।

डल्कामारा : मूत्राशय में उत्तेजना (irritation), मूत्रत्याग की लगातार तथा पीड़ायुक्त इच्छा। मूत्रत्याग के दौरान प्रचुर मूत्र अथवा सर्वथा अभाव, जो रंगीन, चिपचिपा होता है। मूत्राशय की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पक्षाघात स्थिति (Paralyzed) होना, नम मौसम में तकलीफ बढ़ना। मूत्राशय की श्लेष्मिक झिल्ली पर विशिष्ट प्रभाव। पेशाब में दुर्गंध।

खुराक की मात्राः तीक्ष्ण मूत्राशयशोथ (acute cystitis) में तथा मूत्राशय–व क गोणिका प्रदाह (acute cystopylitis) में, प्रारंभ में प्रत्येक घंटे थोड़े पानी में 10 बूँदें लें; तदुपरांत, प्रत्येक दो घंटे पर लें। जैसे ही सुधार आरंभ हो, दिन में 3–4 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें।

पुराने मूत्राशयशोथ (Cystitis), मूत्राशय–व क्क–गोणिका प्रदाह (Cysto-pyelitis) में तथा जीवाणुमेह (bacteriuria) में : प्रतिदिन भोजन के पूर्व 2–3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें, जब तक कि लक्षण पूरी तरह गायब नहीं होते।

मूत्राशय में जलन होने परः प्रतिदिन एक या दो बार पानी में 10–15 बूँद लें।

टिप्पणी : गुर्दे की पथरी (Nephrolithiasis) में अतिरिक्त औषधि के रूप में R 27 की 10–15 बूँद दिन में दो बार दें।

प्रोस्टेट ग्रंथि के प्रदाह में : R 25 के साथ R 18 बारी–बारी से दें।

पेशाब में प्रोटीन जाना (Albuminuria), व क्कशोथ, तथा पुराने व क्क प्रदाह में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 64 भी दें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 19
Glandular drops for Men
पुरुषों के ग्रंथि रोगों के लिए

डॉ० रेकवेग R 20
Glandular drops for Women
स्त्रियों के ग्रंथि रोगों के लिए

मूल-तत्व : ग्लैंडुले थायमी D 12 थायरियोडीनम D 12, हाइपोफाइसिस D 12, पैंक्रियाज़ D 12, ग्लैंडुले सुप्रारेनेल्स D 12, टेस्टीज़ D 12 (ओवेरिया D 12–R 20 में)।

लक्षण : अंतःस्रावी ग्रंथियों के (Endocrine) क्रियागत विकार, विकास में व्यवधान, पियूषिका ग्रंथि (Pituitary) की दोषपूर्ण क्रिया के कारण मोटापा, अन्यथा कम वज़न, गलगण्ड (goitre), नेत्रोत्सेधी गलगण्ड रोग (Grave's disease), विनाशक अरक्तता रोग (Addison's disease), थायरॉयड ग्रंथि की क्रिया का अपूर्ण या पूर्णतः कम होने की प्रक्रिया (myxoedema) आदि।

क्रिया विधि : ग्लैंडुले सुप्रा० : कमजोरी, वज़न कम होना, माँसपेशियों की कमजोरी। एलर्जी सम्बन्धी स्थिति, दमा, खून में शर्करा की कमी (Hypoglycemia), उच्च रक्तचाप अथवा निम्न रक्तचाप।

हाइपोफाइसिस : हार्मोन सम्बन्धी प्रणाली के लिए अनिवार्य तत्व। आंतरिक स्राव को, रक्त में लैक्टिक एसिड की मात्रा को, धातु निर्माण को तथा शरीर के द्रवों को नियंत्रित करता है, मूत्र वर्द्धन को कम करने वाले प्रभाव (antidiuretic effect)।

पैंक्रियाज़ : पाचन रस थैली सम्बन्धी मधुमेह या डायबिटीज (Pancreatic diabetes)। पाचक स्रावों के उत्पाद को बढ़ाता है।

टेस्टीज़ (पुरुष) अथवा ओवेरिया (स्त्री) : बुढ़ापे की कमज़ोरी, कम होती जननक्षमता, त्रुटिपरक स्म ति, अवसाद, ग्रंथियों के क्रियात्मक दोष, हीन भावना, गुप्तव ष्णताः (crypto-chidism), रात में नींद में पेशाब निकल जाना, नपुंसकता (impotency)।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्त्रियों में काम शीतलता, समलिंगकामिता की प्रव त्ति, शुक्राणुओं की अल्पता एवं पूर्ण अभाव, त्रुटिपूर्ण रक्तसंचरण, रक्त संकुलता।

पीयूषिका (Hypophysis) ग्रंथि की अतिक्रियाशीलता को हल्का करती है।

ग्लैंडुले थायमी : थकान, दिमागी एवं शारीरिक तथा अन्य ऊतक सम्बन्धी उग्र कमियाँ (mongolism)।

थायरॉयडिनम : थायरॉयड ग्रंथि का नियमन। थायरॉयड का बाधित विकास। थायरॉयड ग्रंथि की क्रिया का अपूर्ण या पूर्णतः कम होने की प्रक्रिया (myxoedema), अल्पताप, रक्त में कॉलेस्ट्राल की मात्रा का अत्यधिक बढ़ जाना, बौद्धिक विकास रुक जाना, शारीरिक स्रावों के निकास में सहायक।

खुराक की मात्राः सामान्यतः थोड़े पानी में 10–15 बूँदें, दिन में 3 बार।

टिप्पणी : सभी घटक औषधियों को भ्रूण ऊतकों से आंशिक रूप में प्राप्त किया गया है तथा शक्तिकरण किया गया है। शक्तिकरण की प्रक्रिया में (Arndt-schulz सिद्धांत के आधार पर) तलक्षेत्र बढ़ जाता है तथा परिणामस्वरूप उसके प्राक तिक अवस्था की तुलना में शक्तिक त औषधि की क्रिया विपरीत होती है। इस प्रकार अन्तःस्रावी (endocrine) क्रिया के विकार को प्रभावित करना संभव हो जाता है, जिसका अन्यथा उपचार अत्यधिक कठिन होता है।

दुर्बलता वाले रोग के बाद जैवीय शक्ति की पुनर्सक्रियता बढ़ाने के लिए : R 26 देखें।

मोटापे में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 59 का प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 21
Reconstituant drops
पुनः निर्माणक ड्रॉप्स
(रक्त एवं त्वचा विकारों के लिए)

मूल-तत्व : थूजा D 30, सोरिनग D 30, मेडोर्हीनम D 30, वैक्सीनिनम D 30.

लक्षण : पुराना एक्ज़िमा, त्वचा–रोग जो प्रचलित उपचार पद्धति से ठीक न हो रहा हो। त्वचा रोग से सम्बन्धित स्थितियों में संरचनात्मक सुधार। प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए।

क्रिया विधि : **मेडोर्हीनम :** त्वचा की फैलती हुई खुजली जो शाम को बढ़ जाती है। ताँबे जैसे लाल रंग के धब्बों के साथ लालिमा, जो कभी–कभी कत्थई रंग में बदल जाते हैं, मस्से। दबे हुए सूज़ाक (gonorrhoea) का परिणाम।

सोरिनम : लसिका तथा ग्रंथि प्रणाली को प्रभावित करती है। फफोले, गांठें तथा फुंसियाँ। सामान्य कमज़ोरी, दुर्गंधपूर्ण स्राव।

थूजा : पीड़ा युक्त तथा अतिसंवेदनशील त्वचा, छूने से और बढ़ने वाली, साथ में चींटियां रेंगने की अनुभूति (formication), खुजली और जलन। गीला एक्ज़िमा, विशेषकर खोपड़ी, तथा चेहरे पर, मस्से।

वैक्सीनिनम : चेचक के टीके के प्रभाव, लगातार बनी रहने वाले त्वचा की फुंसियां, तंत्रिकाशूल तथा सामान्य विकृति।

खुराक की मात्रा: सामान्यता, लंबे समय तक, भोजन के पूर्व प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें।

टिप्पणी : **एक्ज़िमा में :** R-23 लें, बार–बार तकलीफ होने की प्रव त्ति में R-21 की 10–15 बूँद प्रतिदिन 1–2 बार साथ में लें। रोग में प्रत्यक्ष सुधार होने पर खुराक कम करके कुछ समय तक दिन में एक बार लें।

रोग प्रतिरोधक प्रतिक्रिया को बढ़ाने के लिए तथा प्रतिक्रियात्मकता सुधारने के लिए R 26 का प्रयोग करें।

अपरस अथवा विचर्चिका (Psoriasis) में : R 65 देखें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 22

Drops for nervous disorders

स्नायु दोष निवारक ड्रॉप्स

(हृदय की शूलग्रस्त अवस्था)

मूल-तत्व : ग्रिंडेलिया रॉब D 4, लैकेसिस D 12, नाजा–ट्राईपुड D 12.

लक्षण : तंत्रिका सम्बन्धी व्यवधान, छाती में भारीपन की अनुभूति तथा घुटन, पेट फूलने के बाद भी। हृदय की दर्द (Anginous) सम्बन्धी स्थिति।

क्रिया विधि : **नाजा ट्राई :** हृदय की दर्द (Anginous) सम्बन्धी स्थिति के कारण मस्तिष्क और कनपटियों में दुखन। हृदय की तेज़ धड़कन, छाती में भारीपन की अनुभूति, सामान्य बेचैनी। स्नायविक खाँसी के कारण हृदय की दुर्बलता तथा चिड़चिड़ापन, उग्र अवस्था।

ग्रिंडेलिया रॉब : ऐसा अनुभव होता है मानो छाती की कोटर (cavity) के अनुपात में हृदय बहुत बड़ा है, हृदय तथा फेफड़ों की कमज़ोरी, बिस्तर में घुटन की अनुभूति।

लैकेसिस : घबराहट, आध्यात्मिक विद्वेष (Spiritual animosity), सिरदर्द विशेषकर बाँयी आँख के ऊपर, घुटन की अनुभूति के साथ धड़कन बढ़ना, रात को सोते समय और गर्मी से तकलीफ बढ़ना।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः लंबे समय तक भोजन के पूर्व प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें।

टिप्पणी : हृत्पेशियों (Myocardial) की अपर्याप्तता और हृत्पेशियों (Myocardial) के अपजनन में R 3 देखें। इसे R 22 के साथ अतिरिक्त औषधि के रूप में दे सकते हैं।

हृदय–शूल (Angina-Pectoris) में : R 2

क्षति–आपूर्ति न होने की स्थिति में : R 58

हृत्पेशीय रोधगलितांश (Myocardial infarct) में : R 67 तथा R 55

हृदय की गति सम्बन्धी विकार में : R 66

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 23
Eczema drops
एक्ज़िमा के लिए

मूल-तत्व : आर्सेनिकम एल्बम D30, एपिस मेलिफिका D30, रसटॉक्स D 30, सल्फर D 30.

लक्षण : नया एवं पुराना एक्ज़िमा, मुँहासे, दाद (Herpes), दाने, खुरण्ड अथवा पपड़ियां बनना।

क्रिया विधि : **एपिस मेलिफिका :** जलीय शोथ सम्बन्धी तथा विसर्पीय परिसीमित सूजन, सीरमी परत का चाकू घोंप दिये जाने जैसा प्रदाह, खुजलीयुक्त चर्म रोग।

आर्सेनिकम एल्बम : पपड़ियां बनने के साथ त्वचा का सूखापन, एक्ज़िमा के साथ फफोले बनना जो बाद में फुँसियों और पपड़ियों के रूप में बदल जाते हैं। रूसी, खोपड़ी पर मोटी परतदार एक्ज़िमा, साथ में बदबूदार पीब।

रस टॉक्स : विसर्पीय त्वचा, लालिमा युक्त फफोले बनना। त्वचा पर लाल–लाल दाने (Erythema) जो तेज़ी से फफोलों में बदल जाते हैं, जिसके साथ अक्सर जलीयशोथ, मवाद और खुरण्ड होते हैं। एक्ज़िमा के आसपास की त्वचा लाल और ज्वलनशील (Inflammed) होती है।

खुराक की मात्रा: लंबे समय तक सुबह और शाम थोड़े पानी में 10–15 बूँदे।

टिप्पणी : पुराने एक्ज़िमा में R 21 की 10–15 बूँदे प्रतिदिन साथ में लेने से संरचनात्मक सुधार किए जा सकते हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अतिरिक्त औषधि के रूप में R 26

परिसर्पीय दाद (herpes zoster) में : R 68 देखें

विचर्चिका अथवा अपरस (Psoriasis) में : R 65 देखें

नवजात शिशु की चेहरे पर तथा खोपड़ी में परत (craddle cap) : R 34 से तुलना करें।

खसरे में : R 62 देखें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 24

Pleurisy, intercostal neuralgia

फेंफड़े की झिल्ली का प्रदाह, पसलियों की अन्दरूनी नाड़ियों में दर्द

मूल-तत्व : सिमिसिफ्यूगा D6, कोलोसिंथिस D8, कालीकार्ब D6, नैट्रम सल्फ्यूरिक D6, रैनुनकुलस बल्बोस D 4, ब्रायोनिया D 4.

लक्षण : फेफड़ों की झिल्ली कां प्रदाह, सीरमी झिल्लियों के प्रदाह के साथ डंक लगने जैसा दर्द। उपांत्र का प्रदाह (Appendicitis), अंडाशय का प्रदाह, उदरावरण का प्रदाह, हृदयावरण का प्रदाह आदि, तीक्ष्ण संधिशोथ (Arthritis) तथा बहु–संधिशोथ (Poly arthritis)।

क्रिया विधि : **सिमिसिफ्यूगा :** फुफ्फुसावरक झिल्ली में दर्द (Pleurodynia), विशेषकर दाहिनी ओर के फेंफड़े में मुख्यतः अत्यन्त अधीर महिलाओं में (in oversensitive women)।

कोलोसिंथिस : तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करता है, जहाँ फेफड़ों की झिल्ली के प्रदाह (Pleurisy) में इसकी प्रभावशाली क्रिया होती है।

काली-कार्ब : फुफ्फुसावरक झिल्ली में दर्द, छाती में चुभन चाहे गति करे या न करे, मुख्य रूप से दोपहर में रोगव द्धि। निमोनिया, जब प्रचुर पीब हो तथा आवाज के साथ बलगम निकले। फुफ्फुसीय–ऊतकों पर क्रिया करती है, पसीना निकलने के बाद निमोनिया होना। रिसाव के साथ फेफड़ों की झिल्ली में प्रदाह (Pleurisy), फुफ्फुसावरणीय–निमोनिया।

नेट्रम सल्फ्यूरिक : उद्जनात्मक अथवा जलबहुल (hydrogenoid) शारीरिक संरचना में प्रमुख दवा; नम मौसम या नम वातावरण में, बाँयी ओर की 9वीं और 10वीं पसली (Ribs) के क्षेत्र में दर्द बढ़ जाता है। छाती की सर्दी।

रैनुनकुलस बल्ब : पसलियों के अन्दरूनी भागों का आमवात (Rheumatism)। छाती में तेज़ दर्द, जो साँस लेने पर, दबाव तथा तापमान में परिवर्तन होने पर बढ़ जाता है, घुटन।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्राः सामान्यतः प्रतिदिन भोजन के पूर्व 4–6 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। सुधार होने पर खुराक कम करके प्रतिदिन 3 बार 10 बूँदें लें तथा पूरी तरह स्वस्थ होने तक इस उपचार को लंबे समय तक जारी रखें।

टिप्पणी : यदि इंफ्लुएंज़ा पहले हुआ हो : प्रतिदिन 2–3 बार अतिरिक्त औषधि के रूप में R 6 भी साथ में दें।

यदि गलप्रदाह (Quinsy) पहले हुआ हो : दिन में एक या दो बार 10–15 बूँद R-1 भी साथ में दें।

ब्रोंकायटिस तथा काली–खाँसी में: जटसिन ड्रॉप्स R 9 तथा जटसिन सिरप R 8 से तुलना करें।

ब्रोंकायटिस सम्बन्धी सर्दी में : R 48 देखें।

पुराने तपेदिक सम्बन्धी ब्रोंकायटिस में : R 57 देखें।

अंडाशयशोथ में: R 1 के साथ बारी–बारी से लें, साथ ही, R 38 एवं क्रमशः R 39 से तुलना करें।

तीक्ष्ण उपांत्र के प्रदाह (appendicitis) में जब तक सर्जरी अनिवार्य न हो जाये : R 24 के साथ R-38 बारी–बारी से, प्रत्येक 1–2 घंटे पर 10–15 बूँदें दें।

पुराने, बार–बार होने वाले उपांत्र के प्रदाह (Appendicitis) में : R 1, R 24, तथा R 38 की 10–15 बूँदे प्रतिदिन एक बार दें।

तीक्ष्ण जोड़ों का प्रदाह (Arthritis) या अनेक जोड़ों के प्रदाह में : प्रत्येक 1–2 घंटे के बाद R 24 के साथ बारी–बारी से R 1 भी दें, प्रारंभ में आधे–आधे घंटे पर भी दे सकते हैं।

पसलियों के अन्दरूनी भागों के तंत्रिका–शूल में : R 24 के साथ बारी–बारी से R 69 भी दें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 25

Prostatitis

प्रोस्टेट ग्रंथि प्रदाह के लिये

मूल-तत्व : चिमाफिला अंबेलैट D 3, क्लेमैटिस D 3, कोनियम D 5, फेरम पिक्रिन D 4, परेरा ब्रावा D 2, पॉपुलस ट्रेम्यूल D 3, पल्सेटिला D 3, सैबल सेरूल D 2.

लक्षण : प्रोस्टेट ग्रंथि का नया एवं पुराना प्रदाह तथा इसके फलस्वरूप होने वाली व्याधियां।

क्रिया विधि : **चिमाफिला अंबेलैट :** मूत्रत्याग के दौरान तेज़ पीड़ा, रात में बार–बार मूत्र त्याग की आवश्यकता, मूत्राशय से मूत्रनली के छोर तक दौड़ता हुआ दर्द, मूत्राशय की पथरी।

क्लेमैटिस : ज्वलनशील सिकुड़न, चिपचिपा मूत्र किंतु बिना पीब के। रुक–रुक कर मूत्रत्याग। लंबे समय तक इंतज़ार, जब तक कि आखिरी निस्सारण बूँदों के रूप में ज्वलनशील पीड़ा के साथ आता है, तदुपरांत, पीड़ा रहित मूत्र बहाव होता है। सूज़ाक, व षणों का प्रदाह (orchitis)।

कोनियम : प्रोस्टेट का बढ़ना, रुक–रुक कर बारबार पेशाब आना, पक्षाघाती (Paralytic) कमज़ोरी, कमज़ोर मूत्र–स्राव।

फेरम पिक्रिन : रात में मूत्रत्याग की इच्छा, मूत्र सम्बन्धी असंयतता। मूत्र त्याग की निरंतर इच्छा बनी रहना।

परेरा ब्रावा : तीक्ष्ण कूथन, बूँदों में मूत्रस्राव, गुर्दों से जाँघों की ओर फैलता दर्द, मूत्र में पथरी, रक्तयुक्त एवं अम्लीय। मूत्राशय में पथरी।

पौपुलस ट्रेम्यूल : पीड़ायुक्त मूत्रत्याग के साथ मूत्रत्याग की इच्छा। प्रोस्टेट ग्रंथि की अतिव द्धि। जाँघों में दर्द।

पल्सेटिला : पौरूष ग्रंथि में प्रदाह (Prostatitis) अंडकोशों का शोथ, सूजाक, धुँधला व पीला मूत्र, प्रोस्टेट ग्रंथि की अतिव द्धि, जाँघों में दर्द।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सैबल सेरल : प्रोस्टेट ग्रंथियों की अतिव द्धि, साथ में मूत्राशय का विकार, लगातार मूत्रत्याग की इच्छा। पीड़ायुक्त मूत्रत्याग।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः भोजन के पूर्व कुछ पानी में 10–15 बूँद प्रतिदिन 4–6 बार। सुधार होने पर लंबे समय तक पूरी तरह से रोगमुक्त होने तक प्रतिदिन 10 बूँद दिन में तीन बार लें।

टिप्पणी : **प्रोस्टेट ग्रँथि के उग्र प्रदाह में :** अतिरिक्त औषधि के रूप में R 1 का भी प्रयोग करें।

मूत्राशयशोथ— व क्कगोणिका शोथ (Cystitis-pyelitis) में : R 18 से तुलना करें। यदि लक्षण अनुकूल हों तो इसे R 25 के साथ भी दिया जा सकता है।

कटि स्नायुशूल (Sciatica) में : R 71 देखें।

गुर्दे की बीमारी (nephrosis) में : R 64 देखें।

सहवर्ती धमनियों की कठोरता (concomittant arteriosclerosis) में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 12 का भी प्रयोग करें।

रक्त वाहिनियों की कठोरता में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 2 का भी प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 26

Draining and stimulating drops

बीमारी के बाद की कमजोरी में विशेष उपयोगी

(निस्सारक एवं उद्दीपक ड्रॉप्स)

मूल-तत्व : एसिड नाइट्रिक D12, एसिड फॉस्फोरिक D12, कैल्शियम आयोडेटम D12, फेरम आयोडेटम D 12, सल्फर आयोड D 12.

लक्षण : कमज़ोर शरीर की बचावकारी प्रणाली को उद्दीप्त करती है। निम्नलिखित तत्वों की प्रभावशीलता के माध्यम से शरीर प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है।

क्रिया विधि : **एसिड नाइट्रिक :** थोड़ा सा परिश्रम करने पर हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। रात में लगातार पसीने के कारण थकान, भोर के समय त्वचा ठंडी हो जाती है, सोने जाते समय कँपकँपी होती है।

एसिड फॉस्फर : सर्वांगीण दुर्बलता विशेषकर अत्यधिक परिश्रम करने के बाद प्रमस्तिष्कीय– कशेरुकीय प्रणाली (cerebrospinal system) की कमजोरी। प्रत्यंगों में भारीपन तथा चेतनाशून्यता, सिर चकराना (Vertigo)।

कैल्क० आयोड : खून के चिपचिपेपन को बढ़ाती है। फेरम आयोड के साथ अवटुग्रंथि (thyroid) पर क्रिया करता है।

फेरम आयोड : अनियमित रक्त संचरण, चेहरा प्रायः पीला (मुरझाया हुआ), किंतु तनिक भी उत्तेजना के बाद लाल। उदर सम्बन्धी व्यवधान। नाक से रक्तस्त्राव, सिरदर्द, संताप की अनुभूति पूर्णतया शिथिल नाड़ी।

खुराक की मात्रा: अन्य मिश्रणों के साथ यह दवा दिन में केवल एक बार 10–15 बूँदें थोड़े से पानी में मिलाकर लें। इस दवा (R-26) के प्रयोग पर प्रतिक्रिया न होने पर इसे कुछ दिन तक दिन में 2–3 बार 10–15 बूँद लें।

टिप्पणी : यह दवा अन्य सभी मिश्रणों के साथ दी जा सकती है, किंतु यह बात याद रखनी चाहिए कि इसे मुख्यतः पुराने रोगों में ही निर्देशित किया गया है।

यह दवा मध्यवर्ती अथवा एकल दवा के रूप में हर बार दोहराई जा सकती है, जब कभी भलीभाँति दिये गये लक्षणों वाली कोई दवा उचित प्रतिक्रिया नहीं प्रदर्शित करती।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 27
Renal calculi drops
गुर्दों की पथरी के लिए

मूल-तत्व : एसिड नाइट्रिक D6, बरबेरीज D3, लाइकोपोडियम D5, रूबिया टिंक्टर D2, सरसापेरिला D3, लेपिस रेनालिस D12.

लक्षण : गुर्दे की पथरियाँ, गुर्दों (kidneys) में तेज़ पीड़ा, पीठ के निचले भाग के आर–पार दर्द, चुभन, लाल तथा चिपचिपा मूत्र साथ में उपकला सम्बन्धी कोशिकाएं तथा आकारहीन व्यर्थ तत्व। पेशाब में ऑक्सेलिक अम्ल, मूत्र–पथरी।

क्रिया विधि : **एसिड नाइट्रिक :** ऑक्सेलिक अम्ल (oxalic acid) के कारण पेशाब में पथरी, और जब ऑक्सेलिक अम्ल पथरी का मुख्य मूल–तत्व हो।

बरबेरीज़ : गुर्दों में तेज़ दर्द, दबाव से बढ़ने वाला। त्रिकास्थि भाग में दर्द, जो गुर्दों से आता है, रोगी चल–फिर नहीं सकता, दर्द को कम करने के लिए दाहिनी ओर झुकता है। चिपचिपा, लाल पेशाब।

लाइकोपोडियम : पीड़ायुक्त मूत्रत्याग, पेशाब लाल आना, मूत्र में पथरी।

गुर्दे में दर्द (दाहिना भाग प्रभावित)। मूत्र मार्ग से होता हुआ मूत्राशय तक जाता दर्द।

रूबिया टिंक्टेर : पथरी के कारण होने वाली मूत्राशय की शोथ। रात में मूत्र त्याग की लगातार इच्छा साथ में अत्यधिक दुर्बलता। गुर्दों से मूत्र नली तक दर्द।

सरसापेरिला : मूत्र पथरी, मूत्र–त्याग के समय तीक्ष्ण दर्द।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः थोड़े पानी में 10–15 बूँदें प्रतिदिन 3 बार। एक सप्ताह के उपचार के बाद लंबे समय तक प्रतिदिन 2–3 बार 5–8 बूँद लेना पर्याप्त होगा।

टिप्पणी : गुर्दे की पथरी के कारण होने वाले पेट दर्द में : R 37, 15–30 मिनट पर थोड़े पानी में 10 बूँदें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूत्र में श्वेतकण तथा गुर्दे की बीमारी में : R 64 देखें।

मूत्राशय शोथ तथा मूत्राशय–व क्क गोणिका शोथ (cysto-pyelitis) तथा जीवाणु मेह में : R 18 देखें, जिसे R 27 के साथ या विकल्प स्वरूप ले सकते हैं।

प्रोस्टेट सम्बन्धी अतिव द्धि जो मूत्राशय शोथ के साथ हो : R 25 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 28
Dysmenorrhea, amenorrhea
पीड़ाप्रद मासिक स्राव, ऋतुरोध के लिए

मूल-तत्व : एसिडम सल्फ्यूरिक D 4, एसकुलस D 2, क्रोकस D 4, फेरम फॉस D 8, हैमेमेलिस D 6, सीकेल कोरनट D 6.

लक्षण : पीड़ाप्रद मासिक स्राव, मासिक स्राव दब जाना या लुप्त हो जाना। माँसपेशी सम्बन्धी अरेखित तन्तुओं (unstriped muscular fibres) पर क्रिया करती है।

मासिक स्राव के दौरान अधिक रक्त बह जाने के कारण दुर्बलता की स्थितियाँ। तप्त संवेदना (flushes of heat) के बांद पसीना। पीठ के निचले भाग के आर–पार (across) दर्द।

क्रिया विधि : **एसिड सल्फ :** किसी भी प्रकार का रक्त स्राव, तप्त संवेदना (flushes of heat) के बाद पसीना। थकान, घबराहट।

एसकुलस : चारित्रिक प्रभाव : सामान्य शिराओं सम्बन्धी स्थिरता, पीठ के निचले भाग में होने पर स्थिति बदतर, पूरे शरीर में स्पन्दन। गर्भाशय सम्बन्धी स्थानच्युति (Prolapsus), साथ ही, पीठ के निचले भाग (बाँयी ओर) विचित्र सा दर्द, गर्भावस्था जैसा दर्द।

क्रोकस : मासिक स्राव गहरे रंग का या काला थक्केदार हो, पेट में कुछ चलने की अनुभूति, बिना गर्भपात के।

फेरम फॉस : रक्त संचरण पर शक्ति पूर्वक कार्य करता है (anaemia due to excessive menstrual bleeding), शिराओं के फैलाव के लिए सर्वोत्तम।

हेमामेलिस : रक्तस्राव में निर्दिष्ट है, शिराओं को विशेष रूप से शक्ति प्रदान करती है। सिरदर्द।

गहरे रंग का रक्त, प्रभावित अंगों में दर्द की संवेदना। रक्त बह जाने के कारण होने वाली कमजोरी (Exhaustion)।

सीकेल कॉर्नट : मुख्यतः अरेखीय पेशी–तन्तुओं पर कार्य करती है, रक्त–संकुलन, निराशा तथा गर्भाशय–निपात। संकुचन पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राथमिक प्रभाव तथा द्वितीयक प्रभाव से अरेखित पेशी–तंतुओं में विस्फारण उत्पन्न करती है।

खुराक की मात्रा: गंभीरता के अनुसार, भोजन के पूर्व दिन में 4–6 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। सुधार के बाद, खुराक कम करके, प्रतिदिन 3 बार 10 बूँदें लें। पूरी तरह से रोग मुक्त हो जाने के बाद भी लंबे समय तक दवा लेते रहें। अगले मासिक स्राव के पूर्व लगभग 8 दिनों तक प्रतिदिन 5–10 बूँद दिन में दो बार (सुबह और शाम) लेना बेहतर होता है।

टिप्पणी : रजोनिव त्ति काल के रक्तप्रदर में : R 10 देखें।

श्रोणि अंगों के प्रदाह में : R 38 दाहिने ओर के अंगों अथवा R 39 बायीं ओर के अंगों के लिए देखें।

ये मिश्रण R 28 के साथ अथवा विकल्प के रूप में दिए जा सकते हैं, विशेष रूप से यदि रक्तस्राव का कारण प्रदाह, रसौली या ऐसी ही कोई स्थिति हो।

शिरा सम्बन्धी स्थिरता में R 42

महिलाओं की त्रिकास्थि पीड़ा में : R 50 देखें

अल्परक्तता में : R 31 देखें

पीड़ायुक्त मासिकधर्म में : R 75 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 29
Vertigo, Syncope
सिर चकराना, मूर्च्छा के लिये

मूल-तत्व : आर्जेण्टम नाइट्रिक D 30, कोकुलस D 30, कोनियम D 30, थेरिडियॉन कुरासैविक D 30.

लक्षण : विभिन्न प्रकार की स्थितियों द्वारा उत्पन्न सिर चकराना। आनवांशिक रोग का चक्कर (Menier's disease), प्रमस्तिष्कीय धमनियों की कठोरता के परिणाम स्वरूप प्रमस्तिष्कीय वाहिका सम्बन्धी अवरोध, स्नायु–जाल (ANS) पर निर्भर संचरण सम्बन्धी अवरोध। यात्रा से रुग्णता (travel sickness)। बस यात्रा के दौरान चक्कर व उल्टी आना।

क्रिया विधि : **आर्जेण्टम नाइट्रिक :** सिर चकराना तथा सर्वांगीण अस्थिरता, नाड़ियों की दुर्बलता के कारण कँपकँपी, कानों में भिनभिनाहट जैसा शोर, अरुचि।

कोकुलस : प्रमस्तिष्कीय–कशेरुकीय प्रणाली पर क्रिया करती है। सिर चकराना, बैठने पर चक्कर की व द्धि, साथ में मितली, उल्टी और बेहोशी की प्रव त्ति (a sense of imbalance)।

कोनियम : प्रमस्तिष्कीय अल्परक्तता, सिर चकराने की अनुभूति, बिस्तर में करवट लेने पर बढ़ना। मस्तिष्क में चेतनाशून्यता। व द्धावस्था में थकान की स्थिति।

थेरिडियॉन कुरासैविकम : सिरदर्द के साथ सिर चकराने की प्रव त्ति जो आँखें बंद करने पर, बैठने या लेटने पर शोरगुल से, सूर्य के ताप से बढ़ती है सड़क पार करने में असमर्थता।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः भोजन के पूर्व प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें, लंबे समय तक लें।

टिप्पणी : धमनियों की कठोरता में : अतिरिक्त औषधि के रूप R 12 का प्रयोग करें।

हृदय रोगों पर आधारित सिर चकराना : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 3 का प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदय के दर्द (Angina pectoris) में : अतिरिक्त औषधि के रूप R 2 का प्रयोग करें।

रजोनिव त्ति (Menopause) के दौरान : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 10 का प्रयोग करें।

अल्परक्तचाप में : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 44 का प्रयोग करें।

निपात (Collapse) की आशंका में : R 67 देखें, यदि अनिवार्य हो, तो R 22 भी देखें।

उपर्युक्त मिश्रणों की खुराक प्रत्येक औषधि के वर्णन के अनुसार लेना होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एटोमेयर–बेकरॉन–डॉ० रेकवेग R 30
Universal Ointment
बहुउद्देश्यीय मरहम

मूल–तत्व : आर्निका D3, बेलाडोना D3, कैलेंडुला D3, कैम्फर D3, डल्कामारा D3, इकिनेशिया एंगुस्टिफोलिया D3, हैमामेलिस D3, हाइपेरिकम पर्फ D3, मिल्लिफोलियम D3, नक्स वोमिका D3, रस टॉक्स D3.

लक्षण : माँसपेशियों एवं जोड़ों का आमवात (Rheumatism), तंत्रिकाशूल एवं कटि स्नायुशूल (Sciatica)। रीढ़ की हड्डी के बीच के चक्रों (Intervertebral discs) की विघटनकारी प्रक्रियाऐं, जोड़ों के आसपास की प्रदाह युक्त सूजन (Osteo-arthritis), विच्छेदन के कारण होने वाला नाड़ी शूल (amputation neuralgias)। आघात के कारण पक्षाघात, चेहरे का पक्षाघात, अस्थि–उपास्थि शोथ (Osteochondritis)। नील पड़ना, पेशियों में दर्द, मोच। फोड़े तथा फुँसियाँ।

क्रिया विधि : बेलाडोना : अतिरक्तता (hyperaemia) से सम्बन्धित सभी प्रकार की प्रदाहक अवस्थाओं में प्रभावशाली।

कैलेंडुला : कटे–फटे घावों तथा नील पड़ने पर इसकी विशिष्ट रूप से प्रभावशाली क्रिया होती है।

इकिनेशिया एंग : तंतुओं में प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने वाली।

हैमेमेलिस : शिरा सम्बन्धी रक्त स्राव। सामान्य पीड़ा एवं प्रत्यंगों में दर्द।

मिलिफोलियम : रक्तस्राव सम्बन्धी औषधि।

बाह्य आवेदन : सुबह और शाम को स्थानिक रूप से लगाना अधिकतर पर्याप्त होता है। दर्द और अविराम पीड़ा की तीक्ष्ण स्थितियों में कई बार लगाना अनिवार्य हो सकता है। घाव और फोड़ों आदि में प्रभावित भाग के चारों ओर के ऊतकों पर ही मरहम लगाना चाहिए।

टिप्पणी : एटोमेयर–बेकरॉन R 30 को बाहरी रूप से लगाने के साथ निम्नलिखित औषधियों का सेवन भी करना चाहिए।

जोड़ों और पेशियों के आमवात (Rheumatism), हड्डियों के जोड़ों के प्रदाह (Osteo-arthritis) तथा अस्थि–उपास्थि शोथ में : R 11

केवल पंजीकृत्त चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कटि स्नायुशूल (Sciatica) में : R 71

सिर तथा सिर के पिछले भाग की नाड़ियों के दर्द में : R 16

कंधे तथा दूर–दूर तक फैले ऊपरी अंगों के आमवात (Rheumatism) में : R 46

स्त्रियों के पीठ–दर्द में : R 50

हड्डियों के जोड़ों के प्रदाह (Osteoarthritis) में : R 73

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 31

Energizes the appetite. Increase blood supply. Strengthens the liver

भूख और रक्त पूर्ति बढ़ाती है। यक त को शक्तिशाली बनाती है।

मूल-तत्व : अरेनिया डायडेमा D30, आर्सेनिकम् आयोडेट D6, सीयानोथस आमेरिक D6, फेरम क्लोरैट D6, लाइकोपोडियम D12, सल्फर D 30, चायना D 6.

लक्षण : खून की कमी, भूख न लगना, विशेष कर बच्चों में; अक्सर सूजन के साथ। तीक्ष्ण रोगों (acute diseases) के कुपरिणाम। अन्य रोगों के कारण होने वाली सभी प्रकार की खून की कमी।

क्रिया विधि : चिकित्सकीय प्रक्रिया दोतरफा है; यह लीवर की किण्वित प्रणाली की उत्तेजना द्वारा लीवर की ओर प्रेषित की जाती है (लाइकोपोडियम), और कुछ चुने हुए उद्दीपकों के द्वारा अस्थि–मज्जा को प्रभावित करती हैं (फेरम क्लोरैटम)। कोशिका सम्बन्धी उपापचय (cellular metabolism) में आर्सेनिक आयोडेटम का लाभकारी प्रभाव होता है अर्थात् क्रिया रक्त–उत्पादक प्रणाली तक फैलती है तथा पुनः, प्लीहा (Spleen) की प्रक्रिया पर लाइकोपोडियम के प्रभाव द्वारा यह बढ़ जाता है, जिसे सीयानोथस. अमेरिकेनस द्वारा शक्ति प्राप्त होती है।

उपचार के कुछ ही दिनों बाद दवा की प्रक्रिया प्रत्यक्ष हो जाती है अर्थात् शरीर को अधिक प्रभावित किए बिना भूख और रक्त बढ़ जाता है, वसा का कोई संचय नहीं होगा। होम्योपैथिक दवायें सदा विष–रहित तथा संतुलनकारी तरीके से कार्य करती हैं। R 31 की तकनीकी प्रक्रिया को निम्नलिखित लक्षणों के रूप में दिखाया गया है :

अरेनिया डायडेमा : मौसम परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता।

आर्सेनिकम आयोडेटम : ऊतकों में हुए परिवर्तनों पर चुनी हुई क्रिया, कोशिका संबंधी उपापचय को प्रभावित करता है।

सीयानोथस अमेरिक : चोटग्रस्त प्लीहा (Injured Spleen) (जैसे कि मलेरिया के बाद)। पेट में दर्द (बाँयी ओर)। रक्त उत्पादन एवं संचरण में बाधा।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरम क्लोरैट : द्वितीय श्रेणी की अल्परक्तता; रक्त कणों की संख्या में व द्धि।

लाइकोपोडियम : यकत (liver) की सूजी हुई अवस्था (बाँयी ओर दर्द), भूख का अभाव (जल्दी त प्ति), की स्थिति में एक बलवर्धक एवं क्रियात्मक औषधि (Tonic); पेशाब में लाल से कण (Red sand)।

सल्फर : प्रतिक्रिया भेदने वाला तत्व, संपूर्ण सल्फर सम्बन्धी उपापचय को सक्रिय करती है। सिर की ओर रक्त का अधिक बहाव, बाधित संचरण।

खुराक की मात्रा: **सामान्य नियम :** भोजन के पूर्व दिन में तीन बार थोड़े पानी में 10–15 बूँद। उपचार के प्रारंभिक दिनों में, प्रकट खून की कमी में, लगातार खुराक, प्रतिदिन 6–10 बार 10–15 बूँद तक दें। सुधार होने पर, खुराक कम करके 2–3 बार कर दें। बच्चों को बहुत अधिक चॉकलेट, मिठाई तथा अंडे न खिलायें, क्योंकि इससे लीवर पर अधिक जोर पड़ता है और भूख कम हो जाती है।

बच्चों के लिए अनुमोदित भोजन : दूध की खीर (Pudding), जई का दलिया, सब्ज़ियाँ और फल। माँस को पूरक भोजन के रूप में माना जाता है, जबकि किसी भी रूप में पोर्क : बेकन, सॉसेज, हैम, आदि नहीं लेना चाहिए।

यह उन वयस्कों पर भी लागू होता है जिनमें खून की कमी है।

टिप्पणी : रोग निव त्ति के दौरान पुनर्स्वास्थ्य लाभ के लिए : वीटा–सी 15 देखें।

अन्तःस्रावी (endocrine) व्यवधान में : R 19, अथवा R 20 देखें।

सर्वांगीण कमज़ोरी में : R 26 से तुलना करें।

उपर्युक्त मिश्रण R 1 के साथ अथवा उसके विकल्प के रूप में दिया जा सकता है, जो लक्षणों पर निर्भर करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 32
Hyperhidrosis of varying genesis
विभिन्न कारणों से अत्यधिक पसीना आना

मूल-तत्व : एसिडम नाइट्रिक D12, बेलाडोना D12, जैबोरैंडी D4, केलियम कार्ब D6, सैल्विया ऑफ D30, सम्बूकस नाइग्रा D4, सैगुनेरिया D6, सीपिया D30, वेराट्रम D 12, लैकेसिस D30.

लक्षण : अनावश्यक पसीना (विभिन्न कारणों से अत्यधिक पसीना आना)। रजोनिव त्ति सम्बन्धी ताप, साथ में पसीना। उग्र संक्रामक रोगों तथा बुखार के दौरान अत्यधिक पसीना। अन्य प्रकार के पसीने (दुर्गन्ध युक्त)। थकान के साथ रात में पसीना (तपेदिक पूर्व स्थिति)। गर्म, ठंडा या चिपचिपा पसीना।

क्रिया विधि : इस औषधि की क्रिया इसके मूल–तत्वों के स्वरूप के अनुसार ही कार्य करती है :

एसिडनाइट्रिक : अत्यधिक असहनीय पसीना।

बेलाडोना : गर्म पसीना, साथ में वाष्प।

जैबोरैंडी : विभिन्न कारणों से अत्यधिक पसीना आना।

काली कार्ब० : पसीना, थकान, कंधों के सिरों के बीच कमज़ोरी, विशेषकर रात में पसीना आने पर।

सैल्विया ऑफ : पसीने तथा रात्रिकालीन पसीने का अवरोधक।

सम्बूकस नाइग्रा : विभिन्न प्रकार के तीक्ष्ण रोगों के दौरान पसीना आना।

सैंग्यूनेरिया : तप्त संवेदना होने के साथ प्रचुर पसीना आना।

सीपिया : रजोनिव त्तिकालीन तप्त संवेदना, रजोनिव त्ति जैसा पसीना।

वेराट्रम एल्ब : ठंडा पसीना; उदर शूल।

यह दवा प्रचुर पसीने में और कुछ बीमारियों के साथ होने वाले विभिन्न प्रकार के पसीने में क्रिया करती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्राः लंबे उपचार के लिए प्रतिदिन 3–4 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लेनी चाहिए। रुक–रुक कर होने वाले पसीने में (ताप, रात का पसीना), लगातार रोगरोधी खुराक दें, अर्थात् रात के पसीने में ¼ घंटे के अंतराल में 10–15 बूँदों की कई खुराक दें। यदि रात के प्रारंभिक भाग में पसीना आये तो यही खुराक काम करेगी। बदबूदार पसीना होने पर सिरका मिलाकर ठंडे पानी से धोया जा सकता है, तदुपरांत हैमामेलिस के तनुक त सत्त की कुछ बूंदों को शरीर पर रगड़ा जा सकता है। लाइम–बाथ तथा सॉना–बाथ भी अनुमोदित हैं। विषैले कारक जैसे क त्रिम रंग, शूकर माँस और तदनुरूप विषाक्त भोज्य पदार्थ नहीं लेने चाहिए।

टिप्पणी : पूरक उत्पादों का अनुमोदन :

संक्रमणकारी रोगों के दौरान पसीना (तापमान में उतार–चढ़ाव के कारण) निम्नलिखित सम्मिश्रणों का अनुमोदन करना अनिवार्य बना देता है :

हृदय–शूल (Angina) तथा इंफ्लुएंज़ा में : R 1 तथा R 6 देखें

तपेदिक के प्रभावों में : R 48 तथा R 57 देखें।

श्वासनलियों के (bronchial) रोगों में : जटसिन R 8/R 9 तथा R 43

संचरण सम्बन्धी व्यवधानों में : R 3 देखें

रक्तवाहिका सम्बन्धी अपर्याप्तता में : R 2

अवटु विषाक्तता (thyreotoxicosis) में : R 51

संचरण सम्बन्धी निपात (Collapse) में : R 67 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 33
Constitutional treatment in epilepsy
मिरगी का उपचार

मूल-तत्व : ब्यूफो D200, क्यूप्रम D12, पल्साटिल्ला D30, साइलीशिया D30, ज़िकम मेट D 12, बेलाडोना D30.

लक्षण : मिरगी तथा मिरगी के दौरे, माँसपेशियों में मरोड़।

क्रिया विधि : विशिष्ट चिकित्सकीय प्रतिजनों (antigens) से प्राप्त मूल–तत्व।

बुफो : मिरगी के दौरे तथा बढ़ती हुई कमज़ोरी के लिए विशिष्ट दवा

क्यूप्रम : हर प्रकार की मरोड़ के लिए, उदाहरणार्थ, जाँघों के, तथा विशेष रूप से मिरगी सम्बन्धी मरोड़। प्रमस्तिष्कीय संकुलन (Cerebral congestion).

पल्साटिल्ला : सामान्यतः विपरीत क्रिया करने वाले प्रभावों को बढ़ाती है, अर्थात् जो रोग पहले दब जाते हैं वे विपरीत प्रभावों द्वारा पुनः प्रकट हो जाते हैं।

साइलीशिया : पैरों का पसीना दब जाने के कारण उत्पन्न होने वाले दुष्परिणाम। संरचना पर क्रिया।

जिंकम : मिरगी में विभिन्न लाभकारी प्रभाव, त्वचा के दबे हुए रोग को ऊपर लाता है।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 2–3 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदे, लंबे समय तक।

दौरे के पूर्व या बाद में दो घंटे तक प्रत्येक ½ घंटे पर 20 बूँदें लें।

उपचार के 3 माह की अवधि के बाद खुराक कम करके प्रतिदिन एक बार 10–15 बूँदें दे सकते हैं।

टिप्पणी : R 36 को उपयोगी पूरक दवा समझा जाता है तथा उसके अन्तर्गत लक्षणों से तुलना कर लें :

बेचैनी एवं उत्तेजना में : R 14 से तुलना करें।

हीस्टीरिया सम्बन्धी दौरों में : R 47 देखें।

दाँत निकलने के समय दौरे : R 35

अतिपेशी उत्तेजना (tetany) तथा गर्भाक्षेप (eclampsia) में : R 34 देखें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 34

Recalcifying drops acting on the bone texture

हड्डियों के गठन पर क्रियाशील, पुनः कैल्सीकरण ड्रॉप्स

(हड्डियों के उपचार के लिए)

मूल-तत्व : कैल्शियम फ्लौर D12, कैल्शियम फॉस D12, कैल्शियम कार्ब. D30, कैल्शियम हाइपोफॉस D6, कैमोमिला D6, हेकला लावा D12, मर्क्युरियस प्रेसी. रुब्रम D12, साइलीशिया D30, मेजेरियम D6.

लक्षण : .कैल्सियममय ऊतकों तथा हड्डियों के विकास में बाधा, अस्थि–प्रणाली में विकृति जन्य लक्षण (Pathological characteristics); अध्यास्थिता (exostosis), अस्थि–आवरणशोथ (Periostitis), हड्डियों का भुरभुरापन, अस्थिम दुता, हड्डियों का टेढ़ा–मेढ़ा होना (rickets), नितंब–संधिशोथ (coxitis) तथा जोड़ों का प्रदाह (arthritis), साथ ही केन्द्रक मज्जा (पूरक औषधि के रूप में)।

क्रिया विधि : विविध प्रकार के कैल्शियम सम्मिश्रण जो कैल्शियम के उपापचय (metabolism) को प्रचुरता से प्रभावित करते हैं, तथा निम्नलिखित लक्षणों के अनुसार कार्य करते हैं :

कैल्केरिया फ्लोर : दाँतों पर कार्य करता है, विशेषकर दन्तवल्क (enamel) पर।

कैल्क० हाइपोफॉस्फ : गर्भावस्था में कैल्शियम के उत्पादन पर नियामक प्रभाव डालती है।

कैल्कफॉस्फ : हड्डियों के विकास में अवरोध, कैल्शियम–उत्पादन में कमी, रक्त की कमी वाले बच्चों में पुराना सिर दर्द।

कैमोमिला : क्रोधयुक्त चिड़चिड़ापन, सिर में पसीना, बच्चों में दाँत निकलने सम्बन्धी तकलीफ।

हेकला लावा : पैरों की हड्डी अप्राक तिक रूप से बढ़ना।

मेज़ेरियम : हड्डियों की त्वचा में जलन तथा पीड़ा, विशेषकर पिंडली की हड्डी, बाँह के ऊपरी भाग पर, तथा छाती की हड्डी में।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मर्क्युरियस प्रेसी रुब्रम : हड्डियों में किसी प्रकार की कमी होना, हड्डी बढ़ जाना तथा अस्थि आवरक झिल्ली में प्रदाह होना साथ में रात को हड्डियों में दर्द होना।

साइलिशिया : शारीरिक विकास की गति बढ़ाती है; हड्डियों के नासूरों (fistulae) को नष्ट करती है।

खुराक की मात्राः स्तन–पान करते शिशुओं तथा बढ़ती उम्र के बच्चों को दिया जाता है, नियमित रूप से दिन में एक या दो बार 10–15 बूँद (शिशुओं के लिए उनके सामान्य दूध में मिलाकर बोतल को अच्छी तरह से हिलाकर देना श्रेष्ठ होगा)। हड्डियों का टेढ़ी–मेढ़ी होना (Rickets) या हड्डियों के अन्य रोगों में पहले ही लिए गए विटामिन के साथ भोजन के पूर्व दिन में 4–6 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें दें। रात में हड्डियों में होने वाले दर्द के लिए लगातार खुराक लेनी चाहिए।; प्रत्येक ¼ घंटे पर 10–15 बूँदें। साथ ही फुलर्स मिट्टी या उपचारकारी मिट्टी भी बाँधी जा सकती है : जो हड्डियों के नासूर में भी प्रयोग होती है। शूकर–माँस का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए।

बच्चों में कठिनता से दाँत निकलने में लंबे समय तक प्रतिदिन 3–4 बार दें; तथा तेज़ दर्द होने पर, प्रत्येक 10 मिनट पर थोड़े पानी में 8–10–15 बूँदें दें।

टिप्पणी : पीड़ा युक्त दाँत निकलना : R 35 भी

त्वचा के रुसीदार प्रदाह (craddle cap) में : यदि आवश्यकता हो तो R 23 भी

अत्यधिक पसीना आने पर (Hyperhydrosis) में : R 32 से तुलना करें

हड्डियों के जोड़ों के प्रदाह (Osteoarthritis) में : R 73 भी

कशेरुका चक्रों (Vertebral discs) की हड्डियों तथा उपस्थियों के प्रदाह, कशेरुका अस्थि संधिशोथ (Vertebral osteo- arthritis) में : R 11 भी लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 35
Teething aches drops
दाँत निकलने में दर्द की औषधि

मूल-तत्व : एकोनाइटम D6; ब्रायोनिया D30, कैल्शियम कार्ब. D30, कैमोमिला D4, कोलोसिंथिस D12, इग्नेशिया D30, स्टैफिसैग्रिया D8.

लक्षण : दाँत निकलते समय दर्द, दाँत सम्बन्धी ऐंठन, देर से दाँत निकलना।

क्रिया विधि : इसके शक्तिक त घटकों (Potentised constituents) के कार्यकलापों से ही इसकी प्रभावशाली उपचारक गुणवत्ता का ज्ञान हो पाता है।

एकोनाइटम : बुखार जैसी परिस्थितियाँ; किसी न किसी रूप में ठंड लग कर रोग होना, जो दाँत दर्द के साथ या बारी–बारी से हो। उत्तेजना, चीखने–चिल्लाने की प्रव त्ति।

ब्रायोनिया : सीरमी त्वचा की जलन

कैल्क० कार्ब० : दाँत के विकास पर कार्य करता है, दाँत निकलना सुगम हो जाता है।

कोलोसिंथिस : उत्तेजित अवस्थायें : स्पन्दनकारी पीड़ा, व्याकुलता, आक्रामक क्रोध के दौरे।

इग्नेशिया : वातोन्मादी (Hysterical) प्रतिक्रियायें; लगातार कराहना; नाड़ी संबंधी उत्तेजना।

स्टैफिसैग्रिया : नाड़ियों की उत्तेजना तथा बच्चों का असामान्य व्यवहार, लगातार रिरियाना और कराहना।

R 35 की क्रिया पीड़ा और जलन को कम करती है, जो उत्तेजना की स्थितियों तथा ठंड के कारण उत्पन्न लगातार बनी रहने वाली बीमारी में होती हैं, जैसे श्वासनलियों का प्रदाह (Bronchitis), खसरा से पूर्व भी, उत्तम रहेगा इसके साथ–साथ कान के बिचले पर्दे के प्रदाह (Otitis-media) के लिए कान की जांच कर ली जाये।

खुराक की मात्रा: तीक्ष्ण स्थितियों में इस उत्पाद की ही लगातार खुराक लेनी चाहिए। छोटे बच्चों के लिए ½ कप पानी में 40–50 बूँद डाल कर

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्येक 5–10 मिनट पर एक छोटा चम्मच दवा देनी चाहिए। कुछ बड़े बच्चों को जिनकी स्थिति कम तीक्ष्ण हो, लगातार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें डाल कर दें। खोखले दाँत के कारण हुए दर्द के लिए, इस मिश्रण को शुद्ध रूप में रुई के फाहे में लगाकर लगायें।

टिप्पणी : पूरक उत्पादों के रूप में : R 34 जिससे कैल्शियम की उत्पादकता और दाँतों के विकास में सुधार हो।

देर से दाँत निकलने पर, दाँतों का समुचित विकास न होने पर अतिरिक्त औषधि के रूप में R 34, दिन में एक दो बार दें ।

नाड़ी सम्बन्धी पीड़ा में : R 70 तथा R 16 से तुलना करें।

यदि साथ में इंफ्लुएंज़ा हो : R 6 साथ में लें।

दाँत की जड़ की जलन में : R 35, और R 1 बारी–बारी से, प्रत्येक ½ से 1-2 घंटे में

शांत करने के लिए : साथ में या वैकल्पिक रूप में R 14.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 36

Diseases of the nerves, chorea, St. Vitus' dance

नस-नाड़ियों के रोग, नर्तन रोग, अंग कम्पन

मूल-तत्व : एगेरिकस D 12, इग्नेशिया D 12, लैकेसिस D 30, मैग्नीशिया फॉस्फोरिका D 12, फॉस्फोरस D 30, ज़िंकम वैलेरियानिक D 8.

लक्षण : विभिन्न कारणवश आसपास की घटनाओं के प्रति बच्चों के तंत्रिका तंत्र की अतिसंवेदनशीलता (oversensitivity), स्नायु रोग (nervous diseases) जैसे नर्तन रोग (St. Vitus' dance), इन सबका उपचार निर्विषीकरण वाली मध्यम क्रियाशीलता की दवा जो R 36 जैसी होम्योपैथिक औषधि पर आधारित हो से सम्भव है।

क्रिया विधि : विभिन्न लक्षण ही इसके घटकों (constituents) के विस्त त कार्यक्षेत्र के मापदण्ड हैं :

एगेरिकस : अमेनिटा मस्केरिया (Amanita muscaria) के इस सत्व का पेशी की मरोड़ तथा तंत्रिका सम्बन्धी ऐंठन पर विशिष्ट प्रभाव होता है।

इग्नेशिया : तंत्रिका सम्बन्धी चिड़चिड़ापन, बैचेन नींद एवं अवसांद की सभी तीक्ष्ण स्थितियों में क्रिया करती है।

लैकेसिस : तंत्रिका सम्बन्धी चिड़चिड़ापन तथा बैचेन नींद की सभी तीक्ष्ण स्थितियों में क्रिया करती है।

मैग्ने० फॉस : मरोड़ तथा कशेरुकीय अस्थि–मज्जा (Spinal marrow) की जलन की सामान्य औषधि।

फॉस्फोरस : बहुत तेज़ी से बढ़ने वाले तथा सामान्यत बहुत दुबले–पतले लोगों के विकास में संरचनात्मक (constitutional) दवा।

ज़िंकम : ऐंठन, पैरों में बेचैनी, तंत्रिका सम्बन्धी मरोड़।

खुराक की मात्रा: गंभीरता के स्तर के अनुसार प्रतिदिन 2–3 बार थोड़े पानी में 5–8–10–15 बूँदें। तीक्ष्ण स्थितियों के साथ लगातार दौरे तथा मरोड़ होने पर प्रत्येक 1–2 घंटे पर, निम्नलिखित दवा के विकल्प के रूप में लें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दौरे की तीक्ष्ण स्थिति में अन्य मिश्रणों के साथ प्रत्येक पाँच मिनट पर दवा ली जा सकती है।

सभी प्रकार के उद्दीपक, विशेषकर एल्कोहल तथा चाय नहीं लेनी चाहिए।

टिप्पणी : पूरक मिश्रणों के रूप में R 33, R 14 तथा R 31 भी लें, यदि बच्चों में रक्त की कमी हो अथवा कंठमाला रोग से ग्रस्त बच्चों के लिए R 1 लें।

रक्त–वाहिकाओं की जलन के लिए R 22 का प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 37
Intestinal colic drops
आँतों के दर्द के लिए

मूल-तत्व : एलूमिना D12, ब्रायोनिया D4, कोलोसिंथिस D4, लैकेसिस D30, लाइकोपोडियम D4, मर्कर सब० कोर० D8, प्लम्बस एसेटिक D12, सल्फर D 12, नक्स वोमिका D6.

लक्षण : पेट फूलने के साथ पेट में दर्द, अफारा (meteorism), पेशाब में पोर्फीरिन पदार्थ जाना (Porphyrinuria), आंतों में दर्द, विभिन्न कारणों से होने वाली पेट की मरोड़ जो पेशाब में पोर्फीरिन पदार्थ जाने (Porphyrinuria) तथा यक त–रोग का लक्षण है। यक त का सूत्रण रोग (cirrhosis of liver), पैत्तिक शूल; सीसा–विष के कारण होने वाला पेट दर्द, पीड़ा–युक्त मासिकधर्म; व क्कीय शूल (renal colic) के लिए पूरक उपचार। पुराने कब्ज़ की शिकायत को धीरे–धीरे नियमित करती है।

क्रिया विधि : यह सत्य है कि हमारी जैविक–संरचना में यक त (liver) लगभग संपूर्ण निर्विषीकरण प्रक्रिया का संचालन करता है, विशेषकर आँतों में। आँतों में सारा विघटित भोजन लीवर की ओर जाता है, जिनमें से कुछ एक को छोड़कर सभी तत्व अन्न रसों (chylifers) के रूप में सांद्रित हो जाते हैं। तद्नन्तर कि लीवर के क्रियात्मक रोग आँतों के अन्दर रूकावट की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। दूसरी ओर, लीवर आँतों के माध्यम से विषैले तत्त्वों को बाहर भेजता है। इस सम्बन्ध में, कोलेस्टरीन तथा पोर्फीरिन का हीमोग्लोबिन के ऊतकों के बीच मध्यस्थ के रूप में विशेष वर्णन करना आवश्यक हो जाता है; जो यक त द्वारा उपभोग में लाये जाते हैं। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में लीवर को अनेक प्रकार से हानिप्रद विषों के संपर्क में आना पड़ता है। यह रुक–रुक कर होने वाला उत्सर्जन अथवा मध्यस्थ तत्वों को सोखने का समावेश मात्र है तथा यह बार–बार की प्रक्रिया आँतों में रूकावट (repercusions) उत्पन्न कर देती है। फलस्वरूप पेट फूलना, अफारा (meteorism), पेट फूलने के साथ दर्द, आँतीय मरोड़ जिनको अक्सर उपांत्र शोथ (Appendicitis)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा व्रण (tumours) के परिणाम स्वरूप समझा जाता है। ये रोग निकोटिन के द्वारा भी हो सकते हैं। पुराना कब्ज़ लगातार सहवर्ती (concomitant) होता है। तथा R 37 और भी अधिक अनिवार्य बन जाता है।

एलूमिना : मल छोटी गाँठों के रूप में; कब्ज की शिकायत।

ब्रायोनिया : कब्ज की शिकायत; काला पाखाना।

कोलोसिंथिस : पेट फूलने के साथ पेट में दर्द; संकुचन की प्रव त्ति, आँतीय मरोड़।

लैकेसिस : पाचन ठीक तरह से न होना (Poor digestion), विशेषकर अत्यधिक मात्रा में कुनीन (Quinine) या एल्कोहल लेने के बाद।

लाइकोपोडियम : शाम को पेट फूलना। यक त का सूत्रण रोग (cirrhosis of lever), पुराना कब्ज एवं अपच।

मर्करo सबo कोर : कूथन (Tenesmus), पेचिस होने जैसी (dysenteriform) आँतीय मरोड़।

प्लंबम एसेट : आँतों में तेज दर्द। पनीला तथा वमनकारी पाखाना; दस्तों की पुरानी शिकायत। पेट की स्पर्श के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता।

सल्फर : प्रतिक्रियात्मक पदार्थ (reaction agent), बदबूदार अपानवायु, पेट में सूजन। प्रातःकालीन दस्त।

R 37 मल को नियमित करता है और अनेक स्थितियों में कब्ज़ समाप्त करता है।

खुराक की मात्रा: लंबे उपचार के लिए प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। रुक–रुक कर होने वाले दर्द, पेट दर्द, अफारा, तथा आँतों में छेद हो जाने की आशंका होने पर (Suspected perforation), (बिना पानी मिलाये बूँदों को मुँह में कुछ देर रख कर थूक सकते हैं), ½ – 1 घंटे तक प्रत्येक 3–5 मिनट पर 5–10–15 बूँदें लें। आधारभूत परिवर्तन, पैत्तिक शूल, व क्कीय शूल, उपांत्र (Appendix) एवं अन्य अंगों की जलन में निम्नलिखित टिप्पणी लागू होती है:

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिप्पणी : पित्ताशय के शूल के लिए : R 7 के साथ या विकल्प के रूप में।

गुर्दे की पथरी के शूल में : R 27 के साथ या विकल्प के रूप में।

शांति के लिए : R 14 से तुलना करें

आँतों तथा पेट के दर्द में : R 4 को विकल्प रूप में प्रयोग करें।

पेट में फोड़े हो जाने तथा पकाशय के प्रदाह (gastritis) में : R 5 के साथ

पाचन रस थैली के प्रदाह (Pancreatitis) में : R 72 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 38
Biotherapeutic agent in affections of the abdomen (right side)
दाहिनी ओरं के उदर विकारों की औषधि

मूल-तत्व : एपिस मेलिफिका D6, आर्सेनिक एल्ब D200, ब्रायोनिया D30, सल्फर D 30, एपिसिनम D12.

लक्षण : दाईं ओर के अंडाशय सम्बन्धी रोग (complaints of right ovary), अंडाशय में जलन, स्वरयंत्र की पानी वाली सूजन (Oedema of the larynx), स्टिंक्स (Stynx) के कुप्रभाव तथा अपेंडिक्स (appendicitis) में शोथ की शुरुआत, दाहिने गुर्दे की बीमारियाँ।

क्रिया विधि : विभिन्न तत्वों की मिलीजुली क्रिया पेट के दाहिनी भाग पर प्रभावपूर्ण असर करती है।

एपिस : पेट (दाहिनी ओर) में जलन भरे दर्द पर विशिष्ट क्रिया, जो अंडाशय के शोथ के रूप में प्रकट होता है। रसौलियों (cysts) का पुनःशोषण (resorption) करके लाभदायक क्रिया करती है।

आर्सेनिक एल्ब : गुर्दे की बीमारियों (दाहिनी ओर के) तथा गुर्दे के तेज दर्द पर विशिष्ट क्रिया करने वाली दवा।

लक्षण : जरायुजाल सम्बन्धी प्रदाह (annexitis), श्रोणि–संयोजी ऊतकों का प्रदाह, डिम्बवाहिनी शोथ तथा दाहिनी ओर के अन्य रोगों के कारण होने वाली व्याकुलता (Agitation) और निराशा की स्थिति।

ब्रायोनिया : अपेंडिक्स की जलन कम करती है।

मुख्य लक्षण : आराम करते समय तथा दबाव से सुधार। पेट में जलन (प्रभावित भाग की तरफ करवट लेकर लेटने से आराम)।

सल्फर : एपिस मेल की क्रिया को प्रभावशाली बनाती है अर्थात् एपिस का कार्य सल्फर पूरा करती है। खुजली व उन खाजयुक्त विकारों में कमी करती है जो अण्डाशायिक रोगों के बाद ही बहुतायत से प्रकट होते हैं।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्रा: लंबे उपचार के रूप में प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें। तीक्ष्ण जलन में तथा मरोड़ वाले दर्द या शूल में ज़्यादा जल्दी–जल्दी खुराक लेनी चाहिए।

तीक्ष्णता के स्तर (acute stage) के अनुसार, प्रत्येक 15–30 मिनट पर 10 बूँद (संभवतः थोड़े गर्म पानी में)। साथ ही गर्म पुलटिस या उपचारकारी मिट्टी भी लगायी जा सकती है।

दाहिने ओर बाँये दोनों ओर पेट की जलन के लिए 1–2 घंटे के अंतराल पर R 39 और R 38 का प्रयोग बारी–बारी से करना चाहिए। बुखार होने पर R 1, जो जलन भी कम करेगा। यह भी याद रखना चाहिए कि ऐसे रोगों का प्रभाव किडनी पर भी हो सकता है तथा इसलिए R 27 का भी प्रयोग नितान्त आवश्यक हो जाता है।

टिप्पणी : सहायक रूप में :

R 17, रसौली के संदेह में।

R 4, आँतीय मरोड़ में।

R 37, कब्ज़ तथा मरोड़ के साथ पेट फूलने में।

R 11, पीठ में भेदने वाले दर्द में।

R 50, स्त्रियों में त्रिकास्थि भाग में दर्द।

R 16, स्नायुशूल में लाभदायक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 39

Biotherapeutic agent in affections of the abdomen (left side)

बायीं ओर के उदर विकारों की औषधि

मूल-तत्व : लैकेसिस D 30, लाइकोपोडियम D 30, पैलेडियम D 12, सैक्सीफ्रागा D 30, वेस्पा क्रेब्रो D12.

लक्षण : बायीं ओर के अंडाशय सम्बन्धी रोग (Left sided ovarion complaints), श्रोणी–संयोजी ऊतकों का प्रदाह तथा जरायुजाल (Annexes) के रोग। रसौली, जलन एवं व्रण।

जलन की स्थितियों में लाभकारी; जरायुजाल प्रदाह (Annexitis), डिंब–वाहिनी शोथ (Salpingitis), श्रोणी–संयोजी ऊतकों के प्रदाह (Parametritis) तथा अण्डाशय की रसौली (Ovarian cyst)।

शल्य–चिकित्सा (Surgical operation) का निर्णय लेने के पूर्व इस दवा को आजमाना चाहिए, साथ ही शल्य–चिकित्सा के बाद खराब क्षतचिन्हों की स्थिति में भी, तथा श्रोणी–संयोजी ऊतकों के प्रदाह (बाँयी ओर) आदि रोगों में भी इस औषधि का प्रयोग करें। दाहिना भाग प्रभावित होने पर R 38 आजमाना चाहिए।

क्रिया विधि : **लैकेसिस :** पेट (बाँयी ओर) में मरोड़ वाली पीड़ा, साथ में चेहरे पर लालिमा (flushing)।

लाइकोपोडियम : नीचे की ओर जाती हुई 'S' आकार की बड़ी आँत के चारों ओर मरोड़ वाले दर्दों में विशिष्ट प्रभाव, ऐसे दर्दों में कैंसर का संदेह, जिसका अक्सर काफी ठोस आधार होता है।

पैलेडियम : अंडाशय की रसौली पर तथा तीक्ष्ण एवं पुरानी जलन पर कार्य करता है।

सैक्सीफ्रागा : गुर्दे की पथरी (बाँयी ओर) पर विशिष्ट क्रिया। इस दवा की क्रिया स्त्री पेट (बाँयी ओर) के मुख्य प्रभावों की ओर निर्देशित होती है, जब दर्द ऊपरी अंगों की ओर फैलता है और गुर्दे की पथरी का दर्द या आँतीय दर्द के साथ होता है। जलन की ये सामान्य स्थितियाँ बढ़ती हुई प्रतिबिंबों के रूप में कई अंगों पर दिखाई देती है और उन सब को दूषित कर सकती हैं।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्राः लंबे उपचार के रूप में, प्रतिदिन तीन बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें, जिन्हें "टिप्पणी" के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य पूरक दवाओं के साथ विकल्प रूप में ले सकते हैं। अचानक विकसित होने वाले बुखार तथा दर्द के साथ तीक्ष्ण जलन में, वही खुराक प्रत्येक 1–2 घंटे पर लें (थोड़े गर्म पानी में)।

साथ में, गर्म पुलटिस, पके आलू की पुलटिस या शारीरिक–चिकित्सकीय उपचार, जैसे शॉर्ट–वेव किरणें (short wave rays)।

टिप्पणी : यद्यपि, किसी चिकित्सक के लिए स्त्री पेट के रोगों के ध्यान में रखते हुए निदान करना अत्यधिक नाजुक मसला है, वर्तमान दवा विभिन्न प्रकृति वाले पेट के रोगों (बाँये ओर) के लिए अनुमोदित की जाती है। यदि कई पूरक औषधियों के साथ वैकल्पिक प्रयोग के बावजूद कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं दिखाई देता, तो रोग के बारे में और अधिक गम्भीरता से सोचने समझने की आवश्यकता पड़ेगी।

पूरक औषधियों की सूची में हैं :

R 37, पेट में मरोड़ वाले दर्द और कब्ज़ में, जो संभवतः आँतीय मरोड़ के कारण होती है।

R 38, पेट के रोग (दाहिनी ओर के)।

R 50, त्रिकास्थि भाग में तेज़ दर्द।

R 42, शिरा की स्थिरता, शिरा–शोथ तथा शिराओं में जलन।

R 1, सभी प्रकार की जलन में, विशेषकर जब बुखार साथ हो।

R 4, ऐंठन युक्त आँतीय मरोड़ तथा अतिसार में।

R 13, रक्तस्राव युक्त बवासीर तथा मलाशय का प्रभावित होना।

R 17, रसौली का संदेह होने पर।

R 20, अंडाशय सम्बन्धी स्राव के विकारों में।

R 27, गुर्दे की पथरी में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 40
Treatment of diabetes
मधुमेह का उपचार

मूल-तत्व : फैसियोलस नैनस D 12, एसिड फॉस्फोरिक D 12, आर्सेनिक एल्ब D 8, लाइकोपोडियम D 30, नेट्रियम सल्फ्यूरिक D 12, यूरेनियम नाइट्रिक D 30, सीकेल कॉर्नट D 4.

लक्षण : मधुमेह (Diabetes), घातक अल्परक्तता (anaemia) तथा रक्त एवं ग्रंथीय प्रणाली में होने वाले विघटनकारी परिवर्तन, जैसे श्वेताणु रक्तता अथवा ल्यूकेमिया (leukemia), खून की कमी (anaemia), लसिकाकणिकागुल्मता (lymphogranulomatosis), किंतु विशेषकर डायबिटीज़ (मधुमेह) के लिए।

R 40 दूसरी श्रेणी के लक्षणों को कम करता है; जैसे : निराशा (depression), व्याकुलता (agitation), पेट फूल जाने जैसी अनुभूतियाँ, भूख की कमी, मौसम परिवर्तन से रोग व द्धि होना, प्यास लगना, खुजली होना आदि। वर्तमान दवा से स्थायी उपचार की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

क्रिया विधि : आज यद्यपि मधुमेह (Diabetes) का उपचार लगभग असंभव है, फिर भी यह सम्मिश्रण अनेक तकलीफ देह सहवर्ती (concomitant) लक्षणों से मुक्ति दिलाता है।

इंसुलिन पर निर्भर मधुमेह रोगियों में, लंबे समय तक लगातार R 40 लेने पर इंसुलिन युनिट की मात्रा में सावधानीपूर्वक कमी संभव है।

एसिड फॉस्फ : प्यास, नपुंसकता, मानसिक अवसाद (Psychic depression)।

आर्सेनिक एल्ब : न बुझने वाली प्यास, बढ़ती हुई कमजोरी।

लाइकोपोडियम : यकत (liver) की दवा, पेट फूलना, सूजन की अनुभूति।

नेट्रियम सल्फ : यकत (liver) की दवा, नम मौसम में रोग बढ़ने पर विशिष्ट क्रिया करती है।

फैसियोलस नैनस : मूत्र में शर्करा, हृदय की अनियमित क्रिया।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीकेल कॉर्न : प्यास, काँटों जैसी चुभन और संवेदना में किसी प्रकार की अस्वाभाविकता (Paresthesia), ठंडी चीजें सेवन करने की तीव्र इच्छा।

यूरेन० नाइट्रिक : विभिन्न कारणों से होने वाले मधुमेह (Diabetes) रोग की विशिष्ट औषधि।

खुराक की मात्रा: लंबे उपचार के लिए प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। कुछ सुधार के बाद, खुराक कम करके प्रतिदिन दो बार कर दें।

टिप्पणी : जटिल अवस्थाओं या अन्य पूरक लक्षणों की स्थिति में निम्नलिखित औषधियों का उपयोग किया जायेगा :

R 1, जलन, विशेषकर नासूर तथा फोड़ों में।

R 7, यकत (liver) के क्रियात्मक व्यवधान में।

R 10, रजोनिव ति (menopause) रजोनिव त्ति कालीन रोग तथा व द्धावस्था का मधुमेह।

R 19, तथा 20 उत्पादक ग्रंथियों के उद्दीपक के रूप में।

R 21, त्वचा–रोग (फोड़े)।

R 41, पुरुषों में नपुंसकता तथा शक्ति की सामान्य कमी।

R 37, कब्ज, आँतों की कमजोरी, अपान वायु अथवा हवा खारिज होना (flatuosity) तथा अफारा (meteorism)।

R 42, शिराओं की स्थिरता; सूजी हुई तथा जलनयुक्त शिरायें।

R 31, भूख का अभाव, दुर्बलता, पीला पड़ते जाना।

समुचित मिश्रण के द्वारा बहुत पुराने रोग में भी आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 41
Sexual neurasthenia drops
यौन सम्बन्धी स्नायुओं की दुर्बलता के लिये

मूल-तत्व : एसिड फॉस D12, एग्नस कास्ट D8, चायना D12, कोनियम D30, डामियाना D6, फॉसफोरस D6, सीपिया D30, टेस्टीज़ D12.

लक्षण : यौन (sex) सम्बन्धी दुर्बलता, वीर्यस्खलन, सर्वांगीण कमज़ोरी विशेषकर पुरुषों में। कमज़ोर कर देने वाली बीमारियों, शारीरिक या अन्य स्तर पर अत्यधिक कार्य, अत्यधिक उत्तेजना, तंत्रिका सम्बन्धी थकान के परिणाम। व द्धावस्था में होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों की रोकथाम करने वाली औषधि।

क्रिया विधि : विभिन्न कारणों से ऊतक पुराने हो जाते हैं। अन्नसारिक (albuminous) परमाणुओं में छल्ले बनते दिखाई देते हैं, जिसके द्वारा पानी का विरलीकरण (rarification) हो जाता है तथा फलस्वरूप त्वचा खुश्क हो जाती है। जब ये अन्नसारिक अणु अपनी कार्य क्षमता खो देते हैं तो ये कोशिकाओं के प्रति अपनी निर्विषीकरण की भूमिका लम्बे समय तक नहीं निभा सकते। फलस्वरूप हानिकारक ऊतकों का संचय हो जाता है। होम्योपैथिक चिकित्सा ही एक ऐसा साधन है जो विषहीन कोशिका यंत्र को उद्दीप्त करती है। तथा विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना संभव हो जाता है। R 41 की संरचना इस प्रकार से की गई है, कि यह विभिन्न प्रणालियों विशेषकर यौन ग्रंथियों को प्रभावित कर सके। इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है कि उत्पादक ग्रंथियों की प्रक्रिया व्यक्ति की संपूर्ण जीवन–धारा को प्रभावित करती है।

निम्नलिखित लक्षणों के अनुसार अन्य संकेत :

एसिड फॉस्फ : नपुंसकता, कामोत्तेजना की कमी को दूर करने वाली एक बलवर्धक औषधि।

एग्नस कॉस्टस : नपुंसकता एवं कामोत्तेजना की कमी में विशेषरूप से प्रभावी। उच्च प्रभावशीलता के साथ यौन सम्बन्धी जीवन पर विशिष्ट क्रिया।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चायना : अत्यधिक संभोग किये जाने के फलस्वरूप शारीरिक द्रव्यों की कमी हो जाने की अवस्था में तथा कमजोरी लाने वाले रोगों के बाद लैंगिक गड़बड़ियां होने की स्थिति में विशेष रूप से प्रभावी सिद्ध होती है।

कोनियम : क्रोध युक्त चिड़चिड़ापन, एकाग्रता का अभाव, रोगभ्रम, विशेषकर लैंगिक आधार पर तथा बुढ़ापे की कमज़ोरी में।

डामियाना : प्रजनन सम्बन्धी अंगों को शक्ति देता है।

सीपिया : समस्त कोशिका सम्बन्धी क्रियाओं की दुर्बलता, थकान, अरुचि, संभोग की अनिच्छा की स्थितियों में कार्य करती है।

टेस्टीज़ : आंगिक–चिकित्सा पद्धति में प्रतिस्थापक (Substitute) और उत्तेजक की भाँति कार्य करती है।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 2–3 बार, भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 15 बूँदें। पुराने रोग में तथा शीघ्र परिणाम पाने के लिए, 2–3 दिनों तक 10–15 बूँदें प्रत्येक 1–2 घंटे पर ले सकते हैं।

टिप्पणी : पूरक दवा के रूप में R 19, साथ ही, थकान लाने वाली बीमारियों के बाद तथा अल्परक्तता में R 31 को प्रयोग में लाने की सलाह दी जाती है।

स्नायु टॉनिक के रूप में वीटा–सी 15, R 2 संचरण के व्यवधान के लिए, तथा हृदय की माँसपेशीय सम्बन्धी दुर्बलता में R 3, जैसा कि अधिक मदिरापान करने वालों व व द्धावस्था में मिलता है। फेफड़ों की दुर्बलता के लिए R 48, दुर्बलता तथा अवटुग्रंथि (thyroids) की अतिसक्रियता के लिए R 51.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 42

Venous stasis, varicosis, inflammation of the veins

शिराओं सम्बन्धी स्थिरता, शिरा का फैलना या सूजन, शिराओं की जलन

मूल-तत्व : एस्कुलस D30, बेलाडोना D12, कैल्शियम फ्लोर D30, कार्डुअस मैरिएनस D12, हैमामेलिस D6, प्लैसेन्टा D30, पल्साटिल्ला D30, सीकेल कौर्न D30, मेज़ीरियम D12, वाइपेरा बेरस D12.

लक्षण : शिरा सम्बन्धी स्थिरता (venous stasis), शिरा का फैलना तथा शिरा–सूजने का रोग, किसी शिरा के फैले हुए भाग का एक्ज़िमा (Varicose eczema), शिराओं में जलन, निचले अंगों की शिराओं में अवरोध, साथ ही भारीपन की अनुभूति तत्पश्चात् एक्ज़िमा एवं खुजली।

क्रिया विधि : **एस्कुलस हिप्पोकैस्टेनम :** नाड़ी फूलने और उनमें अवरोध के लिए विशिष्ट दवा।

बेलाडौना : स्थानीय जलन।

कैल्शियम फ्लोरेटम : दुर्बल ऊतकों तथा शिराओं के फूले हुए भाग पर अनुकूल प्रभाव डालती है।

कार्डुअस मैरिएनस : जाँघ (निचले भाग) पर एक्ज़िमा।

हैमामेलिस : शिरा सम्बन्धी प्रणाली के सभी प्रकार के रोगों के लिए विशिष्ट, विशेषकर प्रभावित अंगों में पीड़ा होने पर। यह शिराओं में उत्पन्न होने वाली रुकावटों को दूर करने में प्रभावी क्रिया करती है।

मेज़ीरियम : पनीले फफोलों के रूप में प्रकट होने वाली फुंसियाँ; प्रभावित भाग में ठंडक का अनुभव।

प्लैसेन्टा : रक्त–प्रवाह का उद्दीपन तथा संपूर्ण हार्मोन सम्बन्धी ग्रंथि प्रणाली का उद्दीपन करती है।

सीकेल : धमनी–शिरा सम्मिलन तथा पूर्व केशिकाओं (precapillaries) में विकार।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाइपेरा बेरस : विषाक्त प्रकृति के रोगों के साथ भारीपन की अनुभूति जैसी शिराओं की जलन तथा शिरा सम्बन्धी स्थिरता में पायी जाती है।

प्रस्तुत औषधि की सामान्य क्रिया, शिराओं की स्थिरता सम्बन्धी लक्षणों को नष्ट करने के साथ ही शिराओं की फूली हुई अवस्थाओं व उनके उत्तर प्रभावों, श्लीपद रोग तथा जाँघों के निचले भागों में पानी वाली सूजन पर होती है।

खुराक की मात्रा: लंबे उपचार के लिए प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। जलन और एक्ज़िमा में लगातार खुराक (विशेषकर, यदि बार–बार दर्द महसूस हो)। नियमानुसार प्रत्येक ½ – 1 घंटे पर 10 बूँदें।

टिप्पणी : पूरक मिश्रण :

R 1 : तीक्ष्ण जलन के लिए

R 2 : खून जमने से किसी रक्तवाहिनी की पूर्ण या आंशिक रुकावट (thrombosis) तथा सम्भावित अन्तः शल्यता (threatened embolism) के भय में हृदय के शक्ति वर्द्धन के लिए।

R 26 : शरीर से हानिकारक पदार्थों का निकास करने वाली औषधि।

R 39, R 38, तथा R 50 पेट के रोगों में अथवा प्रसव के बाद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 43

Against asthma-asthmatic constitution

दमे की औषधि

मूल-तत्व : आर्सेनिकम एल्बम D8, बेलाडोना D30, ब्रायोनिया D12, कार्बो वेज D30, कालियम फॉस. D30, हाइपोफाइसिस D30, नैट्रम. क्लोर D30, नैट्रम सल्फ. D200, वेराट्रम D30, यर्बा सैण्टा D12.

लक्षण : श्वास दमा तथा श्वासनलियों का संस्तम्भी प्रदाह (Spastic bronchitis)। श्वास दमा का सारभूत (Constitutional) उपचार।

क्रिया विधि : दमा का उपचार करते समय औषधियों द्वारा वास्तविक दौरों के उपचार की अपेक्षा, खमीरण प्रणालियों (fermenting systems) का गठनात्मक सुधार सर्वाधिक महत्व रखता है साधारणतया प्रचलित औषधियां केवल हिस्टेमीन या उसके उत्पादों का अवरोध करती हैं या उन्हें निष्क्रिय करती हैं। यह गठनात्मक सुधार केवल R 43 द्वारा होता है।

निर्दिष्ट औषधियों का व्यवहार निम्नांकित लक्षणों के आधार पर किया जाता है :

आर्सेनिक एल्ब : बेहद बेचैनी, घबराहट।

बेलाडौना : दमा–निरोधक औषधि, प्रमुखतया जब तेज आवाज के साथ खाँसी होती है और अत्यधिक पसीना आता है।

ब्रायोनिया : सूखी खाँसी में चिड़चिड़ापन, बलगम को बाहर फेंकने में कठिनाई। श्वास के साथ ताजी हवा लेना श्रम साध्य, घुटन।

हाइपोफाइसिस : जैसा नाम वैसा काम के अनुसार' पियूषिका ग्रंथि (Hypophysis) को शक्ति प्रदान करती है।

कालियम फॉस : कमजोरी दूर करती है। नाड़ियों के लिए पोषक औषधि।

नेट्रियम क्लोरैट : ऐंठन युक्त तथा सूखी खाँसी, श्लेष्मिक झिल्लियों में चिड़चिड़ापन। अवटुग्रंथि की अधिक सक्रियता जैसे रोगों में संरचनात्मक औषधि सिद्ध होती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेट्रियम सल्फ : उदजनात्मक अथवा जल–प्रक ति के शारीरिक गठन वाले रोगियों के लिए एक संरचनात्मक दवा, नम मौसम (धुंध) में रोगव द्धि होती है।

वेराट्र० एल्ब० : ठंडा पसीना तथा दमा के दौरे।

यर्बा सैंटा : श्वासनलियों का दमा सम्बन्धी प्रदाह, साथ में खाँसी और बलगम।

खुराक की मात्राः लंबे उपचार के लिए प्रतिदिन 2–3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। दौरे से मुक्त समय में यही खुराक प्रतिदिन एक या दो बार लेनी चाहिए। जैसे ही दौरे आयें, लगातार खुराक लेनी चाहिए, पहले प्रत्येक ½ घंटे पर, फिर प्रत्येक ¼ घंटे पर या प्रत्येक 5–10 मिनट पर 10–15 बूँदें। बेहतर होगा यदि थोड़े गर्म पानी में लें, जिससे प्रभाव बढ़ें।

टिप्पणी : पूरक मिश्रण जो लाभकारी हैं :

R 14, तेज़ संवेदनाओं (strong emotions) के बाद।

R 3, जब हृदय पर दबाव का अनुभव हो।

R 2, पीड़ा और धड़कन बढ़ना।

R 48, नये और पुराने रोग। दमा जैसी स्थिति।

R 45, गले की खराश व स्वरयंत्र की सर्दी।

R 6, जब श्वासनलियों का ज्वरयुक्त प्रदाह सहवर्ती हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 44

Disorders of the blood circulation (weakness)

Hypotony (low blood pressure)

रक्त संचरण के विकार (दुर्बलता)

निम्न रक्त चाप

मूल-तत्व : क्रैटेगस D1, लौरोसेरॉसस D3, ओलियन्डर D3, स्पार्टियम स्कोप. D2.

लक्षण : संचरण में दुर्बलता तथा अल्प रक्तचाप। हृदय की दुर्बलता तथा उसके बाद आलस।

क्रिया विधि : **क्रैटेगस :** हृदय की माँसपेशियों को शक्ति देने वाली प्रमुख औषधि।

लॉरोसेरॉसस : रक्त में प्रूसिक अम्ल (Prussic Acid) के शामिल होने के कारण श्वास प्रणाली में चिड़चिड़ापन।

ओलियन्डर : संचरण पर विशिष्ट क्रिया; रक्तचाप बढ़ाती है, जिसे यह नियमित करती है।

इस दवा का मिश्रित प्रभाव का ज्ञान उपचार के कुछ ही दिनों बाद होने लगता है, यह शिराओं सम्बन्धी तनाव को ठीक करता है तथा रक्तचाप को नियमित करता है।

यह दवा स्त्रियों में अल्परक्तता (anaemia) के लिए श्रेष्ठ है, जो प्रसव में रक्त–स्राव (excessive menstural bleeding) के कारण होती है, अथवा अल्प रक्तचाप की अवस्था जो इन्फ्लुएंजा जैसे संक्रामक रोगों के बाद उत्पन्न होती है। सामान्यतया हृदय की बढ़ती हुई अनियमित तान (Vegetative dystonia) के साथ रक्तचाप कम हो जाने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है।

खुराक की मात्रा: लम्बे समय तक चिकित्सा जारी रखते हुए : प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15-20 बूँदें। उग्र स्थितियों में प्रत्येक 1–2 घंटे में 10–15 बूँदें।

टिप्पणी : बार–बार पीड़ा होने पर तथा बार–बार संचरण सम्बन्धी कमज़ोरी होने पर प्रत्येक 5–10 मिनट पर 10–15 बूँदें, चाहे बिना पानी मिलाये या थोड़े गर्म पानी में। नींद नियमित होनी चाहिए; यह प्रसव के बाद कमज़ोर हो गयी युवा माताओं के लिए विशेष रूप से लाभकारी है।

पूरक दवाएें : R 31 तथा R 2.

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 45

Illnesses of the larynx and upper breathing apparatus

कंठनली तथा श्वास सम्बन्धी ऊपरी अंगों के विकार

मूल-तत्व : अर्जेण्टम नाइट्रिकम D12, आर्निका D30, ऑरम मैकूलेटम D12, कैल्शियम कार्ब हैनम D 30, फॉसफोरस D30.

लक्षण : गले की खराश अथवा बैठा हुआ गला – जैसा अक्सर गायकों, अभिनेताओं, शिक्षकों तथा वक्ताओं को प्रभावित करता है। कंठनली का नज़ला, साथ में घाव की अनुभूति।

कण्ठनली के तपेदिक तथा तंत्रिका संबंधी विकारों, जैसे गले के अन्दर हवा का गोला उठने (Hysterical ball) जैसी अवस्था में इसको अतिरिक्त दवा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है तथा इंफ्लूएन्जा में पूरक दवा के रूप में।

क्रिया विधि : **अर्जेण्टम नाइट्रिक :** कंठनली के नज़ले तथा स्वर–रज्जुओं की खारिश को कम करता है, जो स्वर पर अनावश्यक रूप से अधिक दबाव देने के कारण होता है। कण्ठनली में श्लेष्मा पर विशिष्ट क्रिया, कण्ठनली की पीड़ा और स्वरभंगता को कम करती है (गायकों, शिक्षकों, अभिनेताओं व वक्ताओं आदि के लिए)।

आर्निका : स्वर–रज्जुओं (Vocal Chords) पर पड़ने वाले अनावश्यक दबाव तथा क्षतिग्रस्त प्रभाव को नष्ट करती है, और शोथ को नियंत्रित करती है।

ऑरम मैकूलेटम : घाव की संवेदना को कम करती है, कण्ठनली की कठोरता तथा मुख के आसपास सर्दी की स्थितियों को कम करती है।

कैल्सियम कार्ब हैनम : गले की खराश (पीड़ारहित) के लिये विशिष्ट रूप से वर्णित, साथ ही नाड़ियों के पक्षाघात में भी प्रयोग होता है।

इस दवा का त्वरित और स्थायी प्रभाव होता है और उपरलिखित पेशे के लोगों में इसे सर्वाधिक उपयोगी औषधियों में से एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

औषधि माना जाता है। लम्बे समय तक इसका प्रयोग करने से स्वरयंत्र की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

खुराक की मात्राः लंबे उपचार के लिये प्रतिदिन तीन बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। गले की खराश तथा आवाज पर अनावश्यक जोर पड़ने पर बार–बार इसकी खुराक लेनी चाहिये : प्रत्येक 5–10–15 मिनट पर 10–15 बूँदें।

टिप्पणी : अनुमोदित, पूरक उत्पाद :

R 43 : दमें की स्थिति में।

R 48, तपेदिक और कण्ठनली या फेफड़े के दूसरी श्रेणी के (secondary) तपेदिक में।

R 51, नेत्रोत्सेधी गलगण्ड रोग (Basedow's disease) में।

R 47, वायुगोला होने पर (Hysterical ball) (कण्ठनली की सर्दी की अत्यधिक जटिलता की स्थिति) में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 46

In rheumatism of fore-arms and hands

बांहों तथा हाथों के आमवात में

मूल-तत्व : फेरम फॉस्फोरिकम D 12, लिथियम कार्ब D 12, नैट्रियम सल्फ्यूरिक D 30, नक्स वोमिका D 30, रोडोडेन्ड्रान D 6, स्पाईरिया अल्मेरिया D 12.

लक्षण : बांहों और हाथों का आमवात (Rheumatism) तथा गठिया होने पर, साथ में जोड़ों की सूज़न। तीव्र अवस्था में जोड़ों की सूजन और चेतनाशून्यता जो विक त अंग वाले संधिवात (arthritis) में होता है।

मौसम परिवर्तन (आर्द्रता) के साथ ऐसे दर्द लगातार बढ़ते जाते हैं। इस औषधि का उपयोग अन्य प्रकार के आमवात (rehumatism) में भी किया जाता है जैसे घुटनों का आमवात (rehumatism), कंधों का आमवात (rheumatism), त्रिकास्थि भाग (Sacral region) में दर्द, कूल्हों के जोड़ों का प्रदाह, पसलियों के बीच वात्शूल, सिर के पिछले भाग का आमवात।

क्रिया विधि : प्रस्तुत औषधि का उपयोग ऐसी ज्वरीय संक्रमणों में भी किया जा सकता है जिनकी उत्पत्ति नमी के कारण होती है या जो नमी के कारण बढ़ते हैं।

फेरम फॉस : प्रदाह रोधक, आमवात (Rheumatism) में लगातार होने वाले द्वित्तीयक रक्ताल्पता (secondary anaemia) तथा अंग विकृति वाले जोड़ों के प्रदाह (Arthritis) को प्रभावित करती है।

लिथियम कार्ब : आमवात (Rheumatism) तथा गठिया में विशिष्ट प्रभाव, साथ ही अंग विकृति वाले जोड़ों का प्रदाह (Arthritis) तथा आमवाती–गठियावाती की बीमारियों में भी।

नैट्रियम सल्फ : आमवात (Rheumatism) तथा दमा में नमी के कारण रोगव द्धि।

नक्स वोमिका : सो कर उठने पर तकलीफ का बढ़ना, तथा सुबह निम्न चेतना।

रोडोडेन्ड्रान : पुराना आमवात (Rheumatism), हाथों व पैरों में दर्द तथा मुख्यतः बाहों और हाथों की हड्डियों में।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पाईरिया अल्मेरिया : स्पंदित (Fluttering) दर्द जो कोहनी के जोड़ों पर स्थित रहे।

खुराक की मात्राः दर्द की तीक्ष्णता के अनुसार अपनाई जायेगी। सामान्यतः प्रतिदिन 2–3 बार कुछ लंबे समय तक भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें (इन्हें अन्य पूरक दवाओं के साथ विकल्प रूप में प्रयोग कर सकते हैं)। तीक्ष्ण स्थितियों में प्रत्येक 1 घण्टें पर 10 बूँदें लें। सुधार होने पर प्रत्येक 2–3 घंटे पर 10–15 बूँदें लें (साथ ही अन्य पूरक दवायें—सुबह, दोपहर और रात को)।

टिप्पणी : पूरक दवायें :

R 1, टाँसिलों में उत्पन्न दर्द अथवा हृदय शूल के बाद होने वाला जोड़ों का प्रदाह।

R 6, बुखारयुक्त संक्रमण में अथवा भीगने के बाद होने वाले इन्फ्लूएन्जा में।

R 11, सामान्यतया आमवाती (Rheumatism) संरचना में।

R 16, आधा सीसी के दर्द (migraine) और नाड़ियों के दर्द में (त्रिकास्थि भाग से आने वाला और नाक तक फैलने वाला)।

R 24, पसलियों के बीच वात्शूल (intercostal neuralgia) में।

R 50, महिलाओं की त्रिकास्थि संबंधी शिकायतों में, अंततः साथ ही कशेरुका के साथ–साथ दर्द।

प्रारंभ में केवल R 46 का प्रयोग बेहतर होता है (विशेषकर जब दर्द हाथों के जोड़ों में स्थित हो), तत्पश्चात 2 या 3 पूरक दवाओं के साथ मिलाकर दवा लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 47

All hysteric complaints

वातोन्माद या हिस्टीरिया सम्बन्धी सभी रोगों में

मूल-तत्व : एसाफोएटिडा D12, ग्लोनोइनम D12, इग्नेशिया D30, लैकेसिस D30, मोसकस D 12, कॉफिया D30, पल्साटिल्ला D30.

लक्षण : वायु गोला (Hysteric ball)। उदर से गले तक सिकुड़न तथा हलचल। शोर के प्रति संवेदनशीलता, रोगभ्रम तथा स्त्रियों में वातोन्माद (Hysteria)। अन्य वातोन्माद (Hysteria) सम्बन्धी संवेदनायें, रात में घुटन, गले में स्पंदन तथा संकुचन। मासिक धर्म से पहले रोग व द्धि।

क्रिया विधि : होम्योपैथिक चिकित्सा का मिश्रित प्रभाव जैसा कि R 47 में पाया जाता है, एक अंग या उलझे हुए लक्षणों पर विशिष्ट तरीके से कार्य करता है, विशेष रूप से वायु गोला बनना (Hysteric ball) तथा अन्य ऐसी ही स्थितियों में।

एसाफोएटिडा : गले में गोला होने की अनुभूति।

ग्लोनोइन : गले में महसूस होने वाली सशक्त नाड़ी तथा घुटन की अनुभूति। शोर के प्रति अतिसंवेदनशीलता।

इग्नेशिया : गले में दबाव की अनुभूति, वायुगोला (Hysteric ball) जो खाते या निगलते समय गायब हो जाता है। वायुगोला (Hysterical ball) तथा छाती में दबाव की अनुभूति जो अमाशय से ऊपर की ओर उठती है, विशेषकर अगले मासिक स्राव के पूर्व। अनिद्रा, अत्यधिक अधीरता।

लैकेसिस : घुटन की अनुभूति, गले के चारों ओर कपड़े का कसाव सहन नहीं होता, रात में अचानक जगा देने वाले दौरे।

मोस्कस : स्त्रियों में वातोन्मादी रोगावस्थाओं (Hysterical) में शोर तथा गंध के प्रति संवेदनशीलता।

कुल मिलाकर, R 47 स्त्रियों की इस तरह की उन सभी शिकायतों पर क्रिया करती है, जो हर उम्र में होती है, युवावस्था में और साथ ही रजोनिव त्ति काल में भी। स्पष्ट रूप से ऐसी शिकायतें अंडाशय में होने वाले क्रियात्मक व्यवधान के कारण होती हैं, जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लैकेसिस तथा अन्य मूल–तत्वों के द्वारा अवश्य प्रभावित होती है। किसी मनोचिकित्सा की तुलना में R 47 अधिक प्रभावी है, जो शिकायतों को तेज़ी से कम करता है और वे तदुपरांत गायब हो जाती हैं।

नर्तन रोग (St. Vitus' dance) में भी इसे पूरक दवा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

खुराक की मात्रा: प्रारंभ में प्रतिदिन 4–6 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें। दौरों में, प्रत्येक 15 मिनट पर यही खुराक अनुमोदित है।

टिप्पणी : पूरक मिश्रण के रूप में :

R 14, तीव्र व्यग्रता में।

R 34, कैल्शियम तत्वों की कमी तथा अतिपेशी उत्तेजना में।

स्नायुशूल में R 16, अल्परक्तता तथा थका देने वाले वाले रोगों के बाद R 31।

गले में तथा मुँह के पिछले भाग में जलन में R 1.

बैठै हुए गले (hoarseness) तथा कण्ठनली के नज़ले में R 45।

हालाँकि, स्थिति के अनुसार कोई अतिरिक्त पूरक दवा प्रयोग करने के पूर्व, कुछ दिनों तक केवल R 47 ही प्रयुक्त होनी चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 48
Pulmonary diseases
फेफड़ों के रोग

मूल-तत्व : एसिड पिक्रिन D8, ब्रायोनिया D12, डल्कामारा D30, फेरम फॉस D 12, कैलियम कार्ब D 6, लाइकोपोडियम D 30, सीपिया D 6, साइलीशिया D 30, चायना D 6, फॉसफोरस D 30.

लक्षण : फेफड़ों की दुर्बलता तथा तपेदिक रोग की प्रारम्भिक अवस्था। श्वास–दमा, पुराना फेफड़ों सम्बन्धी नजला, अत्यधिक धूम्रपान से उत्पन्न खाँसी में पूरक औषधि।

ऊपरी वायु मार्गों के सभी प्रकार के नज़ला सम्बन्धी प्रभावों में पूरक या वैकल्पिक दवा। कंधों की हड्डियों के बीच दर्द तथा दुर्बलता, बेचैनी, रात में पसीना निकलना।

क्रिया विधि : **एसिड पिक्रिन :** आलस में तथा कंधों की हड्डियों के बीच में जलन और दर्द।

ब्रायोनिया : पसलियों के निकटवर्ती फेफड़ों की झिल्ली की सर्दी व क्षोभ (irritation) को कम करती है। इसे फेफड़ों की झिल्ली के प्रदाह (Pleurisy) में देते हैं, जिसके कारण प्रायः तपेदिक (टी.बी.) रोग विकसित होता है।

डल्कामारा : जल–प्रवण शारीरिक गठन वाले व्यक्तियों में अंगों के भीग जाने से दुष्परिणाम। कंधों पर दबाव।

फेरम फॉस : ठंड लगने के बाद, ऊपरी वायु मार्गों की उत्तेजना तथा लगातार खाँसी होने पर। श्वासनलियों के ज्वरयुक्त प्रदाह (Bronchitis) तथा श्वासनलियों के इर्द–गिर्दहोने वाले प्रदाह (Peribronchitis) के साथ श्वासनली से जुड़े फेफड़ों को केन्द्रित करते हुए फेफड़ों के तपेदिक साथ में ज्वरीय तथा उपज्वरीय तापमानों में।

शारीरिक द्रव्यों के नष्ट हो जाने तथा कमजोरी देने वाली बीमारियों के बाद सामान्य बलवर्धक औषधि। फेफड़ों सम्बन्धी रोगों,-निमोनिया तथा तपेदिक में चुनींदा प्रभाव।

कैलियम कार्ब : रात में आने वाला पसीना तथा कंधों की हड्डियों के बीच की कमज़ोरी रोकने में, जैसी तपेदिक पूर्व लक्षणों में अक्सर होती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लायकोपोडियम : लीवर के लिए प्रभावशाली, शरीर के बीमार अंगों से विषाक्त पदार्थ निकालने में सहायक सिद्ध होती है। भूख बढ़ाती है।

सीपिया : शारीरिक संरचना पर सामान्य प्रभाव, शरीर के लिए सामान्य बलवर्धक औषधि (Tonic)। बेचैनी, कमज़ोरी, शक्ति का अभाव, थकान का अवरोधक।

साइलीशिया : फेफड़ों के शोथ तथा फेफड़ों की वायु कोष्ठिका की जलन में प्रभावी।

यह दवा मुख्यतः संरचनात्मक दुर्बलता पर कार्य करती है। विशेषकर फेफड़ों की तथा तपेदिक पूर्व कमज़ोरी की स्थितियों में।

तपेदिक में इसका प्रयोग बलवर्धक औषधि के रूप में तथा शरीर के संरचनात्मक सुधार में किया जा सकता है।

श्वास दमा तथा सर्दी आदि से होने वाली कमज़ोरी में भी इसका प्रयोग पूरक औषधि के रूप में कर सकते हैं।

खुराक की मात्रा: सामान्यत, प्रतिदिन तीन बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। पीठ के दर्द में दवा की यही खुराक प्रत्येक 5–10 मिनट पर लें।

टिप्पणी : पूरक दवायें :

R 43, दमा में।

R 6, इंफ्लुएंज़ा तथा बुखार में।

R 24, पसलियों के निकट स्थित फेफड़ों की झिल्लियों की तथा फेफड़ों की झिल्लियों के शोथ में।

R 32, थकाने वाले पसीने में, विशेषकर रात में आने वाले।

R 34, फेफड़ों के विकार स्थानिक केन्द्र (focal centre) में कैल्सीकरण सुधारने के साथ बच्चों में हाइलस (hilus) ग्रंथि को आक्रांत करने वाली टी.बी. के उपचारार्थ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 49

Acute and chronic catarrh, sinusitis

तीव्र एवं पुराना नज़ला, नाक का प्रदाह

मूल-तत्व : आर्सेनिक एल्ब D12, कैल्शियम कार्ब D30, सिन्नाबेरिस D12, कैलियम बाइक्रोम D12, मर्क. सोल. D30, पल्साटिल्ला D12, सीपिया D12, सल्फर D30.

लक्षण : नाक के तीव्र एवं पुराने नजले में तथा ऊपरी जबड़े से संबंधित साइनस (Maxillary sinus) में, साइनस का प्रदाह (Sinusitis)। बच्चों में नाक के अंदर मांस बढ़ जाना। स्वाद एवं गंध का मालूम न पड़ना।

क्रिया विधि : **आर्सेनिकम एल्बम :** सामान्यतया पुराने रोगों के साथ, निराशा।

कैल्क० कार्ब० हैनेम : श्लेष्मिक झिल्ली की सूजन, कोई गम्भीर रोगावस्था (Pastoesem habitus), ग्रंथियों की सूजन (उदाहरणार्थ, बच्चों के स्क्रोफुला में) में संरचनात्मक औषधि। पीब बनना, श्लेष्मिक झिल्ली में पीब युक्त जलन।

सिन्नाबेरिस : मैक्सिलरी साइनस में तथा माथे के नज़ले में।

कैलियम बाइक्रोमिकम : चमकदार व चिपचिपे श्लेष्मा (नाक तथा मैक्सिलरी साइनस से) के निस्सारण में सहायक। श्लेष्मिक झिल्ली की उत्तेजना की पुरानी स्थितियां, पुराना नजला तथा बलगम बनने की पुरानी शिकायत।

पल्साटिल्ला : ऊपर वाला समान प्रभाव, ताजी हवा में सुधार।

खुराक की मात्रा: तीव्र स्थितियां में प्रत्येक 1–2 घंटे पर थोड़े पानी में 10 बूँद लें। पुरानी स्थितियों में रोज 3–4 बार 10–15 बूँदें लें।

टिप्पणी : इंफ्लुएंज़ा के दौरान या उसके बाद R 6 का अतिरिक्त प्रयोग करना चाहिए।

R 45, गले की खराश में तथा स्वरयंत्र की सर्दी में।

खाँसी में R 8/R 9 तथा फेफड़ों की झिल्ली के प्रदाह (Pleurisy) एवं पसलियों के बीच वातशूल में R 24 लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 50
Gynecological sacroiliac complaints, Pains in sacral region (women)
स्त्री रोग एवं त्रिकश्रोणि सम्बन्धी रोगों में

मूल-तत्व : ऐसकुलस D6, सिमिसिफ्यूगा D4, कोलोसिंथिस D6, नैट्रम क्लोरेट D30, नक्स वोमिका D30, फाइटोलैका D8, स्ट्रोंशियम कार्ब D12.

लक्षण : त्रिकास्थि भाग में विभिन्न प्रकार के दर्द, जो मुख्यतः पेट के रोगों के परिणामस्वरूप होते हैं। रीढ़ की हड्डी में दर्द, अनिश्चित कारणों से उत्पन्न त्रिकास्थि सम्बन्धी तकलीफें। दर्द कशेरूका खण्डों से होते हुए सिर तथा नाक की नोक तक जाता हुआ, कभी–कभी पेट के अंगों में भी। गति के समय पीड़ा बढ़ जाती है किंतु रात में या आराम करते समय तीव्र हो सकती है।

त्रिकास्थि भाग में बार–बार दर्द श्वेत–प्रदर के पुनः विषकारी उपचारों जैसे दहन क्रिया के उपचार आदि से होता है।

क्रिया विधि : **ऐसकुलस :** चीरने वाले दर्द (बवासीर की भाँति), त्रिकास्थि तक फैलते दर्द।

कोलोसिंथिस : त्रिकास्थि (sacral) भाग में तेज़ दर्द, टाँगों तक फैलता दर्द।

सिमिसिफुगा : स्त्री–जननांगो पर विशिष्ट प्रभाव। मासिक स्राव के पूर्व वक्ष में उठने वाले दर्द को रोकती है। पेट के अंगों के सम्बन्ध में त्रिकास्थि भाग सम्बन्धी तकलीफों पर, पीठ और सिर और नाक तक फैलते दर्द पर विशिष्ट क्रिया।

खोपड़ी की हड्डियां टूट जाने अथवा मस्तिष्क के आघात के बाद होने वाले दर्द में भी प्रभावशाली हो सकती है।

पुट्ठों (tendons) और हड्डियों को जोड़ने वाले स्नायुओं के आमवात (rheumatism) में अनुकूल प्रभाव।

नेट्रियम क्लोरेट : त्रिकास्थि भाग के दर्द, साथ में कब्ज़ियत तथा कँपकँपी, अन्ततः सुबह के समय छींक तथा अधीरता युक्त अति संवेदनशीलता।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाइटोलैका : त्रिकास्थि अंगों में साइटिका (Sciatica) जैसा दर्द, टाँगों तक फैलता दर्द, त्रिकास्थि भाग में कमज़ोरी (विशेषकर खड़े होते समय), कटि प्रदेश में कुचले जाने की अनुभूति।

स्ट्रोंशियम कार्ब : विभिन्न प्रकार के जोड़ों के प्रदाह तथा आमवात (rheumatism), मुख्यतः नितम्ब और कूल्हे के जोड़ों में पीड़ा।

खुराक की मात्रा: लंबे उपचार के लिए, प्रतिदिन 3–4 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें लें। बार–बार होने वाले तीव्र दर्द में तथा उनके बढ़ जाने पर, थोड़े समय के लिए (½ से 1 घंटे) प्रत्येक 5–10 मिनट पर 10–15 बूँदें लें। प्राथमिक प्रतिक्रिया (रोग व द्धि) पर उपचार 1–2 दिनों के लिए रोक देना चाहिए, तत्पश्चात् 1–2 दिनों तक 5–10 बूँद लेनी चाहिए। उपचार के बाद, पूरी तरह दर्द समाप्त होने के बाद भी पुनः दर्द होने से बचने के लिए कम से कम 3 माह तक दिन में 1–2 बार 5–10 बूँदें लेना जारी रखें।

टिप्पणी : पूरक दवायें :

R 38, पेट शोथ में (दाहिनी ओर)।

R 39, पेट शोथ में (बाँयीं ओर) और रसौली में।

R 37, कब्ज़ियत आँतीय सुस्ती, पेट फूलने में (लगातार बढ़ने वाले त्रिकास्थि सम्बन्धी दर्द)।

R 31, दुर्बलता तथा अल्परक्तता में।

R 16, अर्धकपाली या आधाशीशी के दर्द (migraine) में।

R 20, अंडाशय के क्रियात्मक व्यवधान में।

R 13, बवासीर में।

R 10, जब रजोनिव त्ति के समय दर्द हो।

R 28, मासिक धर्म के समय दर्द में।

R 11, सामान्य आमवाती (Rheumatic) संरचना में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 51
Thyroid intoxication
थायरॉयड विषाक्तता

मूल-तत्व : बेलाडोना D 30, आयोडम D 30, लाइकोपस वर्जिन D 12, नैट्रम क्लोरेट D 30, हैकला लावा D 12, लैपिस एल्बस D12.

लक्षण : अवटुविषाक्तता (Thyreotoxicosis), नेत्रोत्सेधी गलगण्ड (Base-dow's Disease), आँख के गोले का फैलाव (exoph-thalmia), थायरॉयड ग्रंथियों का विषीकरण (intoxication), साथ में हाथों में कँपकँपी, "नेत्रोत्सेधी गलगण्ड नेत्र (goggle-eye)", पसीना, अन्ततः दस्तों की शिकायत होना तथा शरीर कमजोर होते जाना।

क्रिया विधि : R-51 के मूल–तत्व विषाक्त थायरॉइड ग्रंथियों (toxicated thy-roid glands) के निर्विषीकरण (detoxication) का कार्य करते हैं।

बेलाडोना : मुख्य लक्षण : "नेत्रोत्सेधी गलगण्ड नेत्र (goggle-eye)", पसीने के दौरे, तेज़ नाड़ी।

हैकला लावा तथा लैपिस एल्बस : तंतु गलगंड (fibrose struma) की संरचना के लिए प्रभावशाली।

आयोडम : आयोडीन की अत्यधिक सक्रियता के कारण थायरॉयड ग्रंथियों की अतिक्रिया विधि में विशिष्ट प्रतिक्रिया। इस विशिष्ट स्थिति में, दवा होम्योपैथिक नहीं बल्कि समोपचारिक (Isopathic) तरीके से कार्य करती है।

लाइकोपस विर्जिनीकस : तेज नाड़ी तथा ह्रदय की तेज गति जैसी अवस्थायें जो अधिकांशतः थायरॉयड सम्बन्धी विषाक्तता में पाये जाते हैं।

नैट्रम क्लोरेट : ह्रदय की बढ़ी हुई धड़कन, दुर्बलता, चिड़चिड़ापन आदि में प्रभावी औषधि। थायरॉयड की प्रक्रिया पर नियमनकारी प्रभाव दवा की सामान्य प्रक्रिया का लक्षण है।

खुराक की मात्रा: प्रथम 8 दिनों में, प्रतिदिन 4 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। बाद में 8 दिनों तक, प्रतिदिन 3 बार, फिर दिन में दो बार वही खुराक लें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिप्पणी : कुछ रोगियों में, जो दवाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं, उच्च तनूकरण के उपरान्त भी प्राथमिक प्रतिक्रिया हो सकती है, ऐसी स्थितियों में लगभग 2–3 दिनों के लिए उपचार रोक देना चाहिए। इस दौरान निम्नलिखित दवाओं का प्रयोग कर सकते हैं :

R 31, निस्सारण तथा कमज़ोरी में।

R 4, अतिसार में।

R 2, सशक्त नाड़ी में।

साथ ही, स्नायु–तन्त्रिकाओं के लिए हमारी दवाऐं, R 36, तथा R 33 अनुमोदित हैं।

यह स्पष्ट है, कि आयोडाइज़्ड नमक के साथ किया गया कोई उपचार अथवा आयोडीन का कोई प्रयोग, साथ ही हार्मोन्स (थायरॉयड ग्रंथि) का प्रयोग रोक देना चाहिए, क्योंकि इनके कारण रोग तीक्ष्ण रूप से बढ़ सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 52

Vomiting, nausea, travel sickness

उल्टी, मतली, यात्रा रोग

मूल-तत्व : एथूज़ा D6, एपोमॉर्फिन हाइड्रो. D12, कोकुलस D12, कोल्चीकम D12, इपेकाक. D8, नक्स वोम. D30, पेट्रोलियम D12, वेराट्रम D30.

लक्षण : मतली (nausea), जी मिचलाने की अनुभूति (जैसे वाहन चलाते समय या उड़ान भरते समय), समुद्री यात्रा की बेचैनी, गर्भावस्था में मतली (शामक प्रभाव)। अन्य विकारों के कारण उत्पन्न उबकाई जैसे संवहन की कमज़ोरी, क्षय या कुपोषण के शिकार बच्चे या जठरीय अम्लपित्त आदि।

नवजात शिशुओं तथा बच्चों द्वारा एसिटोनीय उल्टी। शराब पीने वालों की सुबह उठने पर उल्टी तथा पेट की सर्दी। ठंडा पसीना तथा मतली विशेषकर संवहन की दुर्बलता में तथा पित्त शूल के पूर्व। गुर्दों में दर्द के साथ उल्टी में, अंडाशय में व्रण के कारण उल्टी में, आँतीय मरोड़ तथा शूल, अफारा के साथ मतली और उल्टी में पूरक औषधि है।

क्रिया विधि : **ऐथूज़ा साइनेप :** जठरीय अम्लता (Gastric Catarrh) के साथ मतली और उल्टी की इच्छा होने पर विशिष्ट क्रिया, बच्चों और स्तनपान करने वाले शिशुओं में भी।

एपोमोर्फिन हाइड्रो : विभिन्न प्रकार की उल्टी में विशिष्ट दवा! सगर्भता के दौरान प्रचुर मात्रा में उल्टी होने की अवस्था में लक्षणों के अनुरूप कार्य करती है।

कोल्चिकम : उल्टी की प्रव त्ति तथा भोजन की गंध से मतली।

इपिकाकुआन्हा : उल्टी और मतली, जिसमें अत्यधिक शराब पिये जाने तथा धूम्रपान किये जाने के कारण प्रातःकालीन उल्टी भी शामिल है।

पेट्रोलियम : गतिशील वस्तुओं आदि को देखने से (यात्रा के दौरान) होने वाली मतली।

वेराट्रम : संवहन सम्बन्धी कमज़ोरी साथ में सन्निपात। चक्कर आना तथा पसीना।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्राः गर्भावस्था, समुदी यात्रा की बेचैनी, उपांत्र (Appendix) की जलन, पित्ताशय की जलन, ऑतीय मरोड़, संवहन में कमज़ोरी, नवजात शिशुओं में पेट की सर्दी आदि में मतली के साथ उल्टी की प्रव त्ति में सामान्यतः जल्दी–जल्दी खुराक लेनी चाहिए, प्रत्येक 5–10 मिनट पर 10–15 बूँदें (संभव हो तो थोड़े गर्म पानी में या बिना पानी मिलायें जैसे वाहन चलाते समय हाथ में लेकर ही)। इस दवा के तकलीफ देह प्रभाव का कोई डर नहीं होता क्योंकि यह लीवर के लिए नुकसानदेह नहीं होती, जबकि इसके विपरीत, यह उद्दीपक के रूप में कार्य करती है। अधिक से अधिक, प्रारंभ में विषैले भोजन को ग्रहण करने के बाद उल्टियाँ बढ़ सकती हैं। जैविक द ष्टिकोण से यह प्रतिक्रिया अस्वाभाविक नहीं है।

टिप्पणी : पूरक दवायें :

R 2, संवहन की दुर्बलता में।

R 4, हल्के हैजा में।

R 7, लीवर और पित्ताशय के प्रभावित होने पर।

R 16, आधा सिर के दर्द (Migraine) के कारण होने वाली उल्टी में।

R 37, आँतीय शूल और मतली में।

R 9, काली खाँसी में।

रक्त संचार विकारों में : R 67

ह्रदय सम्बन्धी वितालता में : R 66

गुर्दे सम्बन्धी रोग में : R 64

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 53
Acne vulgaris, Rash at puberty
यौवनारंभ में मुँहासे, दानें

मूल-तत्व : अमोनियम ब्रोमैटम D12, ब्रोमम D 12, हैपर सल्फ D30, जुग्लैन्स D30, कालियम ब्रोमैट D12, लेडम D30, नेट्रियम ब्रोमैट D12, नेट्रियम क्लोरैट D 200, वॉयोला–ट्राई. D 12, प्लेसेंटा D12.

लक्षण : यौवनारंभ में मुँहासे, फुंसियाँ, त्वचा पर पीब वाले मुंहासे (दानें), एक्जीमा तथा चमड़ी का प्रदाह।

क्रिया विधि : मुँहासे तथा फुंसियाँ यौवनारंभ पर तब होते हैं, जब उत्पादक सम्बन्धी ग्रंथियों की क्रियाशीलता अपर्याप्त होती है। इस कारणवश, इस मिश्रण के सत्त्वों तथा चूर्ण का प्रयोग लाभकारी है संयोजी ऊतकों पर इसकी संरचनात्मक क्रिया के कारण तथा उत्पादक सम्बन्धी ग्रंथियों के उद्दीपन पर इसका समुचित प्रभाव होता है।

ब्रोमम तथा ब्रोमाइन नमक जैसे मूल–तत्व का चयनित तथा विपरीत प्रभाव होता है, जो त्वचा रोगों में "ARNDTSCHULZ" के नियम के अनुसार होता है।

जुग्लैन्स : मुँहासे पर विशिष्ट प्रभाव विशेषकर युवा लड़कियों के चेहरों पर। फुंसियाँ तथा कीलें।

लेडम : पीबयुक्त दानों पर विशिष्ट प्रभाव होता है।

हैपर सल्फ : पीबयुक्त कीलों में क्रिया करती है,

नेट्रियम क्लोरैट : विशिष्ट रूप से क्रिया करती है, जब मुँहासे खोपड़ी तक सीमित हों।

वायोला ट्राईकलर : स्वेदराज़िका (छोटे–छोटे दानें), पीबयुक्त फुंसियाँ होने के साथ पपड़ियां बनना, सारे शरीर में उभरे हुए छोटे–छोटे दानें निकलना, विशेषकर चेहरे तथा कानों पर। तेज़ खुजली। खून साफ करने वाली औषधि।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। पीब बहने की तीक्ष्ण अवस्था तथा जलन में यही खुराक प्रत्येक 1–2 घंटे पर लें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्तमान दवा का प्रभाव व्यर्थ न जाए इसके लिए विषीकृत पदार्थों को ग्रहण न करना सबसे महत्वपूर्ण होगा, विशेषकर शूकर माँस, बकरी की रान का पिछला हिस्सा, हैम तथा किसी भी प्रकार की सॉसेजेस को। ये तत्व पीब बनाने में तथा मुँहासे के बनने में सहायक होते हैं। सॉसेज का एक छोटा टुकड़ा भी वर्तमान दवा के प्रभाव पर घातक प्रभाव डाल सकता है।

टिप्पणी : पूरक दवायें :

R 1, पीब बनने की प्रक्रिया उग्र हो तो।

R 19, या R 20 ग्रंथीय उत्पादक सम्बन्धी प्रणाली की क्रिया को शक्ति प्रदान करने के लिए।

R 31, खून की कमी, भूख का अभाव तथा अत्यंत थकान (आमतौर पर युवा लड़कियों में पाई जाने वाली)

इसके साथ ही, आँतीय प्रक्रिया को नियमित करना भी महत्वपूर्ण होगा। इसके लिए, R 37 का सेवन करें।

खून साफ करने के लिए : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 60 की भी दिन में दो बार 10–15 बूँदें लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 54

Functional disturbances of the brain

मस्तिष्क के क्रियात्मक रोग

मूल-तत्व : एनाकार्डियम D 6, आर्सेनिकम एल्बम D 30, बेलाडोना D 12, जेल्सेमियम D 12, कालियम फॉस D 6, लाइकोपोडियम D30, सीपिया D 8, फॉसफोरस D6.

लक्षण : प्रमस्तिष्कीय कार्यकलापों में गड़बड़ी, स्मरण शक्ति की दुर्बलता। स्कूली बच्चों का त्रुटिपूर्ण आध्यात्मिक विकास व एकाग्रता का आभाव (lack of concentration), विरक्ति, आलस्य व थकान।

क्रिया विधि : इस योगिक में दिमागी कार्य क्षमता को सुधार लाने वाली औषधियों का मिश्रण है। प्रत्येक दवा के लक्षणों की सूची निम्नलिखित हैं :

एनाकार्डियम : स्मरणशक्ति की दुर्बलता में विशेष उपयोगी।

आर्सेनिक एल्ब : प्रमस्तिष्कीय रक्ताल्पता में सहायक, कोशिका सम्बन्धी प्रक्रिया को शक्ति प्रदान करने वाली।

बेलाडोना : प्रमस्तिष्कीय रक्त संचय (congestion) होने पर।

जेल्सेमियम : सिर चकराने में।

कालियम फॉस : प्रमस्तिष्कीय प्रक्रिया की सामान्य बलवर्धक औषधि। स्नायु–तन्त्रिकाओं के लिए श्रेष्ठ पोषक दवा।

लाइकोपोडियम : यह बच्चों के अनियमित विकास को नियमित करने वाली सर्वाधिक प्रभावशाली औषधि है; लीवर की निर्विषीकरण प्रक्रिया पर अपने प्रभाव के द्वारा अत्यंत प्रभावशाली।

सीपिया : थकान और जड़ता का रोधक, कार्य में अरुचि।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 3–4 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। सुधार के बाद यही खुराक प्रतिदिन 2–3 बार।

टिप्पणी : संपूरक दवायें :

R 33, मिरगी की प्रव त्ति के लिए

R 36, हल्के प्रकार के कम्पन और नर्तन रोग तथा बच्चों की अधीरता में शांतिकारक प्रभाव।

R 31, खून की कमी में।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 55

All kinds of injuries, healing effect on wounds

सभी प्रकार की चोटों, घावों का इलाज

मूल-तत्व : आर्निका D 3, बेलाडोना D 4, कैलेंडुला D 3, एकीनेशा एंगस्ट D 3, हैमामेलिस D 4, रस टॉक्स D 6, रूटा D 6, सिम्फाइटम D6.

लक्षण : सभी प्रकार की चोटें, हड्डी टूट जाना (fracture), संधिच्युति अथवा हड्डी का अपनी जगह से हट जाना (dislocation), मोच, मस्तिष्क का आघात, बंदूक की गोली या तेज़ शस्त्र से लगा घाव, साथ में रक्त स्राव। बुखार युक्त संक्रमण, रक्त विषाक्तता (blood toxemia) में पूरक दवा के रूप में प्रयोग की जा सकती है, तथा सामान्यतः इसके उद्दीपनकारी प्रभाव के द्वारा जीव की बचावकारी शक्ति में व द्धि होती है।

प्रस्तुत औषधि इन परिस्थितियों में भी प्रभावशाली कार्य करती है, जैसे अत्यधिक खेलना कूदना, शरीर पर अत्यधिक दबाव पड़ना, जैसे मजदूरों द्वारा अधिक भार उठाकर ले जाना (जिसमें हृदय पर भारी दबाव पड़ना) तथा शरीर के उन भागों में आमवात (Rheumatism) के दौरान जिनमें पुरानी चोट लगी हो या किसी प्रकार का घाव रहा हो।

क्रिया विधि : **आर्निका :** धमनी प्रणाली पर क्रिया करती है, रक्त संचरण पर नियमनकारी प्रभाव, अवरोध दूर करती है।

बेलाडोना : जलन रोधी।

कैलेन्डुला : विशेषकर खुले घावों में।

इचिनेशिया : जलन तथा विषाक्त जटिलताओं को दूर करती है।

हैमामेलिस : रक्तस्राव तथा शिराओं की स्थिरता।

रस टॉक्स : अत्यधिक थकान के परिणाम एवं स्थान–च्युति (joint disclocation), जोड़ो के उतर जाने पर।

रूटा : अनावश्यक कठोर परिश्रम में।

सिम्फायटम : फ्रेक्चर अथवा हड्डी टूट जाने में प्रभावी।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्रा: गहरी चोट में 10-15 बूदें थोड़े पानी में मिलाकर या बिना मिलाए हर 10-10 मिनट बाद।

फ्रेक्चर (हड्डी टूटने पर) पहले दिन प्रत्येक 15 मिनट बाद, दूसरे दिन प्रत्येक 30 मिनट बाद, तीसरे दिन प्रत्येक एक–एक घंटे बाद 15 बूंदें लें। उसके बाद 10-15 बूंदें रोजाना 3-6 बार संभवतः भोजन से पहले लें।

इन्फलुएंजा और ह्रदय की शिकायतों में (अधिक श्रम करने पर) रोग के अनुसार प्रस्तुत औषधि को अन्य पूरक औषधियों के साथ अदल–बदल कर 15-30 मिनिट के अंतर से प्रयोग करें।

टिप्पणी : प्रभावकारी पूरक औषधियां :

R 3 दिल की माँसपेशियों की कमजोरी में।

R 6 ज्वर युक्त संक्रमण में।

R 11 आमवात (Rheumatism) में।

R 46 हाथों पर चोट लगने पर।

R 16 आधासीसी (Migraine) और स्नायु–शूल में।

मूर्च्छा आने की आशंका हो तो R 67 को भी दें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 56
Vermifuge
पेट के कीड़ों को बाहर निकालने वाली औषधि

मूल-तत्व : आर्टेमिसिया वल्गा D 1, सिना D 4, फिलिक्स D 3, ग्रेफाइट्स D 30, मर्कर० सब० कोर० D 6, टैनेसेटम वल्गा D 1.

लक्षण : सभी प्रकार के कीड़े (Worms), छोटे आंतीय कीड़े तथा लम्बे सूत्रीय कीड़े। फीताक मि द्वारा माँस के सड़ने–गलने वाली प्रक्रिया की अवस्था में एक सहायक औषधि।

क्रिया विधि : R 56 तेज़ क्रियाशील कृमिनिस्सारक नहीं है। इसका कार्य विशिष्ट रूप से इस परजीवी सम्बन्धी तकलीफ के सहवर्ती (concomitant) लक्षणों को दूर कर संरचनात्मक सुधार लाना है। इस प्रकार, शरीर को स्थाई रूप से क मि मुक्त करना संभव हो जाता है तथा उनकी पुनराव त्ति रुक जाती है। एकल दवाओं के लक्षणों की सूची निम्नलिखित है :

आर्टीमिसिया वल्गेरिस : जिनके पेट में कीड़े हों उन बच्चों के पेट में मरोड़ होने पर।

सिना : पीले मुरझाये हुए बच्चे, जिनकी आँखों के चारों ओर गहरे रंग के घेरे होते हैं। सोते समय दाँत किटकिटाना, जल्दी चौंक जाना, अंग फड़फड़ाना, नाक में खुजली करना। लम्बे कीड़ों (ascarides) को विशेष रूप से नष्ट करती है।

फिलिक्स मास : बड़े कीड़े विशेषकर फीता क मि (Tape worms) को नष्ट करने वाली औषधि।

ग्रेफाइट्स : संरचनात्मक दवा (constitutional remedy)। अत्यधिक भूख, लालसा, अफारा, पेट फूलना, कब्ज।

मर्कुरिस सब० कोर० : ऐंठन के साथ आँत की श्लेष्मा–झिल्लियों में जलन। रात में चिपचिपा पसीना।

टेनासिटम वल्गेयर : रात में शुरु होने वाला, कृमि–कारक संक्रमण, सहज ही भयभीत हो जाना।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्राः प्रतिदिन 2–3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। रोग प्रत्यावर्तन रोकने के लिए संपूर्ण उपचार के 4–6 सप्ताह बाद R 56 की उपर्युक्त खुराक पुनः लेनी चाहिए।

टिप्पणी : आंतों के दर्द में : R 37 भी लें।

लीवर सम्बन्धी शिकायत में : R 7 से तुलना करें।

पाचन क्रिया की तकलीफों में : R 5 से तुलना करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 57
Pulmonary Tonic
फेफड़ों को शक्ति देने वाली औषधि

मूल-तत्व : आर्सेनिकम आयोडेटम D 6, कैल्शियम कार्बोनिकम हैनीमैनी D 30, लाइकोपोडियम D 30, साइलीशिया D 30, ट्यूक्रियम D 6, फॉसफोरस D30.

लक्षण : म दु–ऊतक सम्बन्धी अंगों, विशेषकर फेफड़ों की कमज़ोरी, जिसका ज्ञान लगातार पीठ की कमज़ोरी, रात में पसीना आना, सर्दी के प्रति संवेदनशीलता, रक्त संचार में गड़बड़ियां (जैसे ठण्डे पैर) भूख का अभाव, पीलापन तथा रक्त की कमी के कारण चेहरा मुरझा जाना जैसे लक्षणों से होता है।

क्रिया विधि : सम्मिश्रण में दो समूहों की दवायें शामिल हैं। एक समूह श्वासनलियों की (Bronchial) श्लेष्मिक झिल्लियों पर अपना प्रभाव डालता है, और दूसरा समूह, जिसमें संरचनात्मक दवायें शामिल हैं, बहुत कमजोर और कफोत्पादक स्वरूप के लिए लाभप्रद होती हैं। इस प्रकार, तपेदिक के प्रति संवेदनशीलता को कम करना संभव होता है तथा आंतरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को उत्तेजित करके किसी भी वर्तमान संक्रमण को कम करता है।

आर्सेनि़कम आयोडेटम : शक्ति बर्धक औषधि, भूख बढ़ाती है।

कैल्क० कार्ब० हैनेम : दोबारा कैल्शियम बनने की प्रक्रिया में समान रूप से प्रभावी सिद्ध होती है, ऊतकों में अतिरिक्त द्रव को बाहर निकालती है।

लाइकोपोडियम : यक त (liver) की गतिविधि बढ़ाती है, भूख बढ़ाती है, यक त (liver) की निर्विषीकरण (detoxicating) प्रक्रिया को सुधारती है।

साइलीशिया : फेफड़ों के कठोर कैंसरमयी विकार के स्थानिक केंद्र पर दोबारा कैल्शियम बनाने में प्रभावशाली भूमिका अदा करती है।

ट्यूक्रियम : फेफड़ों सम्बन्धी रोगों, फेफड़ों के निमोनिया तथा तपेदिक रोगों में विशिष्ट औषधि।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्राः सामान्यतः प्रतिदिन 2–3 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10–15 बूँदें, अन्ततः अन्य दवाओं के साथ अदल–बदल कर भी ले सकते हैं।

टिप्पणी : अनुमोदित पूरक दवायें :

R 31, अल्परक्तता में।

R 32, रात में पसीना आने पर।

R 26, निस्सारक उद्दीपक के रूप में।

R 43, दमा सम्बन्धी संरचना में।

R 8, तथा R 9, खांसी और सर्दी के लिए।

मधुमेह के साथ फेफड़ों सम्बन्धी कमज़ोरी में R 40 का भी प्रयोग करें।

.क़ेवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 58

Against hydrops, stimulates the renal function

जलशोथ रोधक, गुर्दे की क्रिया को तेज करने वाली औषधि, हृदय एवं गुर्दों की पुरानी बीमारियों के लिए

मूल-तत्व : एडोनिस वर्नालिस D 2, कॉनवेलेरिया मेज D 2, क्रैटेगस D 1, डिजिटेलिस D 3, हेलेबोरस D 4, सिला D 2.

लक्षण : हृदय की माँसपेशियों की दुर्बलता तथा टाँगों की पानी वाली सूजन एवं जलीयशोथ (Oedema) प्रकट होना। हृदय की माँसपेशियों की दुर्बलता के कारण पेट में लगातार पानी भर जाने की शिकायत और गुर्दों की पुरानी बीमारियों (chronic renal failure) विशेष प्रभावकारी।

गुर्दे के जलीयशोथ में भी प्रभावकारी हो सकता है।

क्रिया विधि : प्रस्तुत औषधि की प्रमुख प्रभावशाली क्रिया शरीर के विभिन्न जलीयशोथग्रस्त अंगों से पानी बाहर निकालना है जिनका निकास हृदय की माँसपेशियों की दुर्बलता के कारण, हृदय रोगों के कारण या संक्रामक रोगों के कारण भलीभांति नहीं हो पाता।

एडोनिस वर्नालिस : डिजिटैलिस के समान ही बिना किसी हानिकारक प्रभाव के इसकी ग्लाइकोसिड जैसी प्रतिक्रिया होती है। हृदय की तालहीन अवस्था तथा बढ़ी हुई हृदय की धड़कन में भी इसके प्रभाव से पेशाब खुलकर आता है।

कॉनवेलेरिया : हृदय को शक्ति देने वाली औषधि।

क्रैटेगस : हृदय की रक्त वाहिकाओं की क्रिया को बढ़ाती है।

डिजिटेलिस : हृदय की माँसपेशियों की शक्ति को बढ़ाती है।

हेलेबोरस : मूत्रवर्द्धक तत्वों को पुनः शक्तिशाली बनाती है।

सिला : विशेष रूप से एक मूत्रनिस्सारक औषधि है। जलशोथ, फेफड़ों की झिल्ली के प्रदाह के निःस्रावी स्वरूप तथा हृदय की पूर्ण तालहीन अवस्था में भी निर्दिष्ट है। सामान्य प्रभाव के रूप में हृदय की माँसपेशियों की शक्ति बढ़ाती है तथा रक्त संचरण को नियमित करती है। सिला का अतिरिक्त औषधि के रूप में

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयोग द्वारा गुर्दों के क्रियात्मक दोषों के कारण होने वाले जलीय शोथ, गुर्दे का प्रदाह तथा गुर्दों की रुकावट में कभी–कभी अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं, सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा यदि तरल पदार्थों का अवशोषण कम से कम किया जाए।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन तीन बार भोजन के पूर्व या बाद, 15–20 बूँदें। तीक्ष्ण स्थितियों में, प्रतिदिन 6 बार थोड़े पानी में 20–30 बूँदें लें। सुधार के बाद, खुराक कम करके प्रतिदिन 2–3 बार 10–15 बूँदें लें।

टिप्पणी : संपूरक दवायें :

R 2, सभी स्थितियों में।

R 3, ह्वदय के माँसपेशी सम्बन्धी व्यवधानों तथा कुसंचरण में।

R 12, उच्च रक्तचाप तथा अंगों के कड़ेपन में।

R 19 अथवा R 20, ग्रंथि सम्बन्धी व्यवधानों में, विशेषकर रजोनिव त्ति के समय।

R 59, मोटापे में जिसके कारण, ह्वदय की माँस पेशियों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है।

R 37, पेट का अफारा, साथ में पेट तथा ह्वदय की लक्षण सम्बन्धी जटिलता।

R 40, मधुमेह में।

गुर्दो में पानी भर जाने पर : R 64 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 59

Against obesity, slimming effect

मोटापा रोधक; मोटापा घटाने में प्रभावी

मूल-तत्व : कैल्शियम कार्ब० हैनेम D 12, फ्यूकस वेसिकुलोस D 2, ग्रेफाइट्स D 12, नेट्रियम सल्फ्यूरिक D 2, क्रोटोन टिगलियम D 4, स्पाँजिया D 3.

लक्षण : मोटापा (आवश्यकता से अधिक चर्बी), ग्रंथियों से होने वाले स्राव की त्रुटिपूर्ण क्रिया के कारण वज़न बढ़ने की प्रव त्ति (Obesity due to harmonal imbalance)।

प्रारंभिक गलगण्ड (incipient goitre) को रोकने में भी प्रयोग किया जा सकता है।

क्रिया विधि : लाभकारी प्रभाव जैसा कि फ्यूकस वेसिकुलोसस तथा स्पोंजिया के आयोडीन जैविक मिश्रण से प्राप्त होता है। यह थायरॉयड ग्रंथियों की क्रिया को अत्यधिक उत्तेजित करता है तथा गलगण्ड के निर्माण के विरूद्ध कार्य करता है। हम इस चिकित्सकीय संमूल–तत्व में संरचनात्मक उद्दीपक, **ग्रेफाइट्स** तथा **कैल्क० कार्ब०** जैसे होम्योपैथिक चूर्ण के साथ–साथ **नेट्रियम सल्फ,** (यक त का क्रियात्मक उद्दीपक) तथा **क्रोटोन टिगलियम,** (आँतों के क्रियात्मक उद्दीपक) को जोड़ते हैं।

पूर्ण रूप से, प्रस्तुत दवा की क्रिया का प्रस्तुतिकरण ऊतकों के उपापचय तथा दहन कार्य पर उद्दीपनकारी प्रभाव पड़ने वाला होता है तथा साथ ही साथ ऊतकों में व्याप्त अतिरिक्त द्रव्य की मात्रा का निकलने तथा अवटु ग्रंथियों (thyroid glands) के कार्य पर नियमनकारी प्रभाव करता है।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 2–3 बार, तीव्र स्थितियों में 4–5 बार, थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। प्रारंभ में (5–6 दिन) जल्दी–जल्दी तथा ज्यादा खुराक लेनी चाहिए। तदुपरांत, प्रतिदिन 2–3 बार 8–10 बूँदें लें।

बच्चों में, उम्र के अनुसार खुराक कम कर लें (5–8–10 बूँदें)।

टिप्पणी : पूरक दवायें :

R 10, रजोनिव त्ति काल में, साथ ही R 19 या R 20.

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

R 2, ह्रदय की कमजोरी में।

R 27, व क्कीय क्रिया का उद्दीपक।

R 40, साथ ही मधुमेह बाहर निकलने में।

R 31, साथ ही हरित्पाण्डुरोग (chlorosis) में।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 60

Blood purifier

रक्तशोधक (खून साफ करने की दवा)

मूल-तत्व : अरेनिया डाय. D12, कोनियम D30, फ्युमेरिया ऑफ D6, हैपर सल्फ D12 गैलियम D12, जुगलैंस D6, मायोसोटिस D6, सरसापैरिला D6, स्क्रोफुलेरिया D6.

लक्षण : रक्त की अशुद्ध अवस्थाऐं, अस्वच्छ त्वचा जैसे मुँहासे, लसिका (lymph) ग्रंथियों की सूजन, रक्त–शोधक (खून साफ करने वाली) दवा। देह द्रवी रचना का सर्वांगीण सुधार, जैसे रक्त एवं रोग की सभी अवस्थाओं में विशेष रूप से लम्बी बीमारियों में काम आने वाले अन्य जैवीय द्रव्यों में सुधार। कण्ठमाला रोग।

क्रिया विधि : प्रस्तुत औषधि का शरीर के उन प्रमुख अंगों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जो रक्त एवं लसिका ग्रंथियों पर कार्य करते हैं, आंतरिक रोग–प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा कर संयोजी ऊतक अधिक अवरोधक हो जाते हैं।

कोनियम : ग्रंथियों की व द्धि तथा कठोर होना। कंपन और पसीने के साथ हाथ पैरों की पक्षाघात जैसी कमजोरी।

गेलियम एपैराइन : सामान्य विकृति। गर्मियों के फोड़े, (tropic ulcers of boils) मूत्रवर्द्धक।

हैपर सल्फ : पस, फोड़े तथा व्रणों द्वारा निष्प्राणित किए गए ऊतकों की स्वस्थ होने या घाव भरने की प्रक्रिया (healing) को बढ़ाती है। कंठमाला रोग, लसिका (lymph) ग्रंथि की सूजन, रक्त की अशुद्धताऐं।

जुगलैंस रेगिया : रक्त शोधक अथवा खून साफ करने वाली औषधि।

सरसापैरिला : एक्ज़िमा से पीड़ित बच्चों का देर से विकास।

स्क्रोफुलेरिया नोडोसा : लसिका ग्रंथियों की कण्ठमाला सूजन, लसिका सम्बन्धी संरचना (द्रवीय संरचना)। नमी के प्रति अति संवेदनशीलता, ठंडे नम मौसम में सभी लक्षणों में व द्धि।

खुराक की मात्राः प्रतिदिन 2 या 3 बार भोजन के पूर्व पानी में 5–15 बूँदें लें। उम्र के अनुसार बूँदें दें। पुरानी बीमारी में प्रतिदिन 1 या 2 बार।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिप्पणी : रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए, विशेषकर पुराने रोगों में, R 26 से तुलना करें।

एक्ज़िमा में : R 23 तथा R 21

रसौलियों में : R 17

अल्परक्तता में : R 31 से तुलना करें।

अत्यधिक पसीना निकलने में : R 32

फेफड़े के तपेदिक में : R 48 तथा R 57

सामान्य मुँहासे में : R 53 से तुलना करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 62

Inflammation of mucous membranes
(Measles drop)
श्लेष्मिक झिल्लियों की सूजन
(खसरा की औषधि)

मूल-तत्व : ऑरम ट्राइफाइलम D3, बेलाडोना D4, फेरम फॉस्फोरिक D8, मर्क. सोल. हेनेम D8, पल्साटिल्ला D4.

लक्षण : श्लेष्मिक झिल्लियों की सभी प्रकार के शोथ को कम करने के लिए, विशेषकर आँखों की शोथ, खसरा।

क्रिया विधि : इस मिश्रण की सभी दवायें श्लैष्मिक झिल्लियों की शोथ को कम करती हैं। तीव्र और चिरकालिक सुधार करती हैं।

इस मिश्रण के प्रयोग से बड़ी मात्रा में जटिलतायें नियंत्रित हो जाती हैं।

ऑरम ट्राइफ : प्रदाह ग्रस्त श्लेष्मिक झिल्लियों में ज्वलनशील तथा सुई चुभने जैसा दर्द, साथ ही आँखों में जलन और त्वचा पर दाने और खसरा।

बेलाडोना : तीक्ष्ण जलन, ज्वरावस्थायें, सिर की रक्त संकुलता, सूखी श्लेष्मिक झिल्लियाँ, विशेष रूप से ऊपर श्वास प्रणाली को प्रभावित करती है।

फेरम फॉस तथा मर्क० सोल० : सर्दी–जुकाम के कारण होने वाले रोग, रोशनी सहन न होना (Photophobia), चिपचिपा पसीना।

खुराक की मात्रा: तीव्र (Acute) स्थिति में लगातार खुराक दोहराना अनिवार्य होता है। प्रारंभ में प्रत्येक ½ से 1 घंटे के अंतराल पर 8 से 10 बूँदें पानी में दें। छोटे बच्चों को पानी में 3 से 5 बूँदें दें। सुधार होने पर, खुराक घटाकर 1 से 2 घंटे पर लें।

टिप्पणी : रोग मुक्ति के बाद स्वास्थ्य लाभ के लिए : R 31

यदि इंफ्लुएज़ा से बीमारी जटिल हो जाये तो R 6 की साथ में तथा अदल–बदल कर अनुमोदित करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टांसिल्स के शोथ अथवा कान के मध्य भाग के शोथ में : R 1 के साथ या अदल–बदल कर अनुमोदित करें।

नाक के प्रदाह में : R 49

जब जरा भी दाने न निकलें अथवा बहुत धीमे निकले, R 23, बीच में प्रतिदिन 2 या 3 बार 8–10 बूँदें लें।

श्वासनलियों का प्रदाह (Bronchitis) : अतिरिक्त औषधि के रूप में जटसिन ड्रॉप R 9 या सिरप R 8 लें।

फेफड़ों का संभावित रोग : R 62 के साथ प्रतिदिन 3 या 4 बार R 48 दिया जा सकता है।

फेफड़ों की तपेदिक की प्रव त्ति में : R 57 प्रतिदिन 1 या 2 बार 8 से 10 बूँदे देनी चाहिए।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 63

Drops for impaired circulation

रक्त प्रवाह में रुकावट के लिए औषधि

मूल-तत्त्व : एड्रिनैलिन D 6, एस्कुलस D 2, क्यूप्रम एसेटिक D 6, पोटेन्टिला एन्सेरिना D 2, सीकेल कोर्नट D 4, टेबेकम D 4, वेराट्रम D 6.

लक्षण : परिसरीय रक्त वाहिनियों में गड़बड़ी, शाखा–अपसंवेदन अथवा सुन्नपन (acroparaesthesia), विरूपति अंतर्वाहिकाशोथ (endangitis obliterans), रुक–रुक कर लंगड़ापन अथवा टाँगों में रुक–रुक कर होने वाली पीड़ा, तनाव और कमज़ोरी (Intermittent claudication), उँगली की धमनियों की दौरे के रूप में प्रकट होने वाली ऐंठन (Raynaud's disease), पिंडली की माँसपेशियों में ऐंठन, शिराओं की बीमारियाँ।

क्रिया विधि : **एड्रेनेलीन :** ऐंठन कम करने वाली (spasmolytic) रक्तवाहिकाओं की मांसपेशियों की परत पर कार्य करती है।

ऐसकुलस : शिराओं की रक्त संकुलता, विशेषकर वास्तविक श्रोणि (Pelvis) में।

क्यूप्रम एसेटिक : मांसपेशियों की स्वैच्छिक अथवा अनैच्छिक ऐंठन युक्त संकुचन, पिंडली की पेशियों में ऐंठन।

पोटेन्टिला : विभिन्न प्रकार की ऐंठन, पिंडली की पेशियों में ऐंठन।

सीकेल कार्न : मधुमेह के रोगियों में माँस गलना (Gangrene), हाथ–पैरों में सुन्नपन तथा अपसंवेदन (Paraesthesia), सर्दी की संवेदना के साथ ऐंठन या किसी भी संवेदना का अभाव।

टैबेकम : दुर्बलता तथा चींटियां रेंगने की अनुभूति के साथ समस्त प्रत्यंगों में ऐंठन।

वेराट्रम : पूरे शरीर में ठंडक की संवेदना, पिंडली की माँसपेशियों में ऐंठन, सुन्नपन तथा किसी भी संवेदना का अभाव।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व पानी में 10–15 बूँदें। तीव्र स्थितियों में प्रारंभ में प्रत्येक 1 से 2 घंटे पर 10 बूँदें लें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिप्पणी : मधुमेह सम्बन्धी रक्तनलिकाओं के किसी रोग में : R 40 भी लें।

धमनियों की कठोरता होने पर : R 12 भी लें।

शिरा सम्बन्धी स्थिरता अर्थात् किसी शिरा का फैला हुआ भाग (Varicositis) में : R 42 भी लें।

हृदय शूल (Angina-pactoris) में : R 2 से तुलना करें।

सायटिका के कारण होने वाले सुन्नपन में : R 71 से तुलना करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 64

Albuminuria drops

पेशाब में अलब्यूमिन या धात जाने पर

मूल-तत्व : हेलोनियास डॉयका D 3, कालियम आर्सेनिक D 4, फॉस्फोरस D 6, प्लंबम मेटालिक D 12, सोलिडेगो वर्जि. D 2.

लक्षण : पेशाब में अल्ब्यूमिन व धात जाना या प्रोटीन जाना, गुर्दे का रोग, गुर्दों का पुराना प्रदाह, गुर्दों का कड़ापन।

क्रिया विधि : इस मिश्रण के विभिन्न मूल–तत्व उन लक्षणों का उपचार करते हैं, जो विशेष रूप से मूत्र–जनन सम्बन्धी मार्ग की शोथ के अंतिम चरणों में पाये जाते हैं।

हेलोनियास डॉयका : दुर्बलता, पीठ दर्द, गुर्दे के भाग में दबाव तथा फैलने वाले दर्द।

कैलियम आर्सेनिक : गुर्दों के पुराने प्रदाह के साथ जलशोथ (Oedema), हृदय सम्बन्धी रोग।

फॉसफोरस : कमजोरी, कोमल ऊतकों का विनाश (Parenchymal degeneration)। पेशाब की जाँच में प्रोटीन और रक्त मिलता है तथा बेलनाकार पपड़ियां मिलती हैं। गुर्दों का पुराना प्रदाह, गुर्दों की दवा के रूप में विशिष्ट औषधि।

प्लंबम मेट : मूत्र की घटी हुई मात्रा, मूत्र में प्रोटीन जाने के साथ गुर्दों की कोशिकाओं तथा ऊतकों का बढ़ता हुआ अपजनन व क्रियात्मक विनाश (Hypotrophy)।

खुराक की मात्रा: भोजन के पूर्व प्रतिदिन 3 बार पानी में 10–15 बूँदें। उपचार के प्रारंभिक चरण में उपचार को बार–बार दोहरायें।

टिप्पणी : गुर्दों के नये व पुराने प्रदाह में : R 1 से तुलना करें, साथ ही R 6 से। बार–बार गुर्दों की तकलीफ होने में बेहती सुधार होता है, यदि R 1 के साथ R 64 का प्रयोग करें।

मूत्राशय तथा गुर्दों में पीब बन जाने के कारण होने वाले दर्द (Cysto Pyelitis) में : R 18 के साथ R 1 की तुलना करें।

गुर्दे की पथरी में : R 27 से तुलना करें तथा यदि आवश्यकता हो तो R 1.

मूत्राशय के प्रदाह के साथ प्रोस्टेट में रसौली पाई जाने पर : R 25 से तुलना करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 65

Psoriasis

सोरियासिस की औषधि

(त्वचा पर लाल चकत्तों के लिए)

मूल-तत्व : बर्बेरिस एक्विफोलियम Ø, कैल्शियम कार्बोनिकम हैनेमनी D 30, ग्रेफाइट्स D 12, हाइड्रोकोटाइल एशियाटिका D 2, नेट्रियम क्लोरैटम D 30, आर्सेनिकम एल्बम D12.

लक्षण : सामान्य सोरियासिस (Psoriasis), एक्जिमा जैसा सोरियासिस।

क्रिया विधि : सभी चुनी हुई सारभूत औषधियां त्वचा विकारों पर प्रभावी ढंग से कार्य करती हैं।

बर्बेरिस एक्विफोलियम : इस औषधि ने सोरियासिस (Psoriasis) में अपनी उपयोगिता को सिद्ध किया है।

कैल्क० कार्ब० हैनेम : कण्ठमाला (Scrofulous) सम्बन्धी प्रवणता, गोरा, मोटा, ढ़ीली–ढ़ाली माँसपेशियों वाला रोगी, विकृत पोषण।

ग्रेफाइट्स : मोटा–ताज़ा, सुन्दर रोगी। त्वचा में कई स्थान पर खुरदरे, कठोर तथा लगातार उत्पन्न होने वाले खुश्क भाग। दानों में से चिपचिपा स्राव।

हाइड्रोकोटाइल एसिआटिका : परतों की पपड़ियाँ उतरने के साथ अधिचर्म सम्बन्धी परतों का अत्यधिक मोटा होना। परतदार किनारों के साथ गोलाकार धब्बे।

नेट्रियम क्लोरैटम : ढ़ीली–ढ़ाली माँसपेशियों वाले, कमज़ोर रोगी जो, थायरॉयड की अति क्रियाशीलता की ओर प्रव त्त होते हैं। त्वचा में अधिक चर्बी बनने के कारण पपड़ी झड़ते रहना।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 2–3 बार भोजन के पूर्व पानी में 10–15 बूँदें। स्थिति के अनुसार दवा की अवधि को घटाया–बढ़ाया जा सकता है।

टिप्पणी : यदि R 21 साथ में दिया जाये तो R 65 की क्रिया का प्रभाव बढ़ेगा।

सोरियासिस संरचनात्मक सम्बन्धी एक अत्यंत गंभीर रोग है, जिसके उपचार में समय और धैर्य की आवश्यकता होती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

R 21 जैसी संरचनात्मक दवाओं के द्वारा प्रतिक्रिया होने में समय लगता है।

यदि लक्षण समान हों, तो एक सप्ताह तक प्रतिदिन R 23 की 10–15 बूँदे पानी में मिलाकर R 65 के साथ भी दे सकते हैं।

अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से होने वाले दोषपूर्ण स्राव को नियमित करने के लिए R 19 या R 20 का भी प्रयोग कर सकते हैं। एक सप्ताह तक प्रतिदिन एक बार 10–15 बूँदें देनी चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 66

Cardiac arrhythmia drops

अनियमित ह्रदय गति के लिए

मूल-तत्व : ऐम्मि विश. D2, आईबेरिस अमारा D3, लियोनुरस कार्डियाका D2, ओलियन्डर D3, स्पार्टियम स्कोपेरियम D2, सम्बुलस मोस्केटस D2.

लक्षण : ह्रदय के अपजनन सम्बन्धी रोग उपरान्त, ह्रदय की ताल तथा संवहन के विकार, मॉयोकार्डाइटिस (mycarditis) और एन्डोकॉर्डाइटिस़ (endocarditis) के बाद की ह्रदय स्थिति, ह्रदयाघात के पश्चात, सामान्य से अधिक धड़कन, ह्रदय कमजोर पड़ना, एडम स्टोक्स सिन्ड्रोम (Adamstokes syndrome)।

क्रिया विधि : प्रत्येक घटक दवा एक दूसरे की पूरक है तथा उनकी ह्रदय की माँसपेशियों एवं ह्रदय के संवहन पर विशिष्ट प्रक्रिया होती है।

ह्रदय धमनी (Coronory) रक्त प्रवाह को बढ़ाती है, फलस्वरूप ह्रदय की माँसपेशियों में ऑक्सीजन की पूर्ति में सुधार होता है।

आईबेरिस अमारा : तनिक भी कार्य करने से धड़कन बढ़ना, दिल में दर्द होने के साथ अलिन्दी (atrial) फड़फड़ाहट तथा अनियमित नाड़ी, स्नायविक उत्तेजना।

लियोनुरस कार्ड० : शान्तिदायक प्रभाव द्वारा ह्रदय की मांस पेशियों को शक्ति प्रदान करती है।

ओलियन्डर : तेज़ धड़कन तथा ह्रदय में चाकू घोंप दिए जाने जैसा दर्द, दिल की धड़कन का बढ़ना, फिर कम होना; कभी--कभी नब्ज लुप्त हो जाना। ह्रदय धमनी (Coronory) में रक्त प्रवाह बढ़ाती हैं, तत्पश्चात् ह्रदय की माँसपेशियों के प्रति ऑक्सीजन की पूर्ति सुधारती है।

सम्बुलस मोस्केटस : हल्का सा परिश्रम करते ही ह्रदय की धड़कन अत्यधिक तेज हो जाती है, धड़कन गुम होना या अनियमित होना।

स्पार्टियम स्कोपर : तेज़ अनियमित धड़कन, ज्यादातर लुप्त नाड़ी भी।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्रा: तीव्र स्थितियों में लगातार ¼ से 1 घंटे पर 10 बूँदें पानी में लें। स्वस्थ होने के लिए (लंबे उपचार के लिए) प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व 10–15 बूँदें लें।

टिप्पणी : तीव्र (Acute) हृदय की माँसपेशियों का प्रदाह तथा हृदय की अंदरूनी पेशियों के प्रदाह में : R 22 से तुलना करें।

हृत्पेशियों सम्बन्धी कमी तथा हृत्पेशियों सम्बन्धी विघटन : R 3 से तुलना करें।

दिल के दर्द में : R 2 से तुलना करें।

हृत्पेशियों का अंदरूनी भाग गल जाने पर : R 67 तथा R 55

क्षतिआपूर्ति न होने वाले हृदय की अवस्था में : R 58 से तुलना करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 67
Drops for circulatory debility
रक्त परिसंचरण की क्षीणता के लिए

मूल-तत्व : अमोनियम कार्बोनिक D 2, एसिड हाइड्रोसायनिक D 6, कार्बो वेजिटेबिलिस D 30, क्रोटेलस कैसकावेला D 12, टैबाकम D 6, वेराट्रम D 4, कैम्फर D2.

लक्षण : संचार प्रणाली के तीव्र रोग, संचाराघात, हृत्पात (cardiac failure) के बाद हृदय जनित आघात, संक्रामक रोग तथा चोट के तत्पश्चात् संचरण सम्बन्धी व्यवधान। पुराना संचरण सम्बन्धी व्यवधान, साथ में गहरी बेहोशी (Syncope) की प्रव त्ति, सिर चकराना तथा असंतुलन की अनुभूति।

क्रिया विधि : सभी घटक दवायें रक्त–संचार को सुधारती हैं तथा हृदय को सशक्त करती हैं।

अमोनियम कार्ब० : कमज़ोर तेज़ नाड़ी, साथ में पसीना निकलना तथा म त्यु का भय।

एसिड हाइड्रोसायनिक : हृदय जनित आघात साथ में बर्फ सा ठंडा पसीना और श्वास बन्द हो जाने जैसी अनुभूति। गहन मूर्च्छा और आकस्मिक निपात (collapse).

कार्बोवेज : छाती में जलन जैसे कोयले जल रहे हों, साथ में कमज़ोरी तथा धड़कन बढ़ना। उखड़ा हुआ श्वास, व्याकुलता। संचरण सम्बन्धी निपात (Collapse) साथ ही ठंड़ा पसीना, चेहरे पर पीलापन तथा शरीर नीला पड़ जाने में शक्ति संचारक। लगभग अद श्य नाड़ी।

क्रोटेलस कास्कावेला : हृदय सम्बन्धी अपर्याप्तता साथ में आघात की प्रव त्ति, जो विशेषकर जीवाणु–गत विषों के कारण होती है। संक्रामक अवयवों के बाद रक्त संचरण सम्बन्धी बाधा।

टैबाकम : प्रायः अद श्य नाड़ी, साथ में चेहरे में पीलापन, ठंडा पसीना तथा मतली।

वेराट्रम : संपूर्ण संचरण सम्बन्धी आघात, ठंडा पसीना, अद श्य नाड़ी, ठंडे नीले हाथ, उठने पर मूर्च्छा (Orthostatic)।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुराक की मात्रा: तीव्र संचरण सम्बन्धी आघात में प्रत्येक ¼ से ½ घंटे पर दोहरायें। यदि आवश्यक हो, तो प्रत्येक 5 मिनट पर पानी के साथ या बिना पानी के 10–15 बूँद दें। एक बार सुधार शुरू हो जाने पर दवा को कम दोहरायें। पुराने संचरण सम्बन्धी व्यवधान में विभिन्न समया– वधि पर प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व 10 से 15 बूँद दें।

टिप्पणी : तीव्र मॉयोकार्डियल इन्फार्कशन (Myocardial infarction) में बिना देरी किए निम्नलिखित तीन दवायें दें : R 67, R 55, R 2, प्रारंभ में रोग की गंभीरता के अनुसार प्रत्येक 5–10 मिनट पर तीनों दवाओं को बारी–बारी से दें। तत्पश्चात् धीरे–धीरे दवाओं के बीच का समय अंतराल ½ से 1 से 2 घंटे तक बढ़ायें।

रोगी में सुधार होने पर और पुनः आघात न होने पर, R 3 और R 2 बारी–बारी से दें, ताकि ह्रदय की माँसपेशियों की क्षति को स्थायी रूप से बचाया जा सके। संचरण सम्बन्धी बाधा रजोनिव त्ति (menopause) के दौरान होने पर R 10 दें।

अल्प तनाव (hypotonic) की स्थिति में R 67 के साथ R 44 बारी–बारी से दें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 68
Shingles drops
हर्पीज ड्रॉप्स

मूल-तत्व : क्रोटोन टिग. D6, मेज़ेरियम D3, नेट्रियम क्लोरेटम D6, रस टॉक्स D4.

लक्षण : परिसर्पीय दाद में (Herpes Zoster)। चेचक जैसे दानें निकलना (Varioform)।

क्रिया विधि : इस मिश्रण की सभी दवायें हर्पीज ज़ोस्टर (Herpes Zoster) में होम्योपैथिक रूप से उपचार करती हैं :

मेज़ेरियम : त्वचा पर रिसावदार फफोले, साथ में उनके चारों ओर लाल घेरे, खुजली तथा नाड़ियों में जलन और दर्द।

नेट्रियम क्लोरेटम : होठों पर प्रकट होने वाली दाद (Herpes).

रस टॉक्स : त्वचा पर अत्यधिक खुजली करने वाली फुंसियाँ तथा फफोले। त्वचा लाल और पीड़ायुक्त होती है। त्वचा पर असंख्य लाल आधार वाले, जलन भरे तथा सुई जैसी चुभन वाले फफोले।

खुराक की मात्रा: तीव्र (Acute) स्थिति में प्रारंभ में ½–1 घंटे पर 10 बूँदें थोड़े पानी में दें। प्रत्यक्ष सुधार दिखने पर खुराक कम करके 2–3 घंटे पर 10–15 बूँदें कर दें।

टिप्पणी : छाती या धड़ के चारों ओर होने वाली दाद (Herpes) : R 68 के साथ R 69 भी बारी–बारी से लें, थोड़े पानी में 10 बूँदें ½–1–2 घंटे पर। सुधार शुरू होने पर खुराक कम कर दें। यदि सम्बन्धित लसिका ग्रंथियाँ बढ़ गयी हैं तो R 68 के साथ में R 1 भी दें, प्रतिदिन 1–2 बार थोड़े पानी में 10–15 बूँदें।

हर्पीज़ ज़ोस्टर (Herpes Zoster) के साथ नाड़ियों में दर्द होने पर : साथ ही R 69 और R 70 दें।

दुर्लभ स्थितियों में, तीनों मिश्रणों को बारी–बारी से प्रत्येक 1–2 घंटे पर थोड़े पानी में 10–15 बूँदें देना अनिवार्य होगा; सुधार शुरू होने पर खुराक कम कर दें। एटोमेयर–बेकरॉन R 30 का भी प्रयोग कर सकते हैं। तीक्ष्ण और पुराने एक्ज़िमा में: R 23 से तुलना करें। चेचक जैसे दानों में R 6 भी साथ दें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 69

Drops for pain between the ribs

पसलियों के बीच होने वाले दर्द के लिए

मूल-तत्व : आर्सेनिक एल्ब D12, कोलोसिंथिस D12, रैनन्कुलस बल्ब D2, रस टॉक्स D30.

लक्षण : पसलियों की अन्दरूनी नाड़ियों का दर्द।

क्रिया विधि : सभी घटक दवायें पसलियों के बीच के भाग के निम्नलिखित होम्योपैथिक लक्षणों को प्रदर्शित करती हैं:

आर्सेनिक एल्ब : ज्वलनशील पीड़ा, गर्म पट्टी रखने से आराम। आधी रात में रोग बढ़ता है।

कोलोसिंथिस : नाड़ियों में बिजली कौंधने जैसे अथवा स्नायविक दर्द। पसलियों के बीच में दर्द।

रैनन्कुलस बल्ब० : वक्ष–प्राचीर से अंगोपचारिक सम्बन्ध सहित तेज दर्द। व्यग्रता, के साथ सम्बन्धित वातशूलीय–संधिवातीय दर्द, लगातार गतिशील रहने से आराम महसूस होता है।

खुराक की मात्रा: तीव्र दर्द : 1/2–1 घंटे के अंतराल पर थोड़े पानी में 10–15 बूँदें। सुधार आरंभ होने पर आव त्ति को कमकर के 1–2–3 घंटे कर दें। रोग–की पुनराव त्ति को रोकने के लिए कुछ अधिक समय तक दवा लेते रहना चाहिए: प्रतिदिन एकबार 10–15 बूँदें।

टिप्पणी : हर्पीज़ ज़ोस्टर (Herpes Zoster) की उपस्थिति में अथवा यदि पहले कभी इससे पीड़ित हुए हों, तो साथ में R 68 प्रत्येक ½–1–2 घंटे पर बारी–बारी से दें।

त्रिधारीय नाड़ी अथवा चेहरे की नसों में दर्द : साथ ही अतिरिक्त औषधि के रूप में R 70 भी दें।

सायटिका में : R 71 से तुलना करें।

फेफड़ों की झिल्ली के प्रदाह में : साथ ही अतिरिक्त औषधि के रूप में R 24 भी दें।

पसलियों के बीच की नाड़ियों के दर्द के कारण छाती की रीढ़ की हड्डियों के जोड़ों के प्रदाह में : R 11 भी दें।

अपजनित चक्रों के घावों और अस्थि–उपास्थियों के प्रदाह में : R 11 से तुलना करें।

स्थानिक लेप के लिए ऐटोमेयर–बेकरॉन R 30 का प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 70
Neuralgia drops
स्नायु-शूल के लिये

मूल-तत्व : एकोनाइटम D4, सेड्रॉन D4, कोलोसिंथिस D6, काल्मिया D3, वर्बेसकम D2.

लक्षण : विभिन्न भागों में होने वाला नाड़ीशूल। त्रिधारीय नाड़ी का दर्द तथा चेहरे की नाड़ियों में दर्द। नस–नाड़ियों का प्रदाह।

क्रिया विधि : सभी घटक दवाओं का नाड़ियों से सम्बन्धी दर्द पर होम्योपैथिक असर होता है, विशेषकर सिर की नाड़ियों (Cranium) से सम्बन्धित।

सेड्रॉन : दर्द के नियतकालिक दौरे अक्सर बाँयी ओर तथा आँखों के उपरी भागों में।

कोलोसिंथिस : ऐंठन वाले तथा चीरने वाले दर्द, लगातार आँखों के निचले भागों में महसूस किये जाते हैं खासतौर से बाँयी आँख तक फैल जाते हैं।

काल्मिया : अचानक तेज दर्द तथा जलन, अक्सर दाहिनी ओर, आँखो के ऊपरी भाग में।

वर्बेसकम : समय–समय पर आँखों के निचले तथा ऊपरी भागों से सम्बन्धित नाड़ी शूल, जलन भरे दर्द, सूखे ठंडे मौसम में अनाव त होने के फल स्वरूप अपसंवेदन (सुन्नपन) तथा चेतना का अभाव।

खुराक की मात्रा: तीव्र पीड़ा में : प्रत्येक 1/4 से 1/2 घंटे पर थोड़े पानी में 10 बूँदें। पुनराव त्ति रोकने के लिए, थोड़े लंबे समय के लिए प्रतिदिन भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 10-15 बूँदें R 70 लेते रहें। दिन में तीन बार।

टिप्पणी : निम्नलिखित मिश्रण विकल्प या पूरक के रूप में उपयोगी सिद्ध हुए हैं : नाक के प्रदाह (Sinusitis) की उपस्थिति में प्रत्येक 1 से 2 घंटे पर R 70 के साथ R 49 बारी–बारी से दें।

सिर और भौंहों में स्नायु पीड़ा : R16 के साथ बारी–बारी से प्रयोग करें।

पसलियों की अंदरूनी नाड़ियों के दर्द में : R 60 से तुलना करें।

सायटिका में : R 71 से तुलना करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाड़ीशूल के कारण होने वाले जोड़ों की आमवाती पीड़ा में : R 11 का भी प्रयोग करें।

कंधों और ऊपरी अंगों के दूरस्थ भागों जैसे हाथों में संधिवात होने पर : R 46 से तुलना करें। स्थानिक लेप के रूप में ऐटोमेयर–बेकरॉन R 30 का प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 71
Sciatica drops
सायटिका (नस का दर्द) ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एकोनाइटम D4, आर्सेनिक एल्ब D30, कोलोसिंथिस D4, नेफेल्यिम पॉलिसेफेलम D3, मैग्नेशियम फॉस D8.

लक्षण : कशेरुकीय चक्रों (Vertebral discs) का अपने स्थान से हट जाने के परिणामस्वरूप होने वाला सायटिका। अपसंवेदन (सुन्नपन), टाँगों में चींटी चलने जैसी रेंगन।

क्रिया विधि : **एकोनाइटम :** सूखी ठंडी हवा के कारण सर्दी–जुकाम। टाँगों में रेंगन तथा पीड़ा। अपसंवेदन (सुन्नपन), विशेषकर रात में।

आर्सेनिक एल्ब : ज्वलनशील दर्द, विशेषकर आधीरात में। गर्म पट्टी रखने से आराम।

कोलोसिंथिस : तेज दर्द, जो तनिक भी गतिशील होने पर, ठण्ड से अथवा स्पर्श करने से भी बढ़ जाते हैं। सायटिक नस के साथ मरोड़ जैसा चलने वाला दर्द।

नैफेलियम पॉलिसेफेलम : रेंगन (formications) के साथ नस की जड़ में दर्द। बैठने से आराम।

मैग फॉस : रात्रिकालीन दर्द, गर्म पट्टी रखने से तथा दबाव से आराम।

खुराक की मात्रा: तीव्र स्थिति में प्रारंभ में प्रत्येक 1/4 से 1/2 घंटे पर थोड़े पानी में 8-10 बूँदें दें। सुधार शुरु होने पर इसे घटा कर प्रत्येक 1-2 घंटे पर 10-15 बूँदे कर दें।

टिप्पणी : कशेरुकीय चक्रों (Vertebral discs) के खिसकने पर या रीढ़ की हड्डियों के जोड़ों के प्रदाह में R 11 की 10-15 बूँदें प्रतिदिन 3-4 बार, साथ में देनी चाहिए।

भीग जाने के बाद होने वाले सायटिका में : अतिरिक्त औषधि के रूप में प्रतिदिन 3 बार R 11 की 10-15 बूँदें भी दें।

मधुमेह की उपस्थिति पर : R 40 से तुलना करें।

पसलियों के बीच का वातशूल : R 69 से तुलना करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फॉस्फोरस : अमाशयिक लक्षण, तेल जैसा पखाना, रोग की उन्नत अवस्थाओं में शरीर की चर्बी का क्षय होना।

खुराक की मात्रा: पाचन रस थैली के प्रदाह में तथा पाचन रस थैली के रोगों में : प्रतिदिन 3-4 बार थोड़े पानी में 10-15 बूँदें।

टिप्पणी : पेट के ऊपरी भाग में दर्द तथा जठरीय लक्षण अस्पष्ट रहने पर : अतिरिक्त औषधि के रूप में प्रतिदिन 1-2 बार R 5 भी साथ दें।

लीवर तथा पित्ताशय के लक्षणों में : अतिरिक्त औषधि के रूप में प्रतिदिन 1-2 बार R 7 भी साथ में दें।

जब दर्द बढ़कर तीव्र बन जायें, तो तीक्ष्ण पाचन रस थैली के प्रदाह का संदेह होता है ऐसे में (क) प्रतिदिन 4-6 बार 10-15 बूँद R 1 दें, (ख) प्रतिदिन 3 बार भोजन के पूर्व 10-15 बूँद R 72 दें।

आराम मिलने पर खुराक कम कर दें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 73
Drops for the joints
जोड़ों के दर्द के लिए

मूल-तत्व : एसिड सल्फ्यूरिकम D6, अर्जेन्टम D12, आर्निका D4, ब्रायोनिया D4, कॉस्टिकम हैनेमनी D12, लेडम D3.

लक्षण : हड्डियों के जोड़ों के आसपास प्रदाह युक्त सूजन (Osteo-arthritis), विशेषकर बड़े जोड़ों का, घुटने तथा कूल्हे के जोड़ों का प्रदाह, कशेरुकाओं (Vertebrae) की हड्डियों के जोड़ों का प्रदाह।

क्रिया विधि : इस मिश्रण के मूल–तत्व विशेषरूप से उपास्थियों की कार्य प्रणाली को प्रभावित करते हैं। सुनिश्चित सुधार प्रारंभ होने के लिए लंबे समय तक उपचार आवश्यक हैं। इसकी श्रेष्ठतम व्याख्या इस तथ्य से हो सकती है कि जोड़ों के आसपास की प्रदाह युक्त सूजन (osteo arthritis) एक क्रमिक विघटनकारी प्रक्रिया है।

एसिडम सल्फ : विभिन्न जोड़ों में दर्द (arthralgia)। उपास्थियों की कार्य प्रणाली को विशेष रूप से प्रभावित करता है।

आर्जेन्टम : जोड़ों के विघटन के साथ होने वाला जोड़ों का दर्द।

आर्निका : जोड़ों में दर्द।

ब्रायोनिया : सूजे हुए, अकड़े हुए जोड़, गति से तकलीफ बढ़ना।

कॉस्टिकम हैनेमनी : जोड़ों की विकृति साथ में लकवा हो जाने जैसी दुर्बलता तथा अकड़न।

लेडम : जोड़ों का आमवाती (Rheumatic) दर्द, कूल्हों में एंठन युक्त दर्द।

खुराक की मात्राः प्रारंभ में प्रतिदिन 4-6 बार थोड़े पानी में 10-15 बूँदें दें। 2-3 सप्ताह के उपचार के बाद खुराक कम कर के प्रतिदिन 2-3 बार दे सकते हैं।

टिप्पणी : आमवातीय दर्द, कशेरुकीय चक्र में दर्द तथा कशेरुका में अस्थि–उपास्थि सम्बन्धी जोड़ों का प्रदाह (Osteo-arthritis) होने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर : अतिरिक्त औषधि के रूप में R 73 के साथ 2 से 3 बार R 11 दें।

सायटिका में : साथ में R 71 भी दें।

प्रोस्टेट ग्रंथि की अतिव द्धि में : R 25

स्त्रियों के पीठ दर्द में : R50 से तुलना करें।

अस्थि–सुषिरिता (osteo-porosis) में : साथ ही R 34 दें।

जोड़ों के तीक्ष्ण प्रदाह में : R1 तथा R 24 से तुलना करें।

स्कन्ध कटिबन्ध (shoulder girdle) बाँहों और हाथों के आमवात में R 46 से तुलना करें।

बाहरी लेपन के लिए एटोमेयर–बेकरॉन R 30 लगायें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 74
Drops for nocturnal enuresis
नींद में पेशाब निकल जाने पर

मूल-तत्व : कैल्शियम फॉस D 30, फेरम फॉस D 8, कैलियम फॉस D 12, पल्साटिल्ला D 12, सीपिया D 6, कॉस्टिकम हैनेम D30.

लक्षण : नींद में पेशाब कर देना, मूत्राशय की कमजोरी।

क्रिया विधि : इस मिश्रण की दवायें तंत्रिका (Nervous) सम्बन्धी तथा कमजोर रोगियों के स्वास्थ्य में सुधार लाती हैं। मूत्राशय की क्रियाओं को नियंत्रित करने वाली प्रेरक तंत्रिकाओं पर भी ये प्रभाव डालती हैं।

कैल्क फॉस० : दुबले–पतले रोगियों को मोटा–ताजा करने वाली औषधि।

पल्सेटिल्ला : पेशाब रोकने में असमर्थता विशेषकर लड़कियों में।

फेरम फॉस : दिन में भी पेशाब को रोकने में असमर्थता।

काली फॉस : दुर्बल स्नायविक संरचना। सामान्य कमजोरी और क्षीणता (debility)।

सीपिया : मूत्राशय की संकोचीनी या पेशी (की अपर्याप्तता) पर विशिष्ट प्रभाव। नींद के पहले चरण में बिस्तर में पेशाब कर देना। यौन सम्बन्धी अंगों पर प्रभाव डालने वाली औषधि।

खुराक की मात्रा: छोटे बच्चों का रात में बिस्तर पर पेशाब करना: प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 8-10 बूँदें। 2-3 सप्ताह बाद खुराक कम कर के दिन में दो बार कर दें।

यही खुराक बड़े बच्चों को देना चाहिए, हालाँकि खुराक को बढ़ाकर 10-15 बूँद कर देना चाहिए।

वयस्कों को थोड़े लंबे समय तक दिन में 3 बार 10-15 बूँद देनी चाहिए।

टिप्पणी : रात में पेशाब करने या मूत्राशय की तकलीफों से सम्बन्धित रोगों के अनेक कारण हो सकते हैं, तथा इसलिए उन तकलीफों के उन मुख्य कारणों को बाहर निकालना आवश्यक होता है। रीढ़ की हड्डी की जाँच भलीभांति कर लेनी चाहिए।

मूत्र प्रजनन नली में जलन की प्रक्रिया : R 18 के साथ तुलना करें तथा R 74 के साथ या बारी–बारी दें।

प्रोस्टेट ग्रंथि का सम्बन्ध होने पर : R 25.

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 75

Dysmenorrhoea drops

पीड़ायुक्त मासिक धर्म के लिए

मूल-तत्व : कॉलोफाइलम थैलिक्ट्रॉयड D 2, कैमोमिला D 30, सिमिसीफ्यूगा D 3, क्यूप्रम एसेटिकम D4, मैग्नेशियम फॉस्फोरिकम D6, वाइबर्नम ओपुलस D2,

लक्षण : पीड़ायुक्त मासिक धर्म। मरोड़ युक्त पीड़ा। प्रसव पीड़ा।

क्रिया विधि : इस मिश्रण के मूल–तत्व (ingredients) स्त्री रोगों से सम्बन्ध रखते हैं जैसे जननांगों के रोग, जिन पर ये दवायें इस प्रकार असर करती हैं कि दर्द को नष्ट कर देती हैं और मरोड़रोधी के रूप में कार्य करती हैं।

कॉलोफाइलम थैलिक्ट्रॉयड : पेट के निचले भाग में मरोड़ वाले दौरे (fits)।

कैमोमिला : अत्यधिक संवेदनशील (oversensitive) स्थिति।

सिमिसीफ्यूगा : निचले उदर में अकस्मात् बिजली की फुर्ति तथा गोली लगने जैसा दर्द।

क्यूप्रम एसेटिकम : मासिक धर्म में तीव्र पीड़ा।

मैगफॉस : दर्दनाक ऋतुस्राव, जिसमें प्राक तिक स्रावों जैसे मासिक स्राव के प्रारंभ द्वारा आराम महसूस होता है।

वाइबर्नम ओपुलस : पेट के निचले भाग में मरोड़ जो जाँघों तक फैले। अनियमित मासिक स्राव।

खुराक की मात्रा: तीव्र पीड़ा तथा प्रसव पीड़ा में : प्रत्येक 1/4 से 1/2 घंटे पर थोड़े पानी में 10 बूँद लगातार लें। सुधार आरंभ होने पर प्रत्येक 1-2 घंटे पर 10-15 बूँद लें।

मासिक स्राव की पीड़ा में लंबे समय के लिए प्रतिदिन 2-3 बार थोड़े पानी में 10-15 बूँदें दें।

टिप्पणी : प्रचुर परिमाण में होने वाले ऋतुस्राव तथा काला व गाढ़ा रक्तस्राव होने की स्थिति में : R 28 से तुलना करें। यदि ऐंठन पूरे पेट में फैलती है तो R 37 भी साथ दें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 76
Asthma forte drops
दमा रोग के लिये फोर्टे ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एकोनाइटम D3, एम्मी विसनैगा, D2, कॉनवेलैरिया D1, ड्रोसेरा D1, कालियम आयोडेटम D3, लोबेलियां इन्फ्लैटा D3, मेन्थोलम D2, स्ट्रैमोनयम D3, इथेनोल/एक्वा प्योर

लक्षण : दमा की संरचनात्मक चिकित्सा अथवा पूर्ण इलाज के लिए एक प्रमुख औषधि।

क्रिया विधि : दीर्घकालीन रोगमुक्ति के रूप में "अस्थमा फोर्टे" का दमा की प्रव त्ति वाले व्यक्तियों के संघटन पर अनुकूल प्रभाव होता है।

एकोनाइटम : छाती में छुरा घोंपने जैसा दर्द, घबराहट (Anxiety) की अनुभूति, मौत का डर (thanatophobia), हाँफने वाली सूखी खाँसी, छाती में संकुचन की अनुभूति।

एम्मी विसनैगा : रक्त संचार में गड़बड़ी, ह्रदय रोग।

कॉनवेलैरिया मजलिस : प्रत्यक्ष श्वास सम्बन्धी तकलीफ, ह्रदअलिन्दी (auricular) फड़फड़ाहट (Flutter), छाती में छुरा घोंपने जैसा दर्द।

ड्रोसेरा : शरीर नीला पड़ जाना (सायनोसिस) तथा उल्टी होने के साथ शरीर को ऐंठा देने वाले दमा के दौरे।

सांस लेने में परेशानी (Dyspnoea),
उखड़ा—उखड़ा श्वास, दमा जनित श्वास नलियों का प्रदाह (asthmathoide bronchitis), श्वास नलिकाओं की अवरुद्ध अवस्था के कारण होने वाला दमा (asthma bronchiale)।

कालियम आयोडेटम : उपचारकारी शक्तियों की कमजोरी की स्थितियों के लिए।

लोबेलिया इंफ्लाटा : श्वास नलिकाओं की अवरुद्ध अवस्था के कारण होने वाला दमा (asthma bronchiale), ऐंठनयुक्त खाँसी।

मेंथोलम : साँस लेने में आराम पहुँचाती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्ट्रैमोनियम : छाती के भीतर संकुचन की अनुभूति, आवाज के साथ श्वास लेना।

खुराक की मात्राः प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 20 बूँदें। दौरा पड़ने पर प्रत्येक 5-10 मिनट पर 10 बूँदें।

टिप्पणी : श्वास नलियों की सर्दी (bronchial-catarrh) होने पर R48 का अतिरिक्त प्रयोग अनुमोदित किया जाता है, यदि स्वरयंत्र प्रभावित हो तो साथ ही अतिरिक्त औषधि के रूप में R45 का प्रयोग करें, हृदय की अपर्याप्तता की स्थिति में R3, हृदय में दर्द होने की अवस्था (Angina-Pactoris) में R2, शांति देने वाली औषधि के रूप में R14 तथा वीटा–सी 15 का प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 77
Anti-smoking drops
धूम्रपान निरोधी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : अगैरिकस D5, एकीनेशा एंगुस्टिफोलिया D10, नेट्रियम क्लोरैटम D2, रोबिनिया D6, टैबेकम D4.

लक्षण : धूम्रपान छुड़ाने के लिए, धूम्रपान के परिणाम स्वरूप होने वाले दुष्प्रभाव, अत्यधिक धूम्रपान के कारण होने वाला सिरदर्द तत्पश्चात् उठने वाला रक्त–वाहिनियों का संकुचन, मतली, पेट में दर्द, कब्जियत, धड़कन में अनियमितता, लीवर सम्बन्धी तकलीफें, कान के निचले पर्दे का प्रदाह। संयोजी ऊतकों की प्रक्रिया में व्यवधान। अन्तःस्रावी (endocrine) ग्रंथियों में व्यवधान, रक्त वाहिनियों में व्यवधान, धूम्रपान करने वालों की टाँगों की दुर्बलता (Smoker's leg)।

क्रिया विधि : औषधि में मिश्रित मूल–तत्व शरीर में निकोटिन के निरन्तर प्रवाह से उत्पन्न क्षति की पूर्ति करते हैं।

यदि इसे नियमित रूप से लंबे समय तक लिया जाए तो प्रतिरोध करने की क्षमता बढ़ेगी, तंत्रिका तंत्र की स्वायत्त प्रक्रिया पुनः प्राप्त होगी, तथा नलिकाओं में रक्त की पूर्ति बेहतर होगी। परिणामस्वरूप यह भावना कि निकोटिन एक कृत्रिम सामंजस्य लाती है, अनावश्यक बन जाती है, यदि तंबाकू का प्रयोग बंद कर दिया जाये तो। एक सामान्य स्वास्थ्य आरंभ हो जाता है।

अगैरिकस : संचरण सम्बन्धी व्यवधान, हृदय की अनियमित धड़कन, लीवर में सूजन, जीभ पर परत, पेट में दर्द और मतली।

एकीनेशा एंगुस्टिफोलिया : रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाती है, आंतरिक रोगाणुरोधक (antiseptic), साथ में लसिकावाहिका सम्बन्धी (lymphatic) प्रणाली को शक्ति प्रदान करती है। सभी निर्विषीकरण–प्रणालियों का उद्दीपन करती है।

नेट्रियम क्लोरेटम : कनपटी सम्बन्धी सिरदर्द, अतालता सम्बन्धी धड़कन, कड़े और सूखे मल के साथ कब्ज।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोबिनिया : अत्यधिक धूम्रपान के कारण पेट में दर्द, अम्लीय जठरशोथ (पेट का प्रदाह)।

टैबेकम : सन्निपात, पीलापन, पसीना आना, डर की अनुभूति, हाथ–पैरों का ठंडा होना, वातशूल तथा सिर चकराना, मतली और उल्टी के साथ तंबाकू के कुप्रभावों को रोकती है। परिसरीय तथा धमनी सम्बन्धी व्यवधानों पर विशेष रूप से प्रभावशाली। धूम्रपान करने वालों की टांगों की कमजोरी (Smoker's leg)।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 15-20 बूँदें वांछित प्रभाव के लिए लम्बे समय तक उपयोग करें।

टिप्पणी : धूम्रपान छोड़ने के कारण अधीरता की स्थिति हो तो अतिरिक्त औषधि के रूप में वीटा–सी 15 फोर्ट टॉनिक लेना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 78

Eye care-drops for oral administration

आँखों की रक्षा के लिए मौखिक ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एकोनाइटम D4, एपिस मेलिफिका D4, बेलाडोना D4, यूफोर्बिया सिपैरिसियास D3, यूफोर्बियम D4, यूफ्रेशिया D2, हेमैमेलिस D2, कालियम कार्बोनिकम D4, मर्क्युरिस बाइआयोडेटस D5, रस टॉक्स D4, रुटा D2, स्क्रोफुलेरिया नोडोसा D2, स्पाइजेलिया D4, स्टैफिस्गेरिया D4, सल्फर D4.

लक्षण : आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का पुराना प्रदाह अथवा आँख आना (Conjunctivitis), पलकों का प्रदाह (blepharitis), गुहेरी, आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का जुकाम सम्बन्धी प्रदाह, आँखों की थकान, धुंधलापन, दोहरा दिखाई देना, प्रारंभिक मोतिया बिंद।

क्रिया विधि : **एकोनाइटम** : दर्द से छुटकारा दिलाने वाली औषधि।

एपिस मेलिफिका : सुई चुभने जैसी पीड़ा, आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का संक्रामक प्रदाह (epidemic conjunctivitis)।

बेलाडोना : आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का प्रदाह, पलकों का प्रदाह।

यूफोर्बिया सिपैरिसियास : श्लेष्मिक झिल्लियों के क्षोभण में।

यूफोर्बियम : आँखों से पानी निकलना, आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का जुकाम सम्बन्धी प्रदाह।

यूफ्रेशिया : आँखों की थकान, चौंधियाना, आंतरिक नेत्र सम्बन्धी उच्च दबाव, आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का प्रदाह, अश्रुपात, पलकशोथ, भौंहों का प्रदाह, नेत्रपटल पर घाव या फुंसी (Ulcus)।

हेमैमेलिस : नेत्र के काचाभ से रुधिर स्राव, आँखों की थकान।

कालियम कार्बोनिकम : अत्यधिक सूजन के साथ ऊपरी पलक पर जलीयशोथ।

मर्क्युरिस बाइआयोडेटस : पलकशोथ, भौंहों का प्रदाह, आँख की पुतली का प्रदाह, पलकों अथवा भौंहों सम्बन्धी जलन, वातशूल (बाँयीं ओर का)।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रस टॉक्स : आँखों की श्लेष्मिक झिल्ली का प्रदाह, द्रवीय (mattery) स्राव के साथ पलकों की सूजन।

रुटा : आँखों की थकान के कारण होने वाले द ष्टि दोष।

स्क्रोफुलेरिया नोडोसा : गांठ बनने वाले आँखों के रोग, गुहेरी।

स्पाइजेलिया : नजला सम्बन्धी आँखों की जलन।

स्टेफिसगेरिया : गुहेरी, पलकों की गिल्टी।

सल्फर : लाल पलकें, साथ में पीबयुक्त (Purulent) जलन की प्रव त्ति, गुहेरी।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 3 बार थोड़े पानी में 20 बूँदें।

टिप्पणी : स्थानिय जलन (नयी तथा पुरानी), जिसकी नजले एवं पीब बनने (Purulent) की प्रव ति हो, अतिरिक्त औषधि के रूप में R1 का भी प्रयोग करना चाहिए।

साथ में आँखों में डालने के लिए रेक्वेग की अल्कोहल रहित सिनेरेरिया आई ड्रॉप्स जोकि आँखों के लिए उत्क ष्ट दवा है, अनुमोदित की जाती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग- R 81
Maldol - Analgesic
दर्द निवारक

मूल-तत्व : अनामिर्टा कोकुलस D4, अरेनिया डायडेमा D4, सिमिसीफ्यूगा रेसमोसा D4, सिट्रुलस कोलोसिंथिस D4, साइक्लामेन यूरोपियम D4, जेल्सेमियम सेम्परविरेन्स D3, जिंगो बाइलोबा D3, स्पाइजेलिया एंथेल्मिया D4.

लक्षण : सिरदर्द, वातशूलीय दर्द, मांसपेशियों का दर्द, जोड़ों की पीड़ा।

क्रिया विधि : **अनैर्मिटा कोकुलस (कोकुलस) :** विभिन्न कारणों से सिर चकराना, सिर के पिछले भाग में (occipital) दर्द, दर्दनाक ऐंठन (algospasms) मासिक धर्म सम्बन्धी पीड़ा।

अरेनिया डायडेमा : धमनी अतानता सम्बन्धी विकार (Dysarteriotony), पुनरावर्ती (recurrent) वातशूलीय पीड़ा, जोड़ों में दर्द (arthralgies)।

सिमिसीफ्यूगा रेसमोसा : मॉंसपेशियों में दर्द जिनकी उत्पत्ति रीढ़ की हड्डी के खण्डों (Vertebral column) से होती है, हृदय की मॉंसपेशियों से सम्बन्धित ऐंठन के कारण दर्द, आमाशय एवं आन्त्रीय मार्ग, पित्ताशय तथा स्त्रियों के जननांगों में दर्दनाक ऐंठन।

सिट्रुलस कोलोसिंथिस : अमाशय तथा आन्त्रीय मार्ग (gastro-intestinal tract), पित्त–सम्बन्धी मार्ग तथा मूत्र सम्बन्धी अंगों में दर्दनाक ऐंठन। स्नायु–प्रदाह तथा नाड़ी सम्बन्धी दर्द, विशेषकर चेहरे में। आसनास्थिशूल (Ischialgia) अथवा नितम्बों की नसों में दर्द।

जेल्सेमियम सेम्परविरेन्स : सिर दर्द, आक्षेप (convulsions) की प्रव त्ति।

स्पाइजेलिया ऐंथेलमिया : हृदय पिण्ड का तीक्ष्ण प्रदाह, हृदय सम्बन्धी सिकुड़न, स्नायविक पीड़ा, सिरदर्द।

साइक्लामेन यूरोपियम : सिरदर्द, आधाशीशी का दर्द (migraine), पीड़ायुक्त मासिक धर्म सम्बन्धी विकार।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिंगो बाइलोबा : सिरदर्द, लेखकों में पीड़ा युक्त हस्त कम्पन।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 3-4 बार भोजन के पूर्व थोड़े पानी में 15 बूँदें। उग्र स्थिति में प्रत्येक 1/2-1 घंटे में 15-20 बूँद।

टिप्पणी : आधाशीशी के दर्द (migraine) में R 16, सिर की नाड़ियों का प्रदाह तथा नथुनों के प्रदाह में प्रतिदिन 3-6 बार थोड़े पानी में 10-15 बूँद R1 भी लें। त्रिधारीय तथा चेहरे की नसों में दर्द होने पर R 70 देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 82
Mycox - Anti fungal drops
माइकॉक्स-फफूँद निरोधी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : ऐस्परजिलस नाइगर D12, कैंडिडा एल्बिकन्स D 30, क्लैमाइडिया ट्रैकोमेटिस D30, एकीनेशा एंगस्टिफोलिया D 12, माइकोसिस फंगाइड्स D12, पेनिसिलिनम D12, टेकोमा D5, जिंकम मेटालिकम D10।

लक्षण : फफूंद संक्रमण जैसे दाद, अरुमूल सम्बन्धी खुजली, (Jockitch) पैरों की दाद, हाथ–पैरों की चमड़ी से सफेद पपड़ियां झड़ना, गले में छाले, कष्ट (Soreness), कान में खुजली के साथ दर्द, उँगली के नाखूनों के नीचे सफेद – रंगहीनता, योनि–सम्बन्धी संक्रमण अथवा अन्य फफूंद सम्बन्धी त्वचा। रोगी में थकावट, चिड़चिड़ापन, अस्पष्ट विचार, एकाग्रचित्तता का अभाव, सामान्य असंतोष, मीठे की लालसा, पेट फूलना आदि लक्षण होते हैं। एलर्जिक प्रकृति की संवेदनशीलता बढ़ती है।

क्रिया विधि : **ऐस्परजिलस नाइगर; कैंडिडा ऐल्बिकन्स, माइकोसिस फंगाइड्स, पेनिसिलिनम :** ये सारे मूल–तत्व शरीर की सुरक्षात्मक प्रक्रिया को उत्तेजित करके प्रतिजन सम्बन्धी या रोग विषों सम्बन्धी आराम देते हैं। हमारे शोध में, 10 स्वस्थ शरीरों से रक्त लिया गया और सूक्ष्मदर्शी (microscope) में श्वेत रक्त कणिकाओं की फफूंदी कोशिकाओं की ओर गति को मापा गया, सुधार तथा भक्षक कोशिका को नष्ट करने वाली प्रक्रिया (Phagocytosis) में लगने वाले समय के निमित्त जांच की गई।

इन फफूंदों की रोग विष निर्मित औषधियां (nosodes) भाग लेने वाले व्यक्तियों को दी गयीं, 30 मिनट बाद पुनः खून लिया गया और पुनः श्वेत रक्त कणिकाओं की क्षमता मापी गयी। सभी स्थितियों में श्वेत रक्त कोशिकाएँ फफूंदी कोशिकाओं को नष्ट करने में 25% से 30% अधिक तेज और अधिक प्रभावशाली थीं।

क्लैमाइडिया ट्रैकोमेटिस : रिक्केट्टसिया (Rickettsia) की प्रतिजनक चिकित्सा के लिए तथा फफूंद (Fungal) उत्पत्ति जन्य त्वचा विक ति की स्थिति को रोकने की होम्योपैथिक औषधि।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकीनेशा ऐंगस्टिफोलिया : लसिका–शोधक तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्द्धक।

जिंकम मेटालिकम : भ्रामक (foggy) विचारों से मुक्त करने वाली तथा एकाग्रचित्तता के अभाव में आराम के लिए। जिंक के पोषक अवशोषण को उद्दीप्त करती है।

टेकोमा : सुपरिचित, सर्वाधिक शक्तिशाली फफूंद निरोधी बनस्पति।

खुराक की मात्रा: बाहरी लक्षणों के लिए R 82 की कुछ बूँदें स्थिति के अनुसार प्रभावित भाग पर दिन में दो बार लगाएं। बाहरी प्रयोग के लिए R 82 सुरक्षित दवा है, बल्कि रुई के फोहे से बच्चों के कान में भी लगा सकते हैं (यदि मध्य कान की झिल्ली में कोई छेद न हो तो)।

आंतरिक प्रयोग : प्रतिदिन 3 बार 10 बूँदें। यदि इस खुराक से अत्यधिक मल–शोधन होने लगे, या अत्यधिक पतला मल होने लगे तो खुराक कम कर देनी चाहिए, प्रतिदिन 3 बार एक बूँद लेनी चाहिए और फिर धीरे–धीरे बढ़ाकर सामान्य खुराक लेनी चाहिए।

बचावकारी औषधि के रूप में : रोग बार–बार होने से रोकने के लिए हर एक दिन छोड़ कर 5 बूँद लें। एल्कोहल के प्रति संवेदनशीलता होने पर एक गिलास गर्म पानी में 10 बूँदें लें एल्कोहल को एक मिनट के लिए फैलने दें।

दो साल से कम उम्र के बच्चों के लिए, बाहर से पेट पर बूँद लगायें और उसे बच्चे से मलने के लिए कहें।

टिप्पणी : प्रदाह के लिए या छालों में R1 का प्रयोग करें।

मूत्र–मार्ग के फफूंदीय संक्रमण के लिए R18 का प्रयोग करें।

पाचन शक्ति की दुर्बलता या आँतीय मरोड़ साथ में होने पर R5 का प्रयोग करे।

प्रोस्टेट सम्बन्धी रोग होने पर R 25 का प्रयोग करे।

कष्टप्रद मासिक स्राव तथा मासिक के अभाव के लिए R 28 का प्रयोग करें।

मासिक पूर्व होने वाले तनाव के कारण लक्षण व द्धि होने पर R 50 तथा R 75 का प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वचा की दुर्दान्त स्थितियों तथा सोरियासिस (Psoriasis) के लिए R 65 का प्रयोग करें।

कैंडिडा के अति–मारक तत्व के उपचारकारी संकट से बचाव के लिए R 26 तथा R 60 का प्रयोग करें।

साथ में सिर दर्द होने पर R 16 का प्रयोग करें।

रोग के कारणों का इतिहास : वह सब कुछ जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को दबाता है, फफूंदीय व द्धि करता है।

संभावित मुख्य कारण हैं :

1) एंटी बायोटिक के कुप्रभाव
2) गर्भ निरोधक गोलियाँ
3) मिठाईयाँ (शोधित चीनी, शहद भी)
4) पारदीय खनिज योग (amalgams)
5) बड़ी आँत में विद्यमान हितकारी जीवाणुओं पर कुप्रभाव डालने वाली विषाक्तता।
6) तनाव (stress)।

उत्तम परिणाम पाने के लिए उपर्युक्त औषधियों (पदार्थों) का यथा सम्भव उपयोग कम करें और तनाव से दूर रहें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 83
Food-Allergy drops
आहार एलर्जी निरोधी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एड्रेनेलिनम D 5, कॉफिया D 6, D12, D 30, फीक्स मेडिसेनालिस D6, D12, D30, हैपर D6, हिस्टामिनम D30, लैक D6, D12, D30, सैक्केरम D6, D12, D30, सोलैनम लाइकोपर्सिकम D6, D12, D30, सोलैनम ट्यूबरोसम D6, D12, D30।

लक्षण : भोजन से विषाक्तता (खान–पान से एलर्जी)

क्रिया विधि : **कॉफिया, फीक्स मिडिसेनालिस, लैक, सैक्केरम, सोलैनम लाइकोपर्सिकम, सोलैनम ट्यूबरोसम :**

उपर्युक्त मूल–तत्व तनुक त मात्राओं में प्रतिजनात्मक संवेदनहीन उपचार से एलर्जिक प्रतिक्रिया को कम करते हैं।

ऐड्रीनेलिनम : एलर्जिक (Allergic) लक्षणों के विरुद्ध प्रत्यक्ष हार्मोन सम्बन्धी प्रभाव के लिए।

हैपर : हिस्टामिन रोधी प्रभाव के लिए ग्रंथीय सहायता प्रदान करता है।

हिस्टामिनम : हिस्टामिन–रोधी प्रभावों के लिए सर्वोत्तम एलर्जी रोधी अनुक्रिया प्रदान करती है।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः प्रतिदिन 3 बार 5 से 10 बूँद अनुमोदित हैं, किंतु तीव्र प्रतिक्रिया की कुछ स्थिंतियों में इस मिश्रण के प्रति प्रतिक्रिया होगी। ऐसी स्थितियों में एक गिलास पानी में दवा की बूँदें डालनी चाहिए और फिर रोगी को उसमें से थोड़ा–थोड़ा पानी पीना चाहिए।

टिप्पणी : भोजन से विषाक्तता (food allergy) होने पर R16, R37, R43, R49 का प्रयोग अनुमोदित है।

रोग के कारणों का इतिहास : तनाव और अतिक्रियाशीलता, अथवा ऐसा कुछ भी जो संवेदी तंत्रिका प्रणाली को अति उत्तेजित कर देता है, वह स्वैच्छिक तंत्रिका प्रणाली के एक भाग की सुरक्षात्मक रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है। एक असंतुलित शरीर में तीव्र प्रतिरक्षी (anti body) प्रतिक्रिया विकसित हो सकती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 84
Inhalent-Allergy drops
श्वास सम्बन्धी एलर्जी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एड्रीनेलिनम D 5, पिलि एनिमेलम D 30, फंजाई D 30, सीमेन एट पोलेन ग्रेमिनिस D 30, पल्विस हर्बे इनुटिलिस D 30, हिस्टामिनम D 30, पोलन D 12, D 30।

लक्षण : श्वास सम्बन्धी एलर्जी।

क्रिया विधि : **पिलि एनिमेलम, फंजाई, सीमेन एट पोलन ग्रैमिनिस, पल्विस हर्बे इनुटिलिस, पोलन :**

उपर्युक्त फार्मूला इन एलर्जी पैदा करने वाले तत्वों (Allergens) द्वारा उत्तेजित अत्यधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता की प्रतिक्रिया के लिए प्रतिजन संवेदनहीनता प्रदान करता है।

एड्रीनेलिनम : हार्मोन सम्बन्धी एलर्जी–रोधी प्रतिक्रिया के लिए निम्न शक्ति (उपयोग की जाती है)।

हिस्टामिनम : शरीर के लिए हिस्टामिन निरोधी प्रभाव प्रदान करता है।

खुराक की मात्राः सामान्यतः प्रतिदिन 3 बार 5 से 10 बूँद अनुमोदित की जाती हैं, किंतु कुछ स्थिति में अत्यधिक प्रतिक्रियात्मकता इस मिश्रण के प्रति प्रतिक्रिया करेगी। ऐसी स्थितियों में, एक गिलास पानी में दवा की बूँदें डालनी चाहिए और फिर, रोगी को उसमें से थोड़ा–थोड़ा पानी पीना चाहिए।

टिप्पणी : एलर्जी की स्थिति में R 16, R 37, R 43, R 49 का प्रयोग अनुमोदित हैं।

रोग के कारणों का इतिहास : तनाव, और अतिक्रियाशीलता, अथवा ऐसा कुछ भी जो संवेदी तंत्रिका प्रणाली को अति–उत्तेजित कर देता है, वह स्वैच्छिक तंत्रिका प्रणाली के एक भाग की सुरक्षात्मक रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है। एक असंतुलित शरीर में तीव्र प्रतिरक्षी (anti body) प्रतिक्रिया विकसित हो सकती है।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 85
High Blood pressure drops
उच्च रक्त चाप सम्बन्धी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एलियम सैटायवम D 3, साइट्रस मेडिका लिमोनम D 3, कोर D 30, ग्लैंडुले सुपरारेनलेस D 30, कालियम आयोडेटम D 3, कैलियम फॉसफोरिकम D 4, मेसेनसेफालोन D 30, रेन D 6, D 12, D 30, टारटेरस डेपरेटस D 5, वैलेरियाना D 3.

लक्षण : प्रकुंचनीय (Systolic) रक्तचाप 140 से ऊपर अथवा अनु–शिथिलनीय (diastolic) रक्तचाप 90 से ऊपर उच्च रक्तचाप कहलाता है।

क्रिया विधि : एलियम सैटिवम : रक्त चाप कम करता है।

साइट्रस मेडिका लिमोनम : तेज मूत्रवर्द्धक प्रभाव।

कोर : ग्रंथि सम्बन्धी उद्दीपन

ग्लैंडुले सुप्रारेनलेस : ग्रंथि सम्बन्धी उद्दीपन करती है।

कैलियम आयोडेटम : पोटाशियम अवशोषण को शक्ति देती है, रक्त का चिपचिपापन (Viscosity) धटाती है।

कैलियम फॉस्फोरिकम : संचरण सम्बन्धी दोषों को दूर करती है।

मेसेनसेफेलन : ग्रंथि सम्बन्धी उद्दीपन (stimulation) करती है।

रेन : हार्मोन सम्बन्धी रक्त चाप को नियमित करती है।

टॉरटेरस डेपुरेटस : तेज मूत्रवर्द्धक प्रभाव।

वैलेरियाना : शांतिदायक प्रभाव।

खुराक की मात्रा: सामान्यतः 3 बार 10 बूँद अनुमोदित हैं, पानी की उतनी मात्रा के साथ, जितनी गुर्दे सहन कर सकें। अधिक तीव्र, पुराने रोग के लिए प्रतिदिन 6 बार 5-10 बूँदें दें, साथ में संरक्षक आहार के रूप में पोटाशियम संयुक्त भोजन अथवा प्राकृतिक पोटाशियम के पूरक दें।

टिप्पणी : दुर्बल ह्रदय के लिए R 2 तथा R 66 दें, गुर्दे से सम्बन्धित होने पर R 18 तथा R 27 दें; गुर्दे में प्रोटीन जमने पर R 64, साथ ही क्षतिग्रस्त संचरण में R 63 तथा R 67, रक्त वाहिका स्थिरता में R 42 तथा बेचैनी में विटा–सी 15, R 22, R 36, R 47 का प्रयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 86
Hypoglycemia drops
निम्न रक्त शर्करा सम्बन्धी ड्रॉप्स

मूल-तत्व : एडेनोसिन–ट्राई फॉस्फेट D 30, एड्रीनेलिनम D 30, आर्सेनिकम एल्बम D 12, हैपर D 30, हाइपोफाइसिस D 30, हाइपोथैलामस D 30, इंसुलिनम D 30, नक्सवोमिका D 30, ओनेथरा बाइएनिस D 3, सैक्रम D 30।

लक्षण : थकान, अवसाद (भोजन के बाद), चिड़चिड़ापन, सिरदर्द, भोजन की लालसा, एकाग्रचित्तता का अभाव, खाने से लक्षणों में आराम, उत्तेजक पदार्थों की लालसा, एड्रीनल की अल्प क्रिया अथवा अन्य निम्न रक्त शर्करा सम्बन्धी लक्षण।

क्रिया विधि : **एड्रीनेलिनम, हैपर, हाइपोफाइसिस, हाइपोथैलामस, इन्सुलिनम:** रक्त शर्करा की श्रंखला का ग्रंथि सम्बन्धी नियमन के लिए।

आर्सेनिकम एल्बम : मानसिक थकान और दुर्बलता के लिए।

एडेनोसिन-ट्राई-फॉस्फेट : शक्ति की स्थिरता के लिए।

नक्स वोमिका : भोजन की लालसा के लिए।

ओनेथेरा बाइएनिस : शर्करा को शक्ति और ऊर्जा में बदलने की क्रिया को सुधारती है।

सैक्रम : नशा सम्बन्धी मूल–तत्वों का विरोध।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 3 बार 10 बूँदें; श्रेष्ठ परिणाम के लिए भोजन के ½ घंटे पूर्व लें। जब स्वास्थ्य लाभ धीरे हो रहा हो, तो कम मात्रा में हल्का भोजन करने की चेष्टा करें।

टिप्पणी : थकान की स्थिति में वीटा सी–15, वीटा–सी 15 फोर्ट लें, समाविष्ट पाचन के लिए R5, R 7, R 37, R 72 लें; हार्मोन सम्बन्धी व्यवधान में R 19, R 20; खून की कमी में R 31, R 37, उन्नत अवस्थाओं में (प्रारंभिक मधुमेह ग्रस्तता) R40, अधीरता की स्थिति में R 22, R 36, R47 ; सिर चकराने में R 29, मस्तिष्क के क्रियाशीलता सम्बन्धी व्यवधान में R 54; रजोनिव त्ति सम्बन्धी शिकायतों में R 10, R 28, R 75।

रोग के कारणों का इतिहास : अल्पग्लूकोज रक्तता अथवा निम्न रक्त शर्करा का सामान्यतः अर्थ होता है, भोजन के प्रति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इंसुलिन की उच्च प्रतिक्रिया। निम्न रक्त शर्करा से पीड़ित वर्गीक त रोगियों को सदैव निम्न शर्करा नहीं होती बल्कि उसमें अत्यधिक उतार–चढ़ाव होता है, अत्यधिक ऊँचे से अत्यन्त कम शर्करा हो जाती है। यह उतार–चढ़ाव मस्तिष्क की प्रक्रिया तथा माँसपेशियों की क्रिया को बाधित करता है, परिणामस्वरूप शारीरिक तथा मानसिक थकान, चिड़चिड़ापन, अवसाद, अनिर्णय–स्थिति, तथा प्रचुर मात्रा में विभिन्न लक्षण होते हैं।

रक्त शर्करा नियमन की प्राकृतिक प्रणाली अधःश्चेतक (Hypothalamus) तथा पियूषिका (Pituitary) द्वारा चालित होती है, जो निम्न रक्त शर्करा के स्तरों की पहचान अनुसार हॉर्मोन छोड़ते हैं। हॉर्मोन सम्बन्धी यह संदेश तीन प्रकार से क्रिया कर सकता है। यदि पाचक मार्ग में भोजन हो, तो ये हार्मोन पाचनरस थैली–जनित इंसुलिन छोड़ने के लिए उद्दीप्त करते हैं अथवा शर्कराजनापघटन (glycogenolysis) की प्रक्रिया में हार्मोन गुर्दे (Kidney) के पास ऊपर की ओर स्थित अधिव क्क सम्पुट को खनिज तथा शर्करा और अधिव क्क बाह्यस्तर के स्राव के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे लीवर द्वारा मधुजन (glycogen) का स्राव बढ़े। ग्लूकोज में वसामय परिवर्तन शर्करा की नयी उत्पत्ति (glyconeogenesis) के द्वारा होता है, जो गुर्दे. के पास ऊपर की ओर स्थित अधिव क्क सम्पुट की ओर पियूषिका (Pituitary) तथा अधःश्चेतक (hypothalamus) के स्राव से संयमित रहता है। इन प्रक्रियाओं के विकार प्राथमिक रूप से निम्नलिखित कारकों से आते हैं :

1) जीवन में तनाव, विशेषकर भोजन के आसपास, जिसके कारण अनियमित पाचन होता है।

2) बहुत अधिक पकाये हुए कार्बोहाइड्रेट्स जैसे श्वेत शर्करा तथा मैदा आदि इन्सुलिन का प्रचुर स्राव कराते हैं और वे फिर स्वयं शरीर में बहुत तेजी से जलते हैं।

3) विषैले वातावरण से प्रभावित विषयुक्त लीवर अथवा प्रचुर मात्रा में भोजन सम्बन्धी अतिरेक लीवर की प्रक्रिया पर बोझ डालते हैं।

4) अधःश्चेतक (hypothalamus) सम्बन्धी अनुकूलता के फलस्वरूप भोजन की पूर्व आशा में इंसुलिन का शीघ्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्राव। ऐसे संलक्षण को प्रदर्शित करने वाले लोग अक्सर अन्य पोषण विहीन आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए भोजन करते हैं, जैसे प्रेम, आत्म–महत्व, बोरियत, आदि।

5) शर्करा तथा अन्य उद्दीपक नशे। (प्रोसेस की गई चीनी (processed sugar) रासायनिक रूप से कोकीन के समान होती है)। कॉफीन, निकोटिन, चॉकलेट, आदि। ये सभी अच्छे पोषण के स्थान पर, जैविक प्रणाली के कृत्रिम उद्दीपन के रूप में कार्य करते हैं। लंबे समय तक इनका सेवन करने से रक्त शर्करा का संतुलन बिगड़ जाता है और उससे नियंत्रण प्रणाली असंतुलित हो जाती है।

6) निम्न स्तरीय गुणवत्ता का पोषण। प्रोसेस किए गए कार्बोहाइड्रेट्स में विटामिन और खनिज पदार्थों का अभाव होता है, जो ग्लूकोज को ATP में परिवर्तित करने वाले क्रेब्स–चक्र को संतुलित रखने के लिए आवश्यक होते हैं, गेहूँ की क त्रिम विटामिन से पुष्ट करने की अपेक्षा अपने वास्तविक स्वरूप में विटामिन क्रेब्स चक्र में श्रेष्ठ परिणाम देते हैं। ताजे तथा कच्चे प्राकृतिक फल तथा सब्जियाँ, साथ में प्रोसेस न किए हुए अनाज, खनिज अवशोषण के लिए अत्यधिक रेशेदार (fiber), कम वसा (विशेषकर ताप द्वारा उपयोग किए गये वसा) तथा अत्यधिक मात्रा में अच्छा पानी, लंबे समय तक निम्न रक्त शर्करा (hypoglycemia) से पीड़ित व्यक्ति को सहायता देते हैं।

7) निम्नस्तरीय गुणवत्ता वाले पोषण से कमजोर पाचन तंत्र वाले अंग कम मात्रा में फैटी एसिड (fatty acids), खनिज वसा तथा पानी में घुलनशील विटामिन देते हैं, जो अच्छी गुणवत्ता वाले ग्लूको–नियमक हार्मोन के लिए आवश्यक होते हैं। अन्तरित रूप से, पाचन प्रक्रिया का एन्जाइम सम्बन्धी अथवा पायसी–कारक एजेंट के साथ उपचार करना चाहिए।

8) उपापचय सम्बन्धी भार का अभाव। ऑक्सीजन के साथ श्रेष्ठतम तरीके से ग्लूकोज ATP में परिवर्तित होता है। बुरी अनुकूलता का अर्थ है ऑक्सीजन का बुरा आवागमन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा उपयोग। स्वास्थ्य–मापन का श्रेष्ठतम तरीका ऑक्सीजन के उपयोग की मात्रा है। आक्सीजन या ऐरोबिक क्षमता में सुधार होने पर क्रेब्स चक्र अधिक से अधिक प्रभावशाली ढ़ंग से कार्य करेगा।

9) चिंता, अवसाद, नकारात्मकता तथा आत्म मूल्य के प्रश्न से घिरी मानसिक स्थिति। हम जानते हैं कि रोग प्रतिरोधक, पाचक तथा हार्मोन सम्बन्धी प्रणालियों के परानुकम्पी (Parasympathetic) अंगों पर मन का सीधा प्रभाव होता है। शरीर के अधिक अस्वस्थ होने पर कभी–कभी मन अधिक नकारात्मक हो जाता है। निम्न रक्त शर्करा (hypoglycemia) के उपचार के लिए रोगी को इस निम्नगामी चक्र को तोड़ना चाहिए। संभवतः निम्न रक्त शर्करा (hypoglycemia) का वास्तविक कारण है, आजकल के ज़माने का जीवन : तनाव, चिंता, भय, अप्राकृतिक भोजन, कम अनुकूलता, दूषित हवा तथा पानी का युग। निम्न रक्त शर्करा (hypoglycemia) अन्य रोगों के लिए द्वार खोलती है; इस द्वार को बंद करने के लिए हमें पूर्ण प्रयत्न की आवश्यकता है। यह औषधि इस दिशा में अच्छी शुरूआत कर सकती है, किन्तु, अपनी, जीवंन शैली में भी आवश्यक परिवर्तन करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 87
Anti-Bacterial drops
रोगाणु नाशक ड्राप्स

मूल-तत्व : बोटुलिनम D 30, ई–कोलाई D 30, ग्लेंडुले थायमी D 30, हाइड्रास्टिस D 3, न्यूमोकोक्सिनम D 30, प्रोटियस D 30, सूडोमोनास D 30, साल्मोनेल्ला D 30, स्कारलेटिनम D 30, स्टैफाइलो कॉक्सिनम D 30, स्ट्रेप्टोकॉक्सिनम D 30, ट्यूबरक्यूलिनम D 30।

लक्षण : जीवाणु सम्बन्धी संक्रमण, आंतरिक अथवा बाह्य। कमजोर रोग प्रतिरोधक प्रणाली अथवा जीवाणु सम्बन्धी अंतःसंचरण से बचावकारक के रूप में।

क्रिया विधि : बोटुलिनम, ई–कोलाई, न्यूमोकॉक्सिनम, प्रोटियस (Proteus) सूडोमोनास, सैलमोनेला, स्कार्लेटिनम (Scarlatinum), स्टैफाइलो–कॉक्सिनम, स्ट्रेप्टोकॉक्सिनम, ट्यूबरक्यूलिनम : उपर्युक्त औषधियां, उच्च शक्ति में रोग प्रतिरोधक प्रक्रिया पर जनितरोधी रूप से कार्य करती हैं, जिससे श्वेत रक्त कणिकायें रोगाणुओं को पहचानने तथा नष्ट करने के लिए कार्य कर सकें। यहाँ रोगक्षमीकरण (Immunization) का ही सिद्धांत लागू होता है, और केवल उच्च शक्ति अथवा तनुकरण की खुराक से कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।

ग्लैंडुले थायमी : जीवाणु सम्बन्धी रोग प्रतिरोधक प्रक्रिया के लिए ग्रंथियों की मदद करती है।

हाइड्रास्टिस : शक्तिशाली प्राकृतिक रोगाणु नाशक।

खुराक की मात्रा: प्राकृतिक, कुप्रभाव मुक्त रोगक्षमीकरण (Immunization) फार्मूले के लिए जीवन के प्रथम 2 वर्षों तक महीने में एक बार तीन दिन के लिए प्रतिदिन 3 बार 3 बूँद दें। बड़े रोगियों के लिए जीवाणु सम्बन्धी संक्रमण में प्रतिदिन 3 बार 10 बूँद लें, बचाव के लिए दिन में एक बार 10 बूँद लें।

टिप्पणी : बुखार या गला खराब होने पर R 1 का प्रयोग करें, अतिसार के लिए R 4, मूत्राशय सम्बन्धी संक्रमणों के लिए R 18, R 25, स्वरयंत्र प्रदाह के लिए R 45, चोट के लिए R 55, मुँहासे के लिए R 53।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोग के कारणों का इतिहास : त्वचा पर और आंत (Bowel) में सभी प्रकार के जीवाणु होते हैं। ये जीव अपने मनुष्य–रूपी साथी के साथ सहचर्य में रहते हैं। मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता जीवाणु को नियंत्रित रखती है, अतः ये पाचन, अवशोषण तथा विष–निरोधी कार्यों में सहायता दे सकते हैं। जीवाणु अनेक आवश्यक प्रक्रियायें प्रदान करते हैं तथा अस्तित्व के लिए आवश्यक होते हैं। एंटीबायोटिक्स या प्रतिजैविक पदार्थ बिना रोग प्रतिरोधक प्रक्रिया को लाभ दिये इन जीवाणुओं पर प्रत्यक्ष प्रहार करती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 88
Anti-Viral drops
विषाणु नाशक ड्रॉप्स

मूल-तत्व : कैरियोफाइलस एरोमेटिकस D3, कोक्साकी D30, D60, D200, डिफटैरिनम D30, D60, D200, एप्सटीन बार D30, D60, D200, यूफ्रेशिया D5, हर्पीज सिम्प्लेक्स D30, D60, D200, हर्पीज जोस्टर D30, D60, D200, इफ्लुएंसिनम D30, D60, D200, मोनोनुक्लियोसिस D30, D60, D200, मोरबिलिनम D30,D60,D200, पोलियो मायलिटिस D30, D60, D200, वी–ग्रिपे D30, D60, D200।

लक्षण : कोई भी विषाणु सम्बन्धी रोग, जैसे खसरा, मोनोन्यूक्लियोसिस (mononucleosis), हर्पीज़, फ्लू आदि रोगों में।

क्रिया विधि : **कोक्साकी (coxsackie), डिफटैरिनम, एप्सटीन बार (epstein) हर्पीज सिम्प्लेक्स, हर्पीज ज़ोस्टर, इंफ्लुएसिनम, मोनो-नुक्लियोसिस, मोरबिलिनम, पोलियोमायलिटिस, वी-ग्रिपे :** उपर्युक्त मूल–तत्व अत्यधिक घुलनशील होते हैं, जिससे कोई भी विषाणु उत्पाद में नहीं रह जाते, परन्तु विषाणुओं की शक्ति आक्रामकों के विरुद्ध रक्षा करने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। यह विषाणुओं के विरुद्ध प्राकृतिक सुरक्षा को रक्षात्मक ढंग से (बिना कुप्रभाव के) बढ़ाने के लिए एक सुरक्षित टीकाकरण या रोगक्षमीकरण फॉर्मूला (इम्युनाइजेशन) बन जाता है।

कैरियोफॉइलस एरोमेटिक्स : प्राकृतिक वायरस नाशक (Antiviral)।

यूफ्रेशिया : रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली औषधि (immune stimulant)।

खुराक की मात्रा: प्राकृतिक टीकाकरण के फार्मूले के रूप में, यह विषाणु रोधी फार्मूला बच्चों के लिए सुरक्षित है, तथा तीन दिन तक दिन में तीन बार 3 बूँद देना चाहिए, दो वर्ष की आयु तक प्रत्येक माह। यह फार्मूला नाभि में लगा कर स्वयं बच्चे के हाथ से मलवा सकते हैं। बड़े बच्चों या वयस्कों के लिए प्रयोग करने के लिए

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिदिन 3 बार 10 बूँद वायरल रोग दूर करने के लिए, अथवा दिन में एक बार 10 बूँद रोग–रोधक के रूप में प्रयोग करें।

टिप्पणी : इंफ्लुएंजा में R6, बुखार के लिए R1, चिकेन पॉक्स में R68, हर्पीज़ ज़ोस्टर (Herpes Zoster) में R68, R30, खसरे में R 62, कनफेड़ों (mumps) में R1, R26, खाँसी में R8, R9।

रोगी को मांसाहार से दूर रखें और विटामिन–सी का प्रयोग और जरूरी फैटी एसिड (fatty acids) का प्रयोग बढ़ायें।

संक्रमण से लेकर रोग–लक्षण प्रकट होने तक की अवधि फंगल–संक्रमण में R82

रोगाणु संक्रमण में R87

तनाव की स्थिति होने पर वीटा–सी फोर्ट।

रोग के कारणों का इतिहास : विषाणुओं का संपर्क होने पर अंतः संचरण आरंभ होता है, जिसके उपरांत रोग होता है। संक्रमण से लेकर रोग–लक्षण प्रकट होने तक की अवधि के दौरान रोग–प्रतिरोधक क्षमता की स्थिति वायरल रोग के जीवन की तीव्रता तथा अवधि निर्धारित करती है। वायरस से संपर्क बचाना महत्वपूर्ण होता है, किन्तु इससे भी महत्वपूर्ण होता है रोग प्रतिरोधक क्षमता को सशक्त बनाना, जो विषाणु को बिना कोशिकाओं में रोग पहुँचाये कार्य करने देती है। वायरस RNA या DNA के आधुनिक स्वरूप हैं, जो जैविक शरीर से संदेश ले जाते हैं। प्रकृति में विषाणुओं को जीवाणुओं तथा कवकों के द्वारा नियंत्रित रखा जाता है। सूक्ष्म जीवों का यह त्रिकोण एक आवश्यक संतुलन प्रदान करता है, जिससे इनमें से कोई भी अधिक प्रभावशाली न बन सके।

अतिरिक्त एंटीबायोटिक्स इस संतुलन को बिगाड़ देते हैं तथा वायरस तथा फंगल में व द्धि हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग R 89
Essential fatty Acids drops
(Hair related problems)
बालों के गिरने एवं झड़ने की समस्या के लिए

मूल-तत्व : अल्फाल्फा D3, हाइपोफाइसिस D30, जुगलैंस D12, केलियम फॉस्फोरिकम D4, D6, D12, लैक्टुका सैटिवा D2, लेसिथिनम D3, ओनोथेरा बाइएनिस D3, पॉलिसोरबैटम D3, टेस्टिस D30।

लक्षण : बाल गिरना, गंजपन, समय पूर्व बाल गिरना, समय पूर्व बाल सफेद होना, कमजोरी, तले भोजन की अधिक इच्छा, सिरदर्द।

क्रिया विधि : **अल्फाल्फा, लैक्टुलका सैटिवा, लेसिथिनम, ओनोथेरा बाइएनिस** : हार्मोन प्रतिरोधी प्रभाव के लिए, बाल गिरने पर स्थानिक प्रयोग के लिए।

हाइपोफिसिस : बालों में व द्धि स्थिर करने के लिए।

जुगलैंस : रक्तशोधक, अनिवार्य वसायुक्त अम्ल (fatty acids)।

कैलियम फॉस्फोरिकम : बाल पुनः प्राप्त करने के लिए सुपरिचित बायोकेमिक कोशिकीय तत्व।

पॉलिसोरबैटम. : असमय (Premature) गंजेपन का स्थानिक उपचार।

टेस्टिस : ग्रंथीय क्रिया पर प्रभावी औषधि।

खुराक की मात्रा: प्रतिदिन 3 बार भोजन के बाद 20-30 बूंदें; प्रतिदिन एक बार 5 मिनट तक गंजे भाग की अच्छी तरह मालिश करें।

टिप्पणी : रक्त की विषाक्त अवस्था (toxemia) में R26, R60 का प्रयोग करें, रक्त की दूषित अवस्था (septicemia) में : R82, R87, R88, त्वचा सम्बन्धी विकारों में R21, R23, ग्रंथीय संतुलन में R19, R20, अल्परक्तता में R31, कब्जियत (Constipation) में R37।

रोग के कारणों का इतिहास : अत्यधिक. पुरुष–यौन हार्मोन, अनुपयुक्त वसायुक्त अम्ल तथा वसा उपापचय या अशुद्ध रक्त के कारण गंजापन अथवा केशाभाव हो सकता है। वंशानुक्रम भी कुछ भूमिका अदा कर सकता है, किंतु अधिकांशतः बच्चे अनुपयुक्त जीवन शैली और खाने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंदतें अपनाते हैं, जिसके कारण बाल गिर सकते हैं। वसायुक्त अम्ल उन हॉर्मोन तथा विषाक्त पदार्थों की रोकथाम करते हैं जिनके कारण बाल गिरते हैं। सब्जियों में उचित वसायुक्त अम्ल होते हैं, किंतु ये ताप के प्रति संवेदनशील होते हैं, और 45° सेल्सियस या कम तापमान पर नष्ट हो जाते हैं। अत्यधिक पके हुए या प्रोसेस किए हुए भोजन करने से उनका अवशोषण सीमित हो जाता है। ताप दिए गए पशु या वनस्पति वसा शरीर में दुर्गन्धित हो जाते हैं, आँतीय मार्गो के द्वारा लसिका प्रवाह में जाते हुए लीवर के निर्विषीकरण प्रक्रिया का अतिक्रमण करते हैं और शरीर में कोशिकीय क्षति पहुंचाते हैं। अशुद्ध या विषयुक्त रक्त के कारण भी बाल गिर सकते हैं तथा त्वचा प्रभावित हो सकती है। इसलिए कुछ विषरक्तता (toxemia) अथवा रक्त की दूषित अवस्था (Septmia) बाल गिरा सकती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेकवेग-अल्फाल्फा टॉनिक

General Tonic—Energizes vital function

बलवर्धक औषधि - जैवीय कार्य को शक्ति देने वाला

मूल-तत्व : एसिडम फॉस D2, अल्फाल्फा Ø, अवेना सैटिवा Ø, कैल्शियम फास्फोरिकम D6, चाइना Ø, सिनामोमम Ø, जिसेंग Ø, हाइड्रास्टिस Ø, मैगनेशियम फॉस्फोरिकम D6, नक्स वोमिका D3.

लक्षण : खून की कमी होना (anaemia), भूख न लगना, रोग मुक्ति के बाद, विशेषकर कमजोरी लाने वाले बुखार या सर्जिकल ऑपरेशन के बाद, गर्भ के बाद, वजन की कमी आदि अवस्थायें तथा बढ़ते बच्चों में।

क्रिया विधि : दुर्बलता की अनुभूति तथा अत्यधिक परिश्रम या चिन्ता करने के कारण होने वाली अधीरता को तीव्र गति से कम करती है तथा रोगी की अवस्था में सर्वांगीण सुधार लाती है।

एसिडम फॉसफोरिकम : शारीरिक और मानसिक थकान, नपुंसकता, स्वप्नदोष, एकाग्रता का अभाव, उदासीनता, दिन में नींद आना।

अवेना सैटिवा : तंत्रिका दौर्बल्य, मानसिक रूप से अत्यधिक थकान, यौन सम्बन्धी कमजोरी, विटामिन और खनिज पदार्थों से भरपूर औषधि।

कैल्शियम फॉस्फोरिकम : कैल्शियम की कमी पूरी करने वाली तथा हड्डियों का विकास करने वाली औषधि।

चाइना : शारीरिक द्रवों की कमी तथा थकान के बाद, बीमारियों व तदुपरांत नपुंसकता के लिए सामान्य बलवर्धक औषधि।

सिनामोमम : रोगमुक्ति के बाद स्वास्थ्य में सुधार लाती है, सभी प्रकार के रक्तस्राव को नियंत्रित करती है।

जिसेंग : विटामिन B 1, तथा B 2, (थायमीन तथा रिबोफ्लेविन) एवं इसमें उपस्थित सल्फरयुक्त खनिज तत्वों के कारण इसके उपयोग से उत्क ष्ट शक्तिदायक परिणाम निकलते हैं।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाइड्रैस्टिस : बीमारी में सामान्य टॉनिक : वजन कम होना, थकान, दुर्बलता से सम्बन्धित।

मैग्नेशियम फॉस्फोरिकम : केन्द्रीय तंत्रिका प्रणाली की स्थिरता नसों तथा पेशियों में पीड़ा तथा मरोड़, नाड़ियों में तेज दर्द पर काबू करती है।

अल्फाल्फा : इसमें अमीनो अम्ल होता है जो शारीरिक संरचना के लिए जरूरी है।

नक्स वोमिका : स्नायु–तन्त्रिकाओं के मरोड़ में स्थिरता लाती है।

खुराक की मात्रा: वयस्कों के लिए एक बड़ा चम्मच, बच्चों के लिए एक छोटा चम्मच भोजन के पूर्व दिन में तीन बार।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

आप इस पुस्तक की एक और प्रतिलिपि ले सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णतया: निशुल्क !!!

कृप्या निम्न कूपन को भरिये और डाक/फैक्स/ई-मेल द्वारा नीचे लिखें पते पर भेजे :

भारत में रेक्वेग उत्पादों के वितरक

डा० रोशन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स प्रा० लि०

16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 (भारत)

फोन : 23271372, 23265698 फैक्स : 91-11-23282080

ई–मेल : roshanl@vsnl.com

www.reckeweg-india.com

कृप्या साफ अक्षरों में भरें

नाम : ....

पता : ....

....

....

शहर : .... पिन : ☐☐☐☐☐☐

दूरभाष : .... STD कोड : ....

व्यवसाय : ....

भाषा : अंग्रेजी / हिन्दी / उर्दू ....

महत्वपूर्ण : अपूर्ण डाक-टिकिट के साथ भेजी गई प्रार्थना मान्य नहीं होगी ।

10-2014

RajGuru Math, Shivala, Va... Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेक्वेग के उत्पाद - बेहतर चुनाव

यहाँ 6.00 रू. का टिकट लगाएँ

सेवा में,

डॉ० रोशन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स प्रा० लि०

16, नेताजी सुभाष मार्ग,

दरियागंज,

नई दिल्ली 110002

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Dr. Reckeweg's सिनेरिया

अल्कोहल रहित ● जलन रहित आँखों की ड्रॉप्स

जानकारी :

डॉ. रेकवेग का सिनेरिया आई ड्रॉप अनुभवी वैज्ञानिकों तथा तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा, जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया के अनुसार अविष्क त किया गया है। जोकि उत्क ष्ट रूप से प्रभावशाली औषधि है। इसे पूर्णतया अल्कोहल मुक्त रखा गया है क्योंकि अल्कोहल आँखों में जलन पैदा करता है। जिससे संभावित नुकसान का खतरा होता है।

डॉ. रेकवेग के सिनेरिया आई ड्रॉप की packing (बोतलें) तथा भराई पूर्णतया आधुनिकतम एवं श्रेष्ठतम विकसित तकनीकी ज्ञान पर आधारित है। इसे स्वचालित मशीनों द्वारा, जीवाणु रहित वातावरण में हाथों से बिना छुए हुए एक विशेष "Bottle Pack System" द्वारा तैयार किया जाता है।

आँखों के निम्न रोगों में प्रभावकारी :

- मोतियाबिंद
- आँखों का पुराना शोथ/प्रदाह (आँख आना, सूजन, जलन)
- आँख आने के साथ दुखन और खुजली
- गठिया, मधुमेह या अधिक आयु के कारण पाचन शक्ति मंद पड़ जाने से पुतली का धुँधलापन
- पलकों के प्रदाह के साथ सूजन
- दानें–गाँठे (NUBECULA)
- वायु–प्रदूषण या अत्यधिक पढ़ाई, ड्राईविंग, टी.वी. देखने या अन्य किसी कारणवश आँखों में आवश्यकता से अधिक तनाव
- जलन युक्त आँखों के अन्य रोग
- व द्धों की द ष्टि सम्बन्धी परेशानियाँ

प्रयोग विधि :

दो–दो बूँदें दिन में तीन बार आँखों में डालें तत्पश्चात् आँखों को कुछ समय के लिए बंद रखें अथवा चिकित्सक के परामर्श अनुसार दवा का उपयोग करें।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पूर्ण जानकारी

तकनीकी श्रेष्ठता

अनुभवी वैज्ञानिकों तथा तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा, जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया के अनुसार बनाई गयी उत्कृष्ट रूप से प्रभाव शाली दवा।

अल्कोहल मुक्त

वर्तमान समय में भारत में उपलब्ध जर्मन सिनेरेरिया ड्राप्स की 9.25% से भी अधिक अल्कोहल की मात्रा में जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया अनुमति नहीं देता केवल 1% से अधिक अल्कोहल संमूल–तत्व की अनुमति देता है, क्योंकि अल्कोहल के अत्यधिक प्रयोग से संभावित नुकसान का खतरा होता है।

जलन का अभाव

वर्तमान जर्मन फार्माकोपिया DAB 10+ जलन रहित आई ड्रॉप्स की गारंटी देता है। आँखों में होने वाली जलन के कारण आँखों के द्रव की व द्धि होती है, फलस्वरूप दवा का उपयोग होने के पूर्व ही वह बह जाती है।

आधुनिकतम निर्माण तकनीक :

आधुनिकतम एवं श्रेष्ठतम विकसित तकनीकी ज्ञान पर आधारित निर्माण, जहाँ उपभोक्ता और पर्यावरण के अनुरूप बोतलें बनाई जाती हैं, जीवाणु रहित स्थितियों में भरी जाती हैं और हाथों से बिना छुए हुए एक संक्षिप्त मशीन "Bottle Pack System" में सील की जाती है।

उपभोक्ता के अनुरूप :

* अल्कोहल के अभाव के कारण जलनरहित, किसी भी उम्र में प्रयोग कर सकते हैं।
* अवशेष सम्बन्धी कोई नुकसान नहीं, अंतिम बूँद तक प्रयोग की जा सकती है।
* चुराने में दुर्भेद्य, नकल या पुनः भराई संभव नहीं।
* तटस्थ pH आधार, आइसोटोन।
* प्रयोग में आसान।

पर्यावरण

पर्यावरण के अनुरूप, 100% पुनः चालित करने के योग्य।

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Clinical Repertory संकेत सूची

Abscesses (फोड़े) .... डा० रेकवेग R 1
Adams Stoke's Syndrome (एडम स्टोक सिंड्रोम) .... डा० रेकवेग R 66
डा० रेकवेग R 52
Adenoids (गले की गिल्टी) .... डा० रेकवेग R 1
Adiposity (Overweight) (चर्बीलापन, मोटापा) .... डा० रेकवेग R 59, 19, 20
Adnexitis (डिंबवाही नलियों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 38, 39
Acne vulgaris (मुँहासे) .... डा० रेकवेग R 53
Acro paraesthesia (शाखा अपसंवेदन) .... डा० रेकवेग R 60, 63
Albuminuria (पेशाब में अल्ब्यूमिन जाना) .... डा० रेकवेग R 64
Allergies (एलर्जी) .... डा० रेकवेग R 23
Allergy, food (खाने से एलर्जी) .... डा० रेकवेग R 83
Allergy, inhalent (श्वसन एलर्जी) .... डा० रेकवेग R 84
Alopecia (केशाभाव) .... डा० रेकवेग R 89
Anaemia (खून की कमी) .... डा० रेकवेग R 31 अल्फाल्फा टोनिक
Anal eczema (मलद्वार पर एग्जीमा) .... डा० रेकवेग R 13
Anal fissures (गुदा में फटन) .... डा० रेकवेग R 13
Angina pectoris (ह्रदय शूल) (Heart Pain) ---------- डा० रेकवेग R 2, 3, 66
Ankylosing spondylitis (बद्ध कशेरुकीय संधिशोथ) .... डा० रेकवेग R 11
Aortalgia (बड़ी धमनी सम्बन्धी दर्द) (Ortalgia) ---------- डा० रेकवेग R 2
Aortic sclerosis (महाधमनी का कड़ापन) .... डा० रेकवेग R 12
Aphonia (स्वरलोप) .... डा० रेकवेग R 45
Apoplexy (मिर्गी) .... डा० रेकवेग R 55, 67, 12
Appendicitis, acute (उपाँत्रं शोथ) .... डा० रेकवेग R 24, 38
Appendicitis, chronic (उपान्त्रशोथ, पुराना) .... डा० रेकवेग R 1, 24, 38
Appetite, loss of (भूख न लगना) .... डा० रेकवेग R 31, अल्फाल्फा टोनिक
Appetite, loss of (भूख कम लगना) .... अल्फाल्फा टॉनिक
Arteriosclerosis (धमनी काठिन्य) .... डा० रेकवेग R 12

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Arthralgia (संधि पीड़ा) (Joint Pain) .... डा० रेकवेग R 81
Arthritis (जोड़ों का दर्द) (गठिया) .... डा० रेकवेग R 1, 46, 24, 30
Arthritis, osteo (जोड़ों के आसपास की सूजन) .... डा० रेकवेग R 73, 30
Arthritis of vertebrae (कशेरूकाओं के जोडों का दर्द) .... डा० रेकवेग R 11
Ascaris (बारीक कीड़े) (मल में) .... डा० रेकवेग R 56
Ascites (जलोदर) .... डा० रेकवेग R 58, 7
Asthma (दमा) .... डा० रेकवेग R 43, 48, 34
जटूसिन R 8 (सिरप)
जटूसिन R 9 (ड्रॉप्स)
Asthma, constitutional (दमा) .... डा० रेकवेग R 76
Backpain, lower, in the female (स्त्रियों में कमर के निचले हिस्से में दर्द). डा० रेकवेग R 11, 50, R 30
Bacteriuria (जीवाणु मेह) .... डा० रेकवेग R 18
Baldness (गंजापन) .... डा० रेकवेग R 89
Basedow's disease (नेत्रोत्सेधी गलगण्ड) .... डा० रेकवेग R 51
Blackheads (कील–मुहाँसे अथवा चेहरे पर फुंसियां निकलना) .... डा० रेकवेग R 53
Blepharitis (पलकों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 78
Blood-impurities (रक्त की अशुद्धता) .... डा० रेकवेग R 60
Blood Pressure (रक्त चाप) .... डा० रेकवेग R 85
Boils (फोड़ा, फुंसी) .... डा० रेकवेग R 1, 30
Bronchitis (श्वास नली का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 6, 48, 57
जटूसिन R 8 (सिरप)
जटूसिन R 9 (ड्रॉप्स)
Bronchopneumonia (श्वास नली तथा फैफड़ों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 6
Calcium, malassimilation of (हड्डियों का भुरभुरापन) .... डा० रेकवेग R 34
Calf muscle, cramps (पिंडली की मरोड़) .... डा० रेकवेग R 63
Carbuncle (नासूर) .... डा० रेकवेग R 1
Cardiac decompensation (हृदय कीं क्षतिपूर्ति के लिए) .... डा० रेकवेग R 58, 3
Cardiac arrythmia (हृदय की अतालता) .... डा० रेकवेग R 66, 3
Cardiac neurosis (हृदय सम्बन्धी मनोविक्षेप) .... डा० रेकवेग R 22

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Cataract, incipient (मोतिया बिंद) .... डा० रेकवेग R 78

Cerebral sclerosis (दिमाग का कड़ापन) .... डा० रेकवेग R 12

Children, oversensitivity in (बच्चे में अधिक संवेदनशीलता) .... डा० रेकवेग R 54, 36

Cholangitis (पित्त नली का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 7

Cholecystitis (पित्त कोष का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 7

Cholelithiasis (पित्त की पथरी) .... डा० रेकवेग R 1, 7, 37

Chorea, minor (नर्तन रोग) .... डा० रेकवेग R 36

Chronic appendicitis (पुराना उपांत्र प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 24, 38

Circulatory disturbances (रक्त संचार की परेशानी)............ डा० रेकवेग R 67

Cirrhosis of liver (जिगर (यक त) का सूत्रण रोग) .... डा० रेकवेग R 7

Climacteric complaints (रजोनिव तिकालीन रोग) .... डा० रेकवेग R 10

Cold, common (सर्दी–जुकाम) .... डा० रेकवेग R 6

Colics (पेट का दर्द) .... डा० रेकवेग R 37

Colitis (बड़ी आंत का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 4

Collapse (निपात) .... डा० रेकवेग R 67

Comendones (कील–मुहाँसे) .... डा० रेकवेग R 53

Conjunctivitis (आँखों की श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 62

Cunjunctivitis, Catarrhal (आंखों की झिल्ली का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 78

Cunjunctivitis, chronic (आंखों की झिल्ली का पुराना प्रदाह)...... डा० रेकवेग R 78

Constipation (कब्ज) .... डा० रेकवेग R 7, 37,77

Convalescence (रोग निव त्ति).. विटा सी–15

अल्फाल्फा टोनिक

डा० रेकवेग R 31, 41

Coronary insufficiency (रक्तवाहिनी संबंधी परेशानी).......... डा० रेकवेग R 2, 3

Coronary sclerosis (रक्तवाहिनियों का कड़ापन)................ डा० रेकवेग R 2, 12

Craddle cap (क्रेडल केप) .... डा० रेकवेग R 34, 23

Craving stimulants (लालसा) .... डा० रेकवेग R 86

Cystitis (मूत्राशय. का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 18, 25

Cysto-pyelitis (मूत्राशय व क्कवस्ति का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 18, 27, 64

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Dental root, inflammation of (दांतों के जोड़ों में दर्द) .... डा० रेकवेग R 1
Depression (post prandial) (अवसाद) .... डा० रेकवेग R 86
Diabetes mell (बहुमूत्र) .... डा० रेकवेग R 40
Diarrhoea (दस्त) .... डा० रेकवेग R 4
'Diplopia (दोहरा दिखाई देना) .... डा० रेकवेग R 78
Disc lesions (बिम्ब चोट) .... डा० रेकवेग R 11
Dysmenorrhoea (पीड़ायुक्त मासिक धर्म) .... डा० रेकवेग R 75

Earache (कान का दर्द) .... डा० रेकवेग R 82
Ear itch (कान की खुजली) .... डा० रेकवेग R 82
Eating helps symptoms (खाने से लक्षणों में आराम) .... डा० रेकवेग R 86
Eczema (एग्जिमा, दाद) .... डा० रेकवेग R 23, 21
Empyema (फुफ्फुसावरण में पीब भरना) .... डा० रेकवेग R 1
Endangitis obliterans (अभिलोपन अंतःवाहिका शोथ) .... डा० रेकवेग R 63
Endocrine glands, disturbances of (नलिकाविहीन ग्रंथियों की परेशानी में) .... डा० रेकवेग R 19, 20
Endocarditis (हृदयावरण झिल्ली का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 3
Enterits (आंतों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 4
Enterocolitis (छोटी व बड़ी आंतों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 4
Enuresis (नींद में पेशाब कर देना) .... डा० रेकवेग R 74
Epilepsy (मिरगी) .... डा० रेकवेग R 33
Exhaustion (थकान) .... विटा सी—15
Eyestrain (आंखों के लिए) .... डा० रेकवेग R 78

Fatigue (थकावट के लिए) .... डा० रेकवेग R 86
Fever, debilitating (बुखार, कमजोरी) .... अल्फाल्फा टोनिक
Fever, debilitating (बुखार) .... अल्फाल्फा टॉनिक
Fingernails, discoloration (अंगुली के नाखूनों में परेशानी) .... डा० रेकवेग R 82
Flatulence (अफारा) .... डा० रेकवेग R 7, 37
Flu (फ्लू) .... डा० रेकवेग R 88
Food craving (भोजन की इच्छा) .... डा० रेकवेग R 86
Foot, athletes (पैरों का दाद) .... डा० रेकवेग R 82

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Furunculosis (फुन्सी रोग) .... डा० रेकवेग R 1, 30

Gastritis (जठर शोथ) .... डा० रेकवेग R 5

Gastro-cardial syndrome (जठर व हृदय संबंधी रोग) .... डा० रेकवेग R 5, 2, 3

Gastro-duodenitis (आमाशय एवं ग हणी का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 5

Gastro-enteritis (जठर शोथ) .... डा० रेकवेग R 4

Geriaticum (व द्धावस्था चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी) .... डा० रेकवेग R 12, 2, 54

German measles (जर्मनी खसरा) .... डा० रेकवेग R 62

Glands, disturbances of (ग्रंथियों की परेशानी में) .... डा० रेकवेग R 19, 20, 59

Globus hystericus (जरायु गोला) .... डा० रेकवेग R 47

Goitre (घेंघा) .... डा० रेकवेग R 51, 12, 59

Grave's disease (नेत्रौसेथी गलगण्ड) .... डा० रेकवेग R 51

Grey hair, premature (भूरे बालों के लिए) .... डा० रेकवेग R 89

Growing children (बढ़ते हुए बच्चों के लिए) .... अल्फाल्फा टोनिक

Hair loss, premature (बाल गिरने, झड़ने पर) .... डा० रेकवेग R 89

Headache (सिर दर्द) .... डा० रेकवेग R 77, 81, 86, 89

Hemorrhoids (बवासीर) .... डा० रेकवेग R 13

Helminthiasis (क मिरुग्णता) .... डा० रेकवेग R 56

Hemicrania (आधा शीशी) .... डा० रेकवेग R 16

Hepatitis (जिगर का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 7, 1

Herpes zoster (हर्पीज़ जोस्टर) .... डा० रेकवेग R 68, 88

Hilar TB (हिलर टी०बी०) .... डा० रेकवेग R 57

Hordeolums (गुहेरी) .... डा० रेकवेग R 78

Hyperhidrosis (पसीने की अधिकता) .... डा० रेकवेग R 32

Hypertension (बढ़ता हुआ रक्त दाब) .... डा० रेकवेग R 85

Hypertonia (उच्च रक्तचाप) .... डा० रेकवेग R 12

Hypotonia (निम्न रक्तचाप) .... डा० रेकवेग R 44, 67, 29, 52

Hypoadrenia (एड्रीनल की अल्प क्रिया) .... डा० रेकवेग R 86

Immune system (रोग प्रतिरोधक प्रणाली) .... डा० रेकवेग R 87

Impotence (नपुंसकता) .... डा० रेकवेग R 41

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Immuneglobulin, formation of (रोगक्षमताजनक) .... डा० रेकवेग R 26
Inability to concentrate (दिमाग की एकाग्रता के लिए) .... डा० रेकवेग R 86
Infection, bacterial (जीवाणु संक्रमण) .... डा० रेकवेग R 87
Infection, external (संक्रमण बाहरी) .... डा० रेकवेग R 87
Infections, fungal (संक्रमण कवक सम्बन्धी) .... डा० रेकवेग R 82
Infections, internal (संक्रमण आंतरिक) .... डा० रेकवेग R 87
Infiltration, bacterial (अंतसंचरण बेक्टीरियल) .... डा० रेकवेग R 87
Influenza (श्लैष्मिक ज्वर) .... डा० रेकवेग R 6
Injuries (चोट व घाव) .... डा० रेकवेग R 55
Intercostal neuralgia (पसलियों के बीच तंत्रिका शूल) .... डा० रेकवेग R69, 68, 24
Intermittent claudication (विरामी लंगड़ापन) .... डा० रेकवेग R 63, 12
Irritability (चिड़चिड़ापन) .... डा० रेकवेग R 86

Jaundice (पीलिया) .... डा० रेकवेग R 7
Jock itch (अरुमूल की खुजली) .... डा० रेकवेग R 82

Laryngitis (स्वर यंत्र प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 45
Leucorrhea (श्वेत प्रदर) .... डा० रेकवेग R 10
Liver, diseases of (लीवर की बीमारी में) .... डा० रेकवेग R 7, 77
Lumbago (कमर दर्द) .... डा० रेकवेग R 11, 30
Lung, TB of (फेफड़ों में टी० बी०) .... डा० रेकवेग R 57, 48
Lymphadenitis (लसीकापर्व शोथ) .... डा० रेकवेग R 1
Lymphangitis (लसीका वाहिनी शोथ) .... डा० रेकवेग R 1

Mastitis (स्तनों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1
Measles (खसरा) .... डा० रेकवेग R 62
डा० रेकवेग R 88
Menorrhagia (अति रक्त स्राव) .... डा० रेकवेग R 28
Meteorism (अफारा) .... डा० रेकवेग R 7, 5
Metrorrhagia (रक्त प्रदर) .... डा० रेकवेग R 28, 10
Migraine (आधे सिर का दर्द) .... डा० रेकवेग R 16
Mono nucleosis (चुम्बन रुग्णता) .... डा० रेकवेग R 88

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Muscular rheumatism (माँसपेशियों का आमवात) .... डा० रेकवेग R 11, 30
Myocardial infarct (हृदय पेशीय रोगाघात) .... डा० रेकवेग R 67, 55, 2
Myocardial insufficiency (हृदय पेशीय अपर्याप्तता) .... डा० रेकवेग R 3
Myocarditis (हृदय पेशीय संबंधी प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 3
Nausea (मतली) .... डा० रेकवेग R 52, 5
डा० रेकवेग R 77
Nephritis (गुर्दे का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 64
Nephrolithiasis (गुर्दे की पथरी बनना) .... डा० रेकवेग R 27
Nephrosclerosis (गुर्दे की कठोरता) .... डा० रेकवेग R 12
Nephrosis (गुर्दे की बीमारी) .... डा० रेकवेग R 64
Neuralgia (नाड़ी शूल) .... एटोमेयर बेकरॉन R 30, 70
Obesity (Overweight) (मोटापा) .... डा० रेकवेग R 59, 19, 20
Occipital neuralgia (सिर के पिछले भाग में दर्द) .... डा० रेकवेग R 16, 70, 6
Oedemas (जल शोथ) .... डा० रेकवेग R 58, 64
Opacity of vitreum (आँखों का धुंधलापन) .... डा० रेकवेग R 78
Operation, surgical (शल्य–चिकित्सा) .... अल्फाल्फा टॉनिक
Osteo-arthritis (जोड़ों के आसपास की सूजन) .... डा० रेकवेग R 73,
एटोमेयर बेकरॉन R 30
Osteochondritis (अस्थि और उपास्थि दोनों का दर्द) .... डा० रेकवेग R 11
Osteomalacia (हड्डियों का नरम पड़ जाना) .... डा० रेकवेग R 34
Osteoporosis (अस्थि सुषिरता) .... डा० रेकवेग R 34
Ovaritis (अण्डाशय का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1
Ovarian cyst (डिम्ब ग्रन्थि में कोशिका) .... डा० रेकवेग R 38, 39
Oversensitivity of children (अति संवेदनशील बच्चों के लिए) ....
डा० रेकवेग R 54, 36
Oxyuriasis (क मि) (Worms) .... डा० रेकवेग R 56
Panaritium (हाथ या पैर की अगुली का पीबयुकत प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1
Pains, Myalgic (पेशियों में दर्द) .... डा० रेकवेग R 81
Pains, neuralgic (स्नायविक दर्द) .... डा० रेकवेग R 81

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Pains, stomach (पेट का दर्द) .... डा० रेकवेग R 37, 77
Palpitation, arrhythmic (धड़कन सम्बन्धी अतालता) .... डा० रेक्वेग R 60, 77
Pancreatitis (पाचक ग्रन्थि का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 72
Paraesthesias (अपसंवेदन) .... डा० रेकवेग R 63, 71
Parametritis (ऊतकों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 38, 39, 10
Parotitis (कनपेड) .... डा० रेकवेग R 1
Peripheral circulatory disturbances (परिसरीय संचार में रूकावट) ....
डा० रेकवेग R 63

Pertussis (काली खांसी) .... डा० रेकवेग जटूसिन ड्राप्स R 9
डा० रेकवेग जटूसिन सीरप R 8

Phlegmon (फोड़ा) .... डा० रेकवेग R 1
Pleuritis (फेफड़े की झिल्ली का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 24
Pregnancy (गर्भावस्था) .... अल्फाल्फा टोनिक
Prostate, hypertrophy of (पुरुष ग्रंथियों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 25
Prostatitis (पुरःस्थग्रन्थि का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1, 25
Prostration (अवसाद) .... विटा–सी R 15
Pruritus vulvae (भग की खुजली) .... डा० रेकवेग R 10
Psoriasis (सोरियासिस) .... डा० रेकवेग R 65
Pyelitis (व क्कवास्थि का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 18

Quinsy (गल प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1

Raynaud's disease (रैनाड रोग) .... डा० रेकवेग R 63
Rheumatism (जोड़ों में दर्दनाक सूजन) .... डा० रेकवेग R 11, 46
एटोमेयर बेकरान डा० रेकवेग R 30

Rheumatoid arthritis, acute (गठिया नया) .... डा० रेकवेग R 1, 24, R 25
Rheumatoid arthritis, chronic (गठिया पुराना) .... डा० रेकवेग R 11, 3, 46
एटोमेयर बेकरान डा० रेकवेग R 30

Rickets (हड्डियों का टेढ़ापन) .... डा० रेकवेग R 34

Scarlet fever (रक्त ज्वर) .... डा० रेकवेग R 1
Sciatica (कटिस्नायुशूल) .... डा० रेकवेग R 71, 11

केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एटोमेयर बेकरान डा० रेक्वेग R 30

Scrofulosis (कंठमाला रोग) .... डा० रेकवेग R 60

Sea-sickness (समुद्री रुग्णता) .... डा० रेकवेग R 52

Shoulder-rheumatism (कंधे का गठिया) .... डा० रेकवेग R 46

Sinusitis (साइनस संबंधी) .... डा० रेकवेग R 1, 49

Skin, flaky (त्वचा पर पपडी) .... डा० रेकवेग R 82

Skin infections, fungal (कवक सम्बन्धी त्वचा में संक्रमण) .... डा० रेकवेग R 82

Smoker's hangover (धूम्रपान से बचने के लिए) .... डा० रेकवेग R 77

Soreness (दर्दनाक घाव के लिए) .... डा० रेकवेग R 82

Spasmophilia (ऐठन युक्त दर्द) .... डा० रेकवेग R 34

Spondylosis (कशेरूका संधियों का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 11

Stenocardia (ह्रदय शूल) .... डा० रेकवेग R 2

Stomatitis (मुख शोथ) .... डा० रेकवेग R 5

Symptoms hypoglycemic (रक्त में शर्करा की कमी में) ...... डा० रेकवेग R 86

Tonsillar hypertrophy (गलतुण्डिका संबंधी) .... डा० रेकवेग R 1

Tonsillitis (गलतुण्डिका प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 1

TB of lung (फेफड़ों की टी०बी०) .... डा० रेकवेग R 57, 48

Teething complaints in children (बच्चों के दांत निकलते समय परेशानी).......

डा० रेकवेग R 35, 34

Thrombophlebitis (थक्का टूटकर बिखरने के कारण शिरा का प्रदाह) ....

डा० रेकवेग R 42

Thrush in throat (गले में छाले) .... ड़ा० रेकवेग R 82

Thyreotoxicosis (थायराइड संबंधी) .... डा० रेकवेग R 51

Toothache (दांत के दर्द में) .... डा० रेकवेग R 35

Torticollis (गर्दन की अकड़न) .... डा० रेकवेग R 11

Tumors, maligant, benign (रसौली) .... डा० रेकवेग R 17

Tympanitis (मध्य कर्ण का प्रदाह) .... डा० रेकवेग R 77

Typhoid fever (मियादी बुखार) .... डा० रेकवेग R 4

Ulcer, duodenal, parapyloric (घाव) .... डा० रेकवेग R 5

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Ulcer, peptic (gastric) (उदर का फोड़ा) .... डा० रेकवेग R 5
Urticaria (शीत पित्त, पित्ति) .... डा० रेकवेग R 23
Uric acid diathesis (मूत्रामल) .... डा० रेकवेग R 7, 27
Varicellas (छोटी माता) .... डा० रेकवेग R 68
Varices (शिराओं का फूलना) .... डा० रेकवेग R 42
Vascular disturbances, peripheral (रक्तवाहिनी की परेशानी में) ....
डा० रेकवेग R 63
डा० रेकवेग R 77
Vertigo (सिर चकराना) .... डा० रेकवेग R 29
Weakness (कमजोरी) .... डा० रेकवेग R 89
Weigh, loss of (वजन घटने पर) .... अल्फाल्फा टॉनिक
Withdrawal of smokers (धूम्रपान छुड़ाने के लिए) .... डा० रेकवेग R 77
Worms (पेट के कीड़े के लिए) .... डा० रेकवेग R 56
Yeast, vaginal (खमीर योनि संबंधी) .... डा० रेकवेग R 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक्सक्लूसिव शोरुम

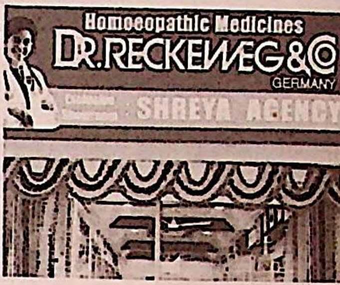

होम्योपैथिक दवाईयों के विश्व विख्यात उत्पादक डॉ. रेक्वेग एण्ड कम्पनी, जर्मनी बहुत सफलतापूर्वक अपने एक्सक्लूसिव शोरुम अमृतसर, दिल्ली, जयपुर, कानपुर, मुंबई, नागपुर आदि में चला रहे हैं।

इन शोरुम से आसपास के लोगों को डॉ. रेक्वेग के उत्पाद आसानी से और सही कीमत पर उपलब्ध होते हैं।

इन शोरुम का कार्यभार स्थानीय डीलर द्वारा देखा जाता है, जो इन शहरों में डॉ. रेक्वेग के उत्पादों के खास प्रोत्साहक है। इन शोरुम पर डॉक्टरी परामर्श की सुविधा भी उपलब्ध है।

कम्पनी के उत्पाद भारत के कोने-कोने में सी एण्ड एफ एजेन्ट्स, एक्सक्लूसिव शोरुम व 3000 से अधिक होलसेल विक्रेताओं द्वारा किया जाता है।

यह आश्चर्य की बात नहीं कि हर
3 सैकेंड में भारत में कहीं न कहीं
रेक्वेग का उत्पाद खरीदा जाता है।

भारत में No.1 जर्मन होम्योपैथिक ब्रांड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हार्ट ड्रॉप्स

- R2 हृदय टोनिक (गोल्ड ड्रॉप्स)
- R3 वॉल्व सम्बन्धी हृदय रोगों के लिए
- R44 निम्न रक्त चाप के लिए
- R66 अनियमित हृदय गति के लिए
- R67 रक्त संचरण की क्षीणता के लिए
- R85 उच्च रक्त चाप के लिए

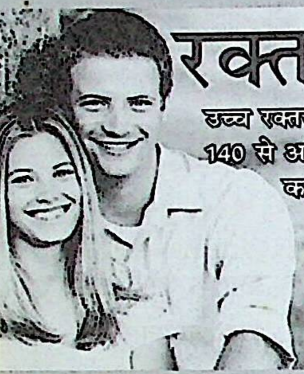

रक्तचाप

उच्च रक्तचाप : ऊपर का 140 से अधिक एवं नीचे का 90 से अधिक

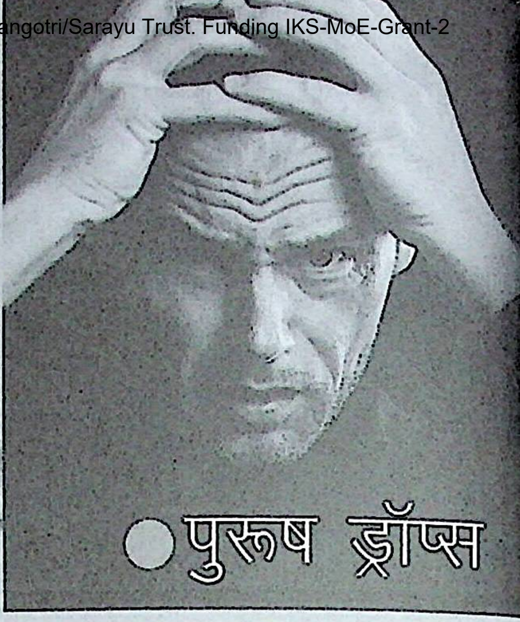

पुरूष ड्रॉप्स

प्रोस्टेट ड्रॉप्स	नपुंसकता ड्रॉप्स	स्नायु बलवर्धक (मानसिक थकान)	शारीरिक तथा मानसिक थकान (यौन-दुर्बलता)

महिलाओं के स्वस्थ सुचारू जीवन का आसान रास्ता

महिलाओं का शरीर पुरूषों से अलग है इसलिए बीमारियाँ व इलाज भी अलग है।

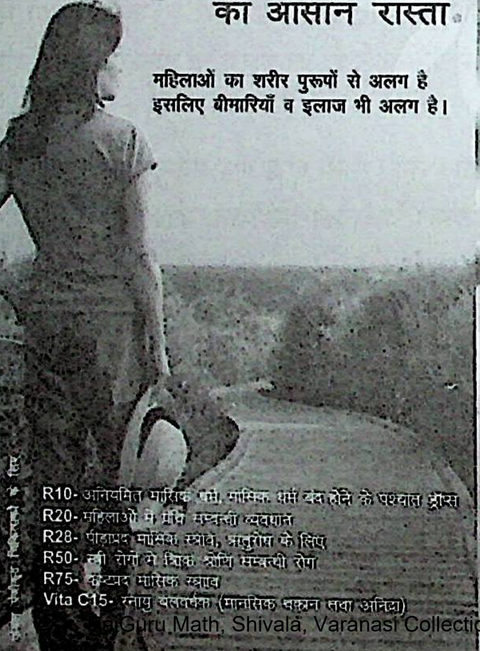

- R10- अनियमित मासिक धर्म, मासिक धर्म बंद होने के पश्चात ड्रॉप्स
- R20- महिलाओं में ग्रंथि सम्बन्धी व्यवधान
- R28- पीड़ाप्रद मासिक स्राव, अनुरोध के लिए
- R50- स्त्री रोगों में [illegible] सम्बन्धी रोग
- R75- कष्टप्रद मासिक स्राव
- Vita C15- स्नायु बलवर्धक (मानसिक थकान तथा अनिद्रा)

श्वसन रोग

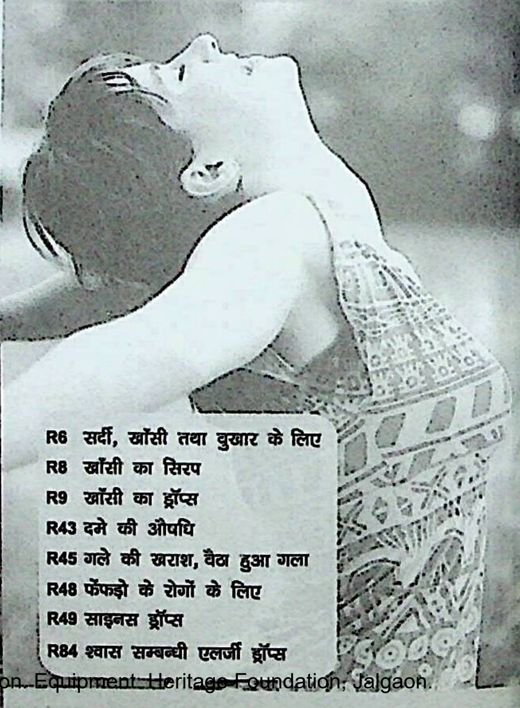

- R6 सर्दी, खाँसी तथा बुखार के लिए
- R8 खाँसी का सिरप
- R9 खाँसी का ड्रॉप्स
- R43 दमे की औषधि
- R45 गले की खराश, बैठा हुआ गला
- R48 फेंफड़ो के रोगों के लिए
- R49 साइनस ड्रॉप्स
- R84 श्वास सम्बन्धी एलर्जी ड्रॉप्स

Sri Sri RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हड्डियों सम्बन्धी

R11 कमर दर्द के लिए
R30 बहुउद्देशीय मरहम
R34 पुनः कैल्सीकरण ड्रॉप्स
R46 बाहों तथा हाथों के लिए
R55 सभी प्रकार की चोटों व घावों के लिए
R63 माँसपेशियों में ऐंठन
R69 पसलियों के बीच होने वाले दर्द के लिए
R71 सायटिका ड्राप्स
R73 जोड़ों के दर्द के लिए

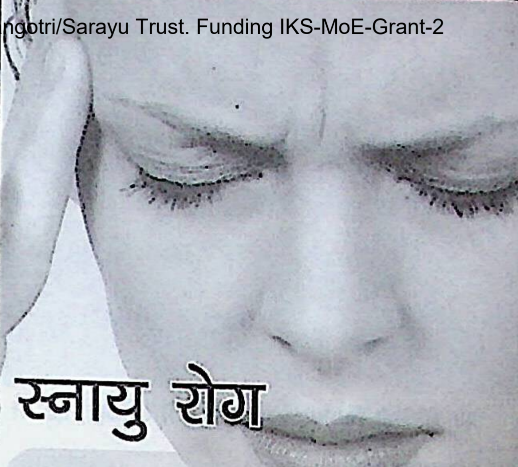

स्नायु रोग

R14 स्नायु एवं निद्रा ड्रॉप्स
R16 माइग्रेन ड्रॉप्स
R33 मिरगी ड्रॉप्स
R36 स्नायु रोग व अंग कम्पन
R42 नसों की कठोरता, फैलना व जलन के लिये
R54 मस्तिष्क के क्रियात्मक रोग (याददाश्त बढ़ाने के लिए)
R70 नस व नाड़ियों का दर्द

अस्त-व्यस्त जीवनशैली के कारण होने वाली रोगों से बचाव के लिए स्वस्थ उपाय

जीवन शैली ड्रॉप्स

R14 नींद के लिए ड्रॉप्स
R16 सिर का दर्द
R40 मधुमेह ड्रॉप्स
R59 मोटापा रोधक

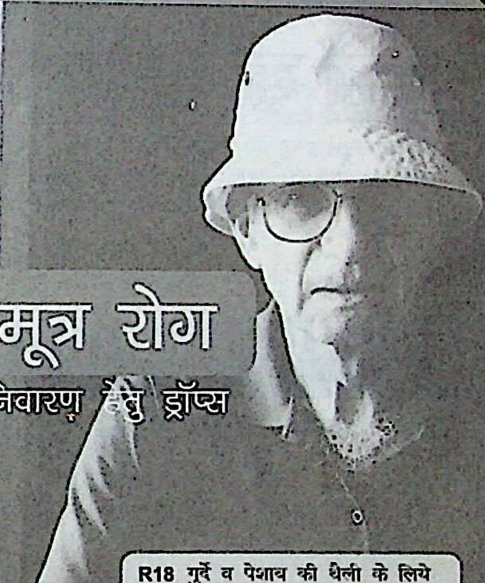

मूत्र रोग

निवारण हेतु ड्रॉप्स

R18 गुर्दे व पेशाब की थैली के लिये
R25 प्रोस्टेट ड्रॉप्स
R27 गुर्दे की पथरी के लिये
R64 पेशाब में एलब्यूमिन आने पर
R74 नींद में पेशाब निकल जाने पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

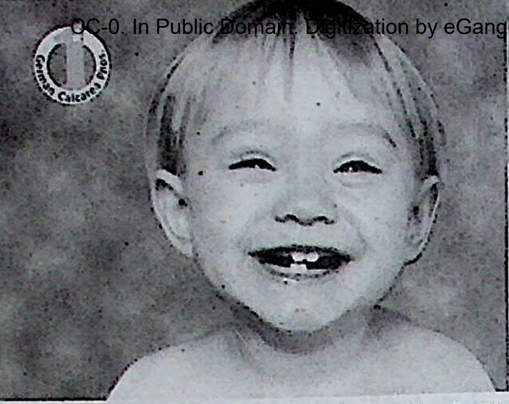

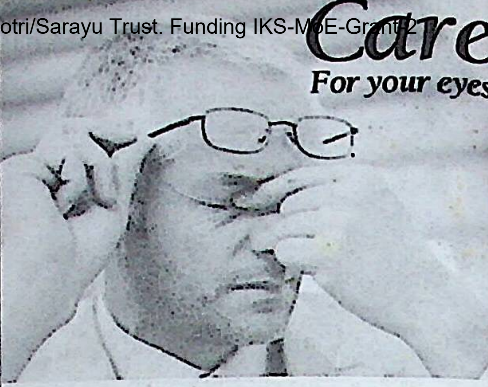

इसकी Soft Tablet बच्चों के गले में अटकती नही !!!

Dentition / Teething of infants
Broken bones / Fractures
Simple anemia
Weak digestion
Joints pain
Puberty and growth spurts
Tooth decay
Osteoporosis

ये बच्चों के दांत निकालने में मदद करती है और मूंह में डालते ही घुल जाती है।

डॉ. रेक्वेग की जर्मन
कलकेरिया फॉस
सर्वाधिक बिकने वाला जर्मन कलकेरिया फॉस

अल्कोहल-मुक्त सिनेरेरीया आई ड्रॉप्स

डॉ. रेक्वेग की अल्कोहल-मुक्त सिनेरेरीया आई ड्रॉप्स आँखों को शीघ्र ही और शीतलता देती है। यह अधिक समय तक पढ़ने, टी.वी. देखने, पर्यावरणीय धुआँ, गर्मी या फिर वातानुकूलन के कारण सिर दर्द, आँखों में जलन, चुभन शुष्कता, लगातार कम्प्यूटर पर काम करते समय पलक झपकने की आवृति में की वजह से होने वाले लक्षणों में राहत देती है।

डा० रेक्वेग जर्मन
सिनेरेरीया आई ड्र
आई ड्राप्स में अल्कोहल आपकी आँखों के लिए नुकसानदायक है !

बालों की समस्या ?

डॉ. रेक्वेग के पास इसका हल है

मधुमेह ?

मधुमेह के लक्षण :
- थकान, शिथिलता, कमज़ोरी
- बार-बार पेशाब आना
- बार-बार प्यास लगना
- वज़न कम होना
- हृदय रोग
- गुर्दे का रोग
- अंधापन
- नपुंसकता

R-89

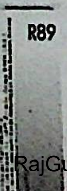

गंजापन, असमय बाल गिरना
सफेद होना
एलोपेशिया की रोकथाम में सहायक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० रेक्वेग की
विश्व प्रसिद्ध विशिष्ट होम्योपैथिक औषधियाँ R1 से R89

दय (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R2 हृदय टोनिक (गोल्ड ड्रॉप्स)
- R3 वॉल्व सम्बन्धी हृदयरोगों के लिए
- R44 निम्न रक्त चाप के लिए
- R66 अनियमित हृदय गति के लिए
- R67 रक्त संचरण की क्षीणता के लिए
- R85 उच्च रक्त चाप के लिए

जीवन शैली (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R14 नींद के लिए ड्रॉप्स
- R16 सिर का दर्द
- R40 मधुमेह ड्रॉप्स
- R59 मोटापा रोधक
- R89 बालो के गिरने एवं झड़ने की समस्या के लिए
- सिनेरेरीया आँखों की ड्रॉप्स–एल्कोहल रहित

चा (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R13 बवासीर के लिए
- R21 रक्त एवं त्वचा विकार के लिए
- R23 एक्जिमा ड्रॉप्स
- R32 अत्याधिक पसीना आना
- R53 मुहाँसे, फुंसियाँ
- R60 रक्त शोधक
- R65 सोरियासिस ड्रॉप्स (त्वचा पर लाल चकत्ते)
- R68 हर्पीज ड्रॉप्स

हड्डियों (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R11 पीठ दर्द
- R30 बहुउददेशीय मरहम
- R34 पुनः कैल्सीकरण ड्रॉप्स
- R46 बाहों तथा हाथों के दर्द में
- R55 सभी प्रकार की चोटों व घावों के लिए
- R63 माँसपेशियों में ऐंठन
- R69 पसलियों के बीच होने वाले दर्द के लिए
- R71 सायटिका (नस का दर्द) ड्रॉप्स
- R73 जोड़ों के दर्द के लिए

च्चों (के लिए ड्रॉप्स)
- R1 सूजन, बुखार व टॉंसिल के लिए ड्रॉप्स
- R6 सर्दी, खाँसी तथा बुखार के लिए
- R31 भूख, रक्त तथा पाचन शक्ति बढ़ाती है
- R35 दांत का दर्द
- R52 उल्टी, मितली, यात्रा रोग के लिए
- R56 पेट के कीड़े निकालने के लिए
- R62 खसरा, श्लेष्मिक क्षिल्ली की सूजन के लिए
- R74 नींद में पेशाब करना

स्नायु (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R14 स्नायु एवं नींद के लिए
- R16 सिर का दर्द
- R33 मिरगी के उपचार के लिए
- R36 अंग कम्पन्न व नस नाडियों के रोग के लिए
- R42 नसों की कठोरता, फैलना व जलन के लिए
- R54 मस्तिष्क के क्रियात्मक रोग तथा याददाश्त
- R70 नस व नाड़ियों का दर्द

त्री (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R10 अनियमित मासिक चक्र
- R20 स्त्री ग्रन्थि रोगों के लिए ड्रॉप्स
- R28 पीड़ादायक मासिक स्त्राव, ऋतुरोध के लिए
- R50 स्त्रीरोग, एवं त्रिक श्रोणि रोगों के लिए
- R75 कष्टदायक मासिक धर्म के लिए
- टा सी15 मानसिक शांति दायक

श्वास (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R8 खाँसी के लिए सिरप
- R9 खाँसी के लिए ड्रॉप्स
- R43 दमे की औषधि
- R45 गले की खराश, बैठा हुआ गला
- R48 फँफडों के रोग
- R49 साईनस, नाक का प्रदाह
- R84 एलर्जी ड्रॉप्स

रुष रोग (ड्रॉप्स)
- R25 प्रोस्टेट ड्रॉप्स
- R41 यौन सम्बंधी व स्नायु दुर्बलता के लिए
- वीटा सी15 मानसिक शांति दायक
- टा सी15 फोर्ट शारीरिक व मानसिक शक्तिवर्धक औषधी

मूत्र रोग (सम्बन्धी ड्रॉप्स)
- R18 गुर्दे व पेशाब की थैली के लिए
- R25 प्रोस्टेट ड्रॉप्स
- R27 गुर्दे की पथरी के लिए
- R64 पेशाब में एलब्यूमिन आने पर
- R74 नींद मे पेशाब निकल जाने पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. रेक्वेग

के उत्पाद 40 से भी ज्यादा देशों में बेचें जाते हैं।

डॉ. रेक्वेग उत्पाद...
...बेहतर चुनाव

डॉ. रेक्वेग एण्ड कं०
जर्मनी

अधिक जानकारी के लिए अपने क्षेत्रीय वितरक से सम्पर्क करें।

www.reckeweg-india.com

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.